अथ सिंहासनबत्तीसीकी अनुक्रमणिका ॥

श्री

अथ सिंहासनबत्तीसी.

एक राजा भोज उज्जैन नगरीका राजा महाबली और बड़ा धनी यशस्वी और धर्मात्मा था जितने लोग उसके राज्यमें बसते थे सो सब चैन करतेथे राजा राज प्रजा सुखी किसीको कोई किसी तरहका दुःख नही दे सका था यह न्याय उसके यहां था, जो बाघ, बकरी, एक घाटपर पानी पीते थे और सब उसके आसरेसे जीते परमेश्वरने सबसे उसे दुनियाके परदेपर उतारा तबसे बेसहारोंका किया सहारा और रूप उसका देखकर चौदसकी रातके चांदको चकाचौंधी पड़ी वह अतिबड़ा चतुर सुघर और गुणी था अति अच्छी अच्छी जितनी बातें थीं सो सब उसमें समाई थीं भलाई उसकी जगत्में मशहूर थी और नगरी उसकी इस तरह बसती थी कि जो चिप्पा रखनेको जगह नहीं मिलतीथी वह हरा भरा नगर, शादियां घर घर, नये तौरके अच्छे अच्छे मकान बनेहुये, चौपड़का बाजार दरमियान, नहर बहतीहुई, उत्तम दुकानोंमें एक एक दुकानदार सराफ, बजाज, सौदागर,

कारीगर, सुनार, लोहार, साधकार, कसेरा, पटुआ, किनारी, बाफ, कीफ़ुवरार, जिलाकार, आईनासाज अपने अपने काममें सरगर्म थे जौंहरीबाजारमें जवाहिरोंसे थैलियां भरी हुई मोती, मूंगा, अमरूद, लाल, याकूत, नीलम, पुखराज, जौंहरी देखते भालतथे और खरीददारोंसे बाजारका बाजार भराहुआ और उसके बराबर दुकानोंमें मेवाफरोश बिलायती अनार, सेव, बिही, नाशपाती, अंगूरसे पिटारे पिटारियां भरकर लगाए हुए और ढेर, छुहारे, पिस्ते, बादामोंके किये हुए बेच रहे फूलवाले फूल गूंथ रहे तंबोली बीड़े बांधरहे गंधियोंकी दुकानें तेल, फुलेल, अत्तर, अरगजेकी लपटोंसे महक रहीं और सुपारीवाले दुकानोंमे पुड़े सुपारीके बांधकर लगाए हुए डब्बे माजूनोंके आगे धरे सुपारिया कतर रहे बिसाती हर रंगकी चीजें दुकानोंमें चुने हुये मोल ग्राहकोंसे कर रहे चौक चौकोर बनाहुआ मीना बाजार लगा हुआ तीसरे पहरको गुदरी लगी हुई असबाब तरह तरहका नया पुराना बेचनेवाले बेचरहे और मोल लेनेवाले मोल ले रहे गर्म बाजारी हरएक चीजकी होरही फ़कीर हर तरफ धाजरहे कहीं नाच कहीं राग कहीं गम्मत कहीं नकल कहीं किस्सा होरहा मअशूक बाजारमें सैर करते हुए आशिक पीछे पीछे फिरते हुए दिन रात यह सामान वहां रहताथा बाग बगीचे सैर और

तमाशेके बने हुए, दरख्त मेवोंसे झूमते हुए. और फूल क्यारियोंमें खिले हुए. तालावोंमें कमल फूले हुए. बावलियोंमें पानी झलकता हुआ, हर एक कुएँपर रहट परोहा चलता हुआ, पनघट लगा हुआ और राजाके चौरासी खास महल ऊंचे ऊंचे दरवाजे खुशकितअ चार दीवारियां सीधी खींची हुई, चारोंतरफ उनके बाहर अंदर मकान अनूठे अनूठे बने हुए कोठरियां दालान दर दालान बारहदरियां बालाखाने चौमहिले पंचमहिले रंगमहल ऐशमहल अटारियां बँगले सवार चिलमने परदे हर एक दरवाजेपर लगे हुए, फर्श चांदनी सोजनी कालीनोंका आवजा बिछा हुआ, मसनद तकिये लगे हुए, शहनशीनोंमे दंगल और कुर्सियां सोने रूपेकी जडाऊ बिछी हुई तालोंपर शिसे बेदमुश्क गुलाबके चुनेहुए सायबान ताशबाद्लेके खिचे हुए, नमगीरे बाजी जगह अपने अपने नौकपर खडे हुए, सहनमे क्यारियां बनीहुई, चौपडकी नहरें पानीसे भरीहुई लहरें लेरहीं, हौज बेदमुश्क गुलाबसे भरे हुए, फुहारे छूटते हुए चादरोंसे पानी बहता हुआ, आवजोए चारोंतरफ आरी सुर्ख खडे हुए और छोटे छोटे दरख्त लगे हुए, रविश पट्टियां सब दुरुस्त फूल हजारों रंगके क्यारियोंमें फूले हुए हर हर महलमें एक एक २ ऐश और कामरानी राजाका दिल हाथोंमें लिये रहतीथी नाच, राग, रंग, रातदिन होताथा और यह

आप ऐसा सुघर था जो बात बातमें मोती पिरोता और नौ किस्म के साहिब कमाल जैसे नौरत्न उसकी मजलिसमें हाजिर रहतेथे राजा इंद्र उसकी सभाको देखकर रश्ककी आगसे जलताथा, और उसका अखाड़ा हसरतके मारे हाथ मलताथा रंडी मर्द उसकी सूरतपर दिवानेथे, जिसने एकबार उसे देखा सो आपेमें न रहा, जिसनें उसकी खूबसूरतीका बयान सुना बे चैन हुआ जोबनके मदमें सरशार मोहनका अवतार नौजवान बहादुर सहिबी तदबीर था उसकी शैर और तमाशेको शहरके किनारे बागबानोंने कोसों तक क्यारियां बनाईथीं और हर रंगके फूलोंकी बहारें दिखाईथीं और इनके बराबर एक खेतमें किसी मुराईने खीरे बोए जब वे उगे बेलें तमाम खेतमें फैलगई और खुब हरियाली हुई, जर्द जर्द फूला और तैयारीपर आया तब उस खेतवाले रखवालीको एक मकान तजवीज किया देखा दरमियान उस खेतके एक चौका जमीनका खाली रहगयाहै कि न कुछ उस जामा है न उपजा है मुराईने रखवाली करनेको इर्द गिर्द इखा लगाकर ऊपर एक मचानसा बांधा उसपर चढ़कर चारोंतरफ निगाह करतेही कहने लगा कि कोईहै ? इसी वक्त राजा भोजको पकड़ लाये और राजाको पहुँचाये राजाके नौकरोंमें एकने इस बातको सुनतेही टांग पकड़कर उसे नीचे गिरादि और मुंहही मुंह थपेटोंसे मार मार सारा मुह सुजादिया, क

पकड़कर उठाया और बिठाया गरूरका नशा जितना उसे चढ़ाया सो सब उतर गया सब सोवा करके पांओं पड़ा और कहने लगा क्या मैंने ऐसी तकसीरकी जो मुझपर यह मार पीट हुई ! इधर उधरकी राह बाटके लोग जो वहां इकट्ठे हुयथे उन्होने कहा तूने ऐसी बात मुहसे निकाली और राजा सुनेगा तो अभी तुझे तोपके मुहपर रखकर उड़ा देवेगा यह सुनतेही वह गिड-गिडाने लगा रहे सहे उसके होश और हवास औरभी जातेरहे जानके डरसे घबरा, दम उसका होठोंपर आरहा मिन्नत और जारीसे वारे छूटगये राजाके उस फिदवीने वहांसे घरकी राहली पर वह जब उस मचानपर चढ़ता तो ऐसा बकवाद किये बिन न उतरता, एक दिन चार हरकारे राजाने एक कामको किसी तरफ भेजेथे वे रातको उधरसे फिरते हुए चले आतेथे और वह मचानपर चढ़ा हुआ बक रहाथा कि बुलाओ हमारे दिवान और अहलकारोंको कि इस जगह खांसे महल और एक गढ़ बनावें सब सरंजाम लड़ाईका उसमें जमा करें कि मैं राजा भोजसे लडूं और मारूं जो मेरी सात पुश्तका राज यह राज करताहै यह सुनतेही उन चारों हरकारोंको अचंभा हुआ, और एकको उनमेंसे गुस्सा आया एकने गजबसे कहा इसे तंबीह करके मुस्कें बांध राजाहीके पास लेचलो वे इसके हकमें जो चाहें सो करें तीसरेने कहा इसने शराब पी है मतवाला है जो

मुंहसे आताहै सो बकताहै चौथेने कहा फिर समझा आयगा अब आनेदो आपको देर होगी आपसमें यह बात कहकर राजाके पास गये और पहले मुजरा किया और जहां भेजाथा वहांका अहवाल अर्ज किया राजाने सुनकर पूंछा कि हमारे राजमें सब लोग खुश रहतेहैं ? और अपने अपने घरमे बैठकर हमारे हकमें क्या क्या कहतेहैं ? सब उन्होने हर एकका अह वाल कहकर यह किस्सा राहका जो सुनाया वह सब बयान किया और कहा कि, अजब असर उस मचानका है कि जब वह उस मचानपर चढ़कर बैठताहै तब एक रऊनत उसपर चढजातीहै और जब वह वहांसे नीचे उतरताहै तब नशा उतर जाताहै फिर अपनी हालत असलीमें आताहै तब राजानें कहा तुम मुझे वहां ले चलो और उसे दिखाओ, कि वह जगह कौनसी है ? ऐसा कह राजा खुशी खुशीसे उठ हरकारोंको साथ लेकर उस मुकामपर गया वहां छिपकर चुपके कहीं बैठ रहा इतनेमें क्या सुनताहै कि, वह मचानपर पांव रखतेही कहने लगा कि लोग जल्दी जायें और राजा भोजको गढ़से पकड़ लावें उसे जल्दी मार मेरा राज ले लें इसमें यश और धर्म दोनों उन्हें होंगे सुनतही राजाको कोप हुआ और हरकारोंको साथ लेकर घरको फिर आया रातको फिक्रके मारे नींद न आई सात पांच करके ज्योंत्यों वह रात गँवाई, सबेर होते ही

स्नान करके दरबार किया पंडितोंको और नजूमियोंको बुलाया और रातको सब अफसान अवानपर लाया नजूमियोंने घड़ी साथ और वह दिन विचारके कहा राजा ! हमारे विचारमें कुछ यहां लक्ष्मीका लक्षण नजर आताहै और पंडितोंने कहा इस मकानमें बहुत दौलत है सुनतेही राजानें तमाम शहरोंके बेलदारोंको हुकुम किया कि लाख बेलदार यहां जाया और उस मकानकी तमाम जमीन खोदो ये बमोजिब हुक्मके रवाने हुए साथ उनके सब अपने मुसाहिबोंको भेजा और आपभी सवार होकर यहा आया बेलदारोंनें जब चारों तरफसे खोदा और यहाकी मिट्टी दूर की तो एक पाया नजर आया तब राजाने फरमाया अब खबरदारीसे खोदा टूट न जाय अब खोदते २ चारों पाए सिंहासनके नजर आए तब राजाने कहा अब इसे बाहर निकालो लाख मजदूर उठातेथे और जार करतेथे पर जराभी वह जगहसे नही हिलवाया तब उनमेसे एक पंडितने अर्ज की कि महाराज! यह सिंहासन देवताओंका या दानवोंका बनाया हुआ है इस जगहसे नहीं हिलेगा और न उठेगा बलि लेगा इसका बलि दीजिये तब राजाने करोड भैंसे और बकरे वहीं बलि दिये चारों तरफ बाज बजन लग और जयजयकार होन लगा तब बलि लेकर हाथ लगातेही वह सिंहासन ऊपरको उठ आया झाड़ बुहारकर एक जमीन पाकिजेपर रखदिया

तब राजा सिंहासन देख कर बहुत खुश हुआ और अब उसकी मट्टी छुड़ाकर गर्द वा गुब्बार दूरकर धोया और पोंछा तब ऐसा चमकने लगा कि आंख किसीकी उसपर न ठहरतीथी जिसनें उस जड़ाऊ सिंहासनको देखा उसे खुदाकी कुदरतका तमाशा नजर आया कारीगरोंनें ऐसा बनायाथा कि, किसीनें न देखा न सुना आठ आठ पुतलिया चारों तरफ बनी हुईथीं और एक एक फूल कमलका हर एकके हाथमें दियाथा अगर सुरमामिनी उसे देखें तो भयचक होजावें राजानें तमाम कारीगरोंको बुलाकर फरमाया कि जितने रुपये खरचहों सो खजानेसे लेलो और जहांजहांका जवाहिर जाता रहा है, वहां नया जड़कर जल्दी तय्यार करो यह कह कर राजा महलमे दाखिल हुआ सिंहासन बनने लगा पाच महीनेमे सब तय्यार हुआ और पुतलियाँ ऐसी बनकर खड़ी हुई गोया अभी बोलतीहैं और चलतीहैं गरज शिरसे पांव तक खूबियोंमें भरी हुई आंखें हिरन कमर चित्तेकीसी पांवका यह अंदाज जैसी हंसकी चाल जिन्होंनें सूरत उनकी देखी अपनी आंखोंकी पुतलियोंमें जगह दी, उसे देखकर पंडित राजासे सिंहासनकी हकीकत कहने लगे–हे राजा! सुनो मरना जीना ये इखतियार सब भगवानके हैं पर मनुष्यको चाहिये कि जीते जी सब जीनेका सुख करले यह बात राजा सुनकर बहुत खुश हुआ और कहने लगा. कि शायद ये पुत-

ठियां भगवानने अपने हाथसे बनाई हैं ! या इंद्रके यहांकी अप्सरा हैं ! यह कहकर पंडितोंको हुक्म किया कि नीकी सायत अच्छी लगन विचारो जो मैं उस सायत सिंहासनपर जाकर बैठूं यह बात सुनतेही पंडितोंनें विचार करके कार्तिक महीनेमें एक दिन शुभ लगन ठहराई सब भांति यह भली थी कहा कि उस सायत तुम उस सिंहासनपर बैठो तब राजानें बैठनेकी बिरियां जितने राजा उसके राजमे थे और पंडित और करामती दूर और नजदीक थे उन्हे नौता भेजकर बुलाया और आप स्नान करके अच्छे कपड़े पहने पंडित वेद पढ़ने लगे और गंधर्व गीत गाने लगे भाट यश बयान करने लगे और तरह तरहके बाजे बजने लगे हर हर महलमें शादियां नाच, राग रंग, मचे जितने लोग आयेथे उन सबकी जियाफत की, ब्राह्मणोंको वृत्ति गांव दिये भूखोंको खाना और मुहमागे रुपये बखशे नंगोंको कपड़ा और माल असबाब इनायत किया रैयतको बखसीस और इनाम दिया तमाम शहरमें खैर खैरात बांटदी फौजको खिलत और इजाफे कर दिये, हमनसीनोंपर तरह तरहकी मिहरबानियां नवाजिशें फरमाई गरज जितनेलोग उस सभामे इकठे हुएथे सो सब जयजयकार करतेथे और रामका नाम लेतेथे बीचमें सिंहासन धरा था राजा खुशी २ श्रीगणेशको मनाता हुआ सिंहासनके पास आकर खड़ाहुआ और दाहिना पांव बढ़ाकर

उसने चाहा कि उसपर रक्खें इतनेमे वे पुतलियां खिलखिला कर हँसी और सबने यह देखा राजा अपने मनमें जरा रुक कर निहायत शरमिंदा हो कुछ दहशत खाई कुछ उसे अचंभा हुआ कि ये बेजान पुतलियां जानदार क्योंकर हुईं ? गरज लाकर गजबमें आकर पाव तखतसे खैंचलिया और पुतलियोंसे कहने लगा कि तुमने क्या देखा ? और क्यों हँसी ? ये सब बात मुझसे बयान करो ? क्या मैं बली राजाका बेटा यशस्वी नहीं ? या क्षत्रियोंमें कायर हूं ? या नामर्द हूं ? या बेरहम हूं ? या और राजा मेरे हुक्में नहीं ? या मैं पंडित नहीं ? या मेरे यहां पद्मिनी नारी नहीं ? या मैं राजनीति नहीं जानता ? या मैं किसीकी मजलिसमे नीचे होकर बैठा ? फिर किस बातमें मैं नालायक हूं ? मेरे दिलमें शक पड़ा है सो मुझे तुम बताओ ? ये बातें राजाके मुखसे सुनकर उनमंसे रत्नमंजरी नामक.

पहली पुतली

बोली:– हे राजा ! दिल लगाकर मेरी बात सुनो और यह किस्सा मैं तुमसे बयान करतीहूं तुम गुणग्राहक और कदरदान हो जो तुमनें बातें कहीं सो सब दुरुस्त हैं सूर्यसेमी तुम्हारे तेजके आगकी ज्यादा अधिक है पर इतना गर्व मत करो पुरानी कथा सुनो- इस संसारका अंत नहीं, भगवाननें इसे किस, किस और रंग

रंगके जवाहिर पैदा किये हैं एक एक कदमपर दौलतका गंज है और एक एक कोसपर आबहयातका चश्म है, पर तुम कमबखतहो इससे नहीं पहँचाना अपने दिलमें क्या समझेहो ? तुम जैसे इस दुनियामें करोडों पडे हैं तुमने इतनेहीमें मगरूर होकर अपने ताईं भुला दिया और यह जिसका सिंहासन है उस राजाके यहां तुमसा एक एक बंदना नौकर था यह सुनकर राजाको गुस्सा आया और कहने लगा कि इस सिंहासनको अभी मैं तोड़े डालताहूं, इतनेमें वररुचि पुरोहित बोला राजा ! यह इनसाफसे दूर है इसवास्ते पुतलीकी बात कान देकर सुन लो और जो कुछ करनाहो सो फिर करलो राजाने कहा तू इसका अहवाल कह ? तब पुतली बोली मैं क्या कहूं ? राजा ! इतनाही सुन तुम अलकर खाक होगये और जब तमाम हकीकत उस राजाकी सुनोगे तब औरभी शरमिंदा होगे और अपने दिनोंको रोओगे लोगोंके आगेभी हलके होओगे इसके कहवानेसे न कहवाना भला है हमतो उसी रोज मरचुकी थीं और सिंहासन फुट चुका था जिस रोजसे राजा विक्रमादित्यसे बिछुड़ीं अब हमे क्या डर है ! इतनेमें दिवान राजाका पुतलीसे कहने लगा—किसलिये तू अपने राजाको बयान नहीं करती ? गुस्सा छोड़दे और अब बात कर क्यों यह भेद छिपा रखती है ? तब पुतली बोली कि ए शब्दबंधी राजा बड़ा बली था और नगर अंबावतीमें रा-

अ करसाया बड़ा उसका दबदबा था, देवताओंका पूजनेवाला और तमाम दुनियाका दान देनेवाला आगे मैं उसकी कथा तेरेवास्ते कहतीहूं, राजा! कान देके सुनो श्यामस्वयंवर उस नगरीका राजा था उसका ब्राह्मण पर बड़ा राजा हुआ सब गंधर्वसेन उसका नाम हर तरफ बजने लगा और उसके घरमें चार वर्णकी रानियां थीं ब्राह्मणी, क्षत्रिया, वैश्या, शूद्रा, उसमे जो ब्राह्मणी थी सो बहुत अच्छी सूरत और नाजुक थी उसके एक बेटा हुआ सो बड़ा पंडित हुआ ब्राह्मणीत उसका नाम रक्खा ऐसा ऐ राजा! कोई दुनियामें पंडित न था जित ने इल्म थे सो सब उसने पढ़ेथे यहां तककि मौतकाभी अहवाल कहदेता और क्षत्रियासे तीन बेटे हुए. उन्होने क्षत्रियोंका धर्म अखतियार किया एकका नाम शंख दूसरेका नाम विक्रम, ती सरेका नाम भर्तृहरि, एकसे एक बढी सब जगमे उनका नाम मशहूर था और उन्हे कल्पवृक्ष दुनियाके लोग कहतेथे और वैश्यासे बेटा जो हुआ उसका नाम चंद्र रक्खा, वह बड़ा सुखी और रहमदिल था शूद्रासे जो बेटा हुआ उसका नाम धन्वंतरि रक्खा था वैद्योंमें वह बड़ा वैद्य था छे बेटे राजाके हुए. एकसे एक अच्छे गरज अमरसिंहके घरानेमें सबके सब खूब हुए. और वह जो ब्राह्मणीसे हुआथा वही राजा-की दीवानी करताथा उसके जब कोई तकसीर हुई तब राजाने

खिदमत लेली यह लड़का वहांसे निकलकर धारापुरमें आया अयराजा! यहां सब तुम्हारे बुजुर्ग थे उसे उन सबोंने माना बड़ी आव भगवत की वहांका राजा तुम्हारा बाप था कितनी मुद्दतके बाद उसने दगा करके उस राजाको मारडाला और आप वहांका राज लेकर उज्जैन नगरीमे आया और यहां आकर मरगया शंख जो बड़ा बेटा क्षत्रियके पेटका था सो यहां आकर यहांका राजा हुआ राज करने लगा और आगे यह अहवाल है कि एकरोज पंडितोंने आकर राजा शंखसे कहा कि, तेरा दुश्मन दुनियामें पैदाहुआ यह बात पंडितोंके मुहसे सुनकर वह भयचक रहगया, ब्राह्मण कहने लगे—हम सबने शास्त्र देखा है उससे यही अहवाल निकलताहै कि जो हमने तुमसे कहा मगर एक बात और है कि हम उसे मुहसे निकाल नहीं सक्ते तब राजाने कहा, खैर! जो तुमने यह बात कही तो यहभी कहो! तब उन्होंने कहा हमारे विचारमे यह आताहै कि, शंखको मार राजा विक्रम यह राज करे यह बात सुनकर राजा हँसा और कहनेलगा, ये पंडित बावले हैं इन्हे कुछ ज्ञान नहीं इसलिये ऐसी बात कहते हैं यह बात सुनी अनसुनी कर राजा चुप रहा पण्डित अपने दिलमें शरमिंदा हुए कि हमारे शास्त्रको इसने झूंठ जाना और हमको दिवाना ठहराया अब कितने एक दिन इस बातपर गुजरे तब पण्डित अपने मका-

नोंमें बैठकर नजूम देखने लगे उनमेंसे एक पंडित बोला–मेरे विचारमें यह आताहै कि, राजा विक्रम कहीं नजदीक आन पहुँचा है तब दूसरा उनमेसे बोला यहाके किसी जंगलमें है और एक उनमेसे कहने लगा उस जंगलमें एक तालाबभी है वहीं अखाड़ा करके रहा है, तब एक ब्राह्मण उनमेसे उठ खड़ा हुआ और जंगलको चला वहां आकर क्या देखताहै कि एक तालाव पर राजा विक्रम तपस्या करताहै मट्टीका एक महादेव बनाकर उसकी पूजा करताहै और दंडवत् कर रहा है यह देखकर पंडित उलटा आया और सब पंडितोंको साथ लेकर राजाके पास गया और राजासे कहने लगा कि तुम हमारे शास्त्रको झूंठ मानतेथे और अब हम देखके आये हैं फलाने जंगलमें राजा विक्रमादित्य आन पहुँचा राजा शंख यहरोज सुनकर दुपरहा सुबहको उठा और उस बनमें आतेही छिपकर देखनें लगा कि वह क्या करताहै ! जहां राजा वीर विक्रमादित्य बैठा था वहांसे वह उठा और तालाबमें न्हाकर फिर अपने आसनपर आकर बैठा और उसी तरहसे महादेवकी पूजा करने लगा और यह राजाभी निकलकर वहां आकर खड़ा हुआ अब वह विक्रम महादेवकी पूजा कर चुका तब उसी महादेवकी पिण्डीपर उसने पेशाब किया जितने लोग राजाके साथ आयेथे वे सब कहने लगे कि, इसकी बुद्धि मारी गई है कि पूजे हुये देवपर इसनें

सूता, तब एक पंडित उनमेंसे बोला कि, उठो महाराज! यह तुमने क्या किया? तब यह बोला, कि हम जातके ब्राह्मण हैं देवताको पूजें था मिट्टीको तब ब्राह्मणोंने कहा राजा, कुछ हम अच्छा नहीं देखते क्यों कि तुम्हारी मत कुमत होगई जब मरनेका दिन आदमीका नजदीक आताहै सो उसकी मति मारी जातीहै तब राजा बोला, तुम दिवाने होगये हो और मुझेभी बावला बनाते हो, जो भगवानने लिखा है वही होवेगा उसको कोईभी मिटा नहीं सक्ता तब पंडित आपसमें कहने लगे इस राजानें क्या अपना अकाज कियाहै? तब राजा शंखनें विक्रमको मारनेकी यह फिकिर की कि सात लकीर कोयलेसे जादूकी काढ़ी और उनपर भुस फैला दिया जो उसे मालूम न हो और उन लकीरोंका यह गुण था कि, जो उनके ऊपर पांव धरे सो बावला होजाय और एक खीरा मँगाकर जादू किया और एक छूरी पढ़कर हाथमें रक्खा उस छूरी खीरेका यह असर था कि जो उस छूरीसे खीरा काटे उसका शिर कट जाय पंडितोंने कहा आप उसे बुलाओ उन लकीरोंपर पांव धरके जो आवेगा तो वह दिवाना हो जायेगा बावला होकर वह खीरा जो अपने हाथस लेकर काटगा तो शिर उसका कट जायगा जितने क्षत्रिय राजाके साथ आयेथे वे सब अपने दिलमें फिकरबंद हुए कि इस राजानें दगा किया है यह क्षत्रियोंका धर्म नहीं

राजाने विक्रमादित्यको बुलाके कहा हम तुम बैठकर एकओ खीरा खायें यह राजा योगी था और इस इस्मको जानता था उन छकीरोंसे बचकर सिंहासनके पास आकर खड़ा रहा खीरा और छूरी उसके हाथमसे लेली दाहने हाथमें छूरी रक्खी और बांये हाथमें खीरा लिया राजा शंख गाफिल था फुरती करके उसे छूरी मारी और राजाका काम तमाम किया यह बात रअमें-अरीनें जाहिर की और कहा कि हेराजा! तू इस बातको सुन, खुदा जो रहम करे सो तिनकेसे पहाड़ करे और गजब करे तो पहाड़से तिनका किताबमें जो लिखा है यह कभी झूंठ नहीं होता जब माके पेटमें इन्सान आता है चार बातें साथ लाता है नफा और नुकसान, दुःख और सुख तीनलोक और चौदह भुवन फिरे लेकिन किस्मतका लिखा नहीं मिटता भाईको मारा, दिलमें खुश हुआ उसके लोहूका माथेपर टीका लगा लिया उठकर सिंहासनपर बैठा और चँवर डुलवाया उस राजाकी रानी उसके साथ सतीहुई तब यह राजनीतिसे न्याय करने लगा और जितने राजा उसके राजमेंथे सब सुनकर खुश हुए. मुअरेको आये और दोनो वक्त दरबारमे हाजिर रहने लगे इसी तरहसे राजा राज करने लगा कितने एक दिनोंके बाद एक दिन राजा शिकारको चला तब कुत्ते, बाज, बहरी और जितने शिकारी जानवर थे सो सब साथ लिये और जितने अच्छे

अच्छे शुभघड़ी और वीरंदास ये साथ लिये आकर एक जंग-
लमें पहुँचे यहां हिरनके पीछे राजाने अपना घोड़ा डाला
तब राजा आगे बढ़गया और उसके साथ कोईभी न पहुँचा
एक बड़े जंगलमें राजा जानिकला और यहां आकर सोच करने
लगा कि मैं कहां आया ? राहभी भूला और साथभी गवाँया
इतनेमें जो निगाह की तो एक बड़ा दरख्त देखा और उस
दरख्तकी फुनगीपर चढ़गया वहांसे देखने लगा, जंगलही
जंगल नजर आताथा मगर एक तरफ जो देखा तो एक शहर
नजर आया उसको देखकर राजाको एक ढाढसती बँधी यह
नगर जो देखा तो निहायत आबाद है कबूतर वहां उड़ रहे
हैं चीलें मड़रा रही हैं सूर्यकी झलकसे हवेलियोंके कलश
चमक रहे हैं यह देख अपने जीमें कहने लगा कि, यह नया
शहर मैंने देखा कल इसे छीनलूंगा और इस नगरके राजाका
दीवान जिसका नाम सूतबरन था वह कौवेके भेससे रहताथा
उस तरफसे खड़ा हुआ आताथा उसने यह राजाके मुहसे
बात सुनी और बहुत दिलमें खफा हुआ गुस्सेसे उसके मुहमें
बीट करदी राजा गजबमें आया इतनेमें लोग पुछ उसके
यहां आन पहुँचे, उनके साथ होकर अपने शहरमें दाखिल
होगया और दीवानको हुक्म किया कि जहानमें जहांतक
कौवे हैं ये सब पकड़ लाओ यह सुनतेही चारों तरफ बहेलिये

दौड़े और कौवे पकड़ पकड़ लाये और पिंजरेमे बंद किये राजानें आकर उन कौवोंसे कहा अरे चांडालो ! यह कौनसा कौवा था कि जिसने हमारे मुंहपर बीट की ! तुम सच कहोगे तो हम सबको छोड़देंगे नहीं कहोगे तो सबको मार डालेंगे यह राजाकी बात सुनके सब कौवे बोले महाराज ! हममें कोई कौवा नहीं रहा जो पकड़ा नही आया और यह काम हमसे नहीं हुआ तब राजा जियादः खफा हुआ और बोला कि तुम सबके सिवाय यह कौन कौवा है ! कि जिसने यह काम किया तब उन्होंने कहा—महाराज ! सच पूंछते हो तो हम कहते हैं बाहुबल एक राजा है उदय अस्तमें उसका राज है और उसका दीवान लूतबरन बड़ा दानी बहुत हुसियार पंडित है वह कौवेके भेसमें रहता है यह काम उसका हो तो हो; क्योंकि, कौवेकी सूरत एक वह बच रहा है तब राजाने कहा वह किस तरहसे हमारे पास आवै ! उसका बयान कुछ समझ कर मुझे इलाज बताओ ! कोई तुम्हारे यहांसे वकील जाय और उसको ले आवे तुम अपने यहांसे दो कौवोंको भेजदो और वे आकर उसको यहां ले आवें तब उन्हींमेंसे दो कौवे वहीं गये उनकी लूतबरननें बहुतसी आव भगत की और पूंछा कि, तुम यहां किसलिये आयेहो ! तब वे बोले महाराज ! तुम्हारे बगर हम सब कौवे मारे जातेहैं इसवास्ते जो तुम राजा

विक्रमादित्यके पास चलो तो हम सबोंका जान बचे तब लूतबरन बोला—धन्य भाग जो तुम मेरे पास अपना मतलब समझकर आयेहो जो कुछ काम मुझसे होगा उसके लिये मै कभी ना न करूंगा यह कहकर अपने राजाके पास आया और राजासे हुक्म लेकर उनके साथ गया जब सब कौवोंने उस दीवानको देखा तब ये राजासे कहने लगे कि महाराज! आप जिसका नाम लेतेथे यह यही आया है राजाने देखकर उसे आदर करके आधी गद्दीपर बिठाया और क्षेम कुशल पूंछी वो आसीस देकर बोला राजा! किसलिये तुमने मुझे याद किया? और किसवास्ते इन सबको बंद किया? जब लूतबरनने यह बात पूंछी तब राजा विक्रम कहने लगा—मैं एकदिन शिकारको गयाथा इत्तिफाकन जंगलमें राह भूलगया तब एक वृक्षपर चढ़कर चारों तरफ देखने लगा कि एक कौवेने मुझपर बीट करदी इसलिये मैंने सब कौवोंको बंद किया जब तक इन-मेसे कोई सच न कहेगा तब तक एक कौवा इन्हमेसे न छोड़ूंगा बल्कि जानसे इन सबको मारूंगा फिर लूतबरन बोला महाराज! यह काम सब मेरा है जब तुम्हें मैंने मगरूर देखा तब मेरे मनमें गुस्सा आया और अकल मेरी उसवक्त खाली रही यह सुनकर राजा हँसा और बिगड़कर कहने लगा मुझे मगरूर क्यों न हो? राजा मैं हूं, दाता मैं हूं, सिपाही

मैं हूं और कौनसी बात मुझमें नहीं है ? सो तुम कहो ! तब वह बोला, वह जो नगर तुमने नजर भरके देखा है उसका मै सब बयान करताहूं राजा बाहुबल नाम वहांका कदीम राजा है और गंधर्वसेन बाप तुम्हारा उसका दीवान था राजाको उसकी तरफसे कुछ बेइज्जती हुई तब उसे छुड़ादिया वह नगर अबावतीमे आया और उस जगहका राजा हुआ उसका बेटा तू विक्रम है तुझे जगमें कौन नहीं जानता पर जबतक राजा बाहुबल तुझे राजतिलक न देगा तबतक तेरा राज अचल न होगा और वह जो यह तेरी खबर पावेगा तब वही तेरेपर चढ़कर दौड़ेगा और तुझे आकर एक घड़ीमें खाकके बराबर करदेगा इस वास्ते तुझे जो मैं सलाह दूंगा उसे मान और किसी तरहसे उस राजाके पास जाकर राजाको मोहब्बत दिखाकर तिलक उससे ले जिससे यहाका अचल राज तू कर राजा विक्रम बड़ा अकलमंद था, इसवास्ते इस बातपर कायम रहा ऐसी बातें लूतबरनसे सुन कर कुछ दिलमें न लाया और हँसकर कानदे सब सुनी फिर लूतबरनने कहा जो तुम्हे चलना हो सो हमारे साथ चलो और पंडितोंसे अच्छी सामत दिखाकर चलनेकी तैय्यारी करो दूसरे दिन सुबहके वक्त राजा लूतबरन मंत्रीके साथ होकर चला और राजा बाहुबलके नगरमें आकर पहुँचा तब उस दीवानने राजा विक्र-

मसे कहा यहां तुम बैठो और मै अपने राजाको तुम्हारे आनेकी खबरदूं यह बात राजासे कहकर लूतबरन अपने राजाके मंदिरमें गया उसको सलाम किया और सब समाचार और अपनी हकीकतसमेत राजाका अहवाल कहने लगा—महाराज! गंधर्वसेनका बेटा विक्रम आपके दर्शनके लिये आया है यह बात बाहुबल राजाने सुनकर उसको तुरंत अंदर बुलाया तब लूतबरन राजा विक्रमको लेगया और अपने राजासे मिलाया राजा उससे उठकर मिला और आदर करके आधे आसनपर बिठाया और क्षेम कुशल पूंछी बाद उसके रहनेके लिये मकान बताया राजा उठकर उस मकानमें आया यहा रहने लगा जब दस पांचदिन बीतगये तब दीवानसे राजा विक्रमने कहा हमे तुम बिदा करवादो, तो हम अपने स्थानको जावें तब मंत्री कहने लगा—हमारे राजाका यह स्वभाव है कि, जो उनसे मिलनेको आताहै उसे अपना रुखसत नहीं करते, तुम रुखसत मांगो और जिस बातकी ख्वाहिश हो सो कहो अपने जीमें कुछ शर्म न करो तब राजा बोला मुझे कुछ नहीं चाहिये जो कोई जो बर चाहे सो मुझसे ले तब दीवान बोला—राजा! यह हमारी बात सुनो इस राजाके घरमें एक सिंहासन है सो यह सिंहासन पहले महादेवजीने राजा इंद्रको दियाथा और इन्द्र राजाने इसको दिया उस सिंहासनमे ऐसा गुण है कि, जो उसपर बैठे

सो सात द्वीप और नौखंड पृथ्वीका अधीश होकर राज करे और बहुतसा जवाहिर उसमें जड़ा है और उस सिंहासनमें बत्तीस पुतलियांभी बनी हैं अमृत देकर उनको सांचेमें ढाला है तुम रुखसत होते हुए यह सिंहासन राजाजीसे मांगो कि उसपर बैठकर आनंदसे राज करोगे यह रातको दीवानने सलाह दी और सुबहको राजाके दरबारमें दीवानने जाकर खबर दी कि महाराज! विक्रम रुखसत होताहै और आपके पास आनेको बाहर खड़ा है यह सुनकर राजा फिर फौरन दरवाजेपर आया और विक्रमने देखकर अपना माथा नवाया. राजाने विक्रमसे कहा जो तुम्हारे जीमें आवे सो मांगो मैं खुश होकर तुमको वही दूंगा तब विक्रम बोला–महाराज! जो आपने मुझपर दया की है, तो यह सिंहासन मुझे बकसो, जो इंद्रने आपको दिया है यह बात सुनकर राजा बोला अच्छा सिंहासन तो हमने तुम्हे दिया; पर यह काम मंत्रीका है इसे तुम नहीं जानतेथे यह कहकर सिंहासन मँगाया और पान तिलक देकर उस सिंहासनपर विठाया और कहा कि तुम अधीश हुए. अब किसी बातकी चिंता मनमें न करना गंधर्बसेन मेरा बड़ा दोस्त था और तू उसके खान दानमें बड़ा नामवर हुआ इस तरहसे राजा विक्रमको आसीस देकर रुखसत किया राजा वहासे अपने घरमें आया

और अपने जीमें बहुतसा खुश हुआ और जितने उस राजाके दुश्मन थे उन्होंके जीमें रंज हुआ राजाके देशके लोगोंने बहुत खुसी की और सब द्वीपद्वीपके राजा खिदमतके वास्ते आये और जो राजा गरूर करताथा उसका वहां आकर राज छीन लेलिया और अपना राज करता गरज उदयसे अस्ततक खूब उसने अपना राज किया सब रैय्यत आनंदसे उसके राजमें बसती थी और जो क्षत्रिय थे सो सब उसको डरतेथे और जो कोई देस विदेश आताथा सो वहां बिक्रमका धर्म सुनता था और सब मुल्क आबाद देखता था कहीं दुःखी उसे नजर न आता था झांड और बांध उसके राजभरमें किसीने कानसे न सुना बल्कि घर घर आवाज बेद और पुराणकी आती थी और जितने लोग थे वे सब स्नान ध्यान करके तीनो वक्त अपने भगवानकी यादमें रहतेथे अपने घरमें सब राजा-कीसी सभा करके खुश रहतेथे राजा राज प्रजा सुखी इसमें एकदिन राजा विक्रमादित्यने सभा की और सब पंडितोंको बुलाया और पंडितोंसे राजाने पूछा कि, मेरे जीमें है, कि अब मै संवत् बांधूं सो तुमसे पूछताहूं कि मै इसबातके लायक हूं कि नहीं हूं! सो तुम शास्त्र देखकर मुझसे विचारके कहो! सब पंडितोंनें विचार करके राजासे कहा महाराज! अब जो तुम्हारा प्रताप है सो तीनो भुवनोंमें छाय रहाहै इस बास्ते जो

कुछ तुम्हे करनाहै सो कीजिये दुश्मन तुम्हारा कोई नहीं
राजानें यह सुनकर पंडितोंसे कहा कि अब तुम बताओ कि
किस बुद्धिसे संवत् बांधू? जो कुछ शास्त्रकी रीतसे मुनासिब
बहो जिस तरहसे हमे कहो! तब पंडितोंने कहा पहले तो तुम
अजीतमाऊ पहनो फिर उसके बाद देश देशके ब्राह्मण और
जमीनदार, राजा, और अपने सब कुटुंबके लोग बुलाओ
सवालाख कन्यादान सवालाख ब्राह्मणोंको करो और
जितने ब्राह्मण तुम्हारे मुल्कके हैं उनकी वृत्ति करदो एक
बरसका खजाना जमीदारोंको माफ करो और जो भूखा कंगाल
इस बरसमें आये उसको वृत्तिका हुक्म करो इसी तौरसे
राजाने सब काम किया और सिवा इसके, जो जो दान
पुण्य किया उनका बयान किससे हो एक बरस तक राजा
अपने घरमें बैठे पुराण सुनता रहा और इस तरहसे संवत्
बांधा, कि तमाम दुनियाके लोग धन्य धन्य करतेथे यह सब
अहवाल राजाको रत्नमंजरीने सुनाया और राजा विक्रमादि
त्यका यश गाया और कहा—राजा भोज! जो तुम इतने हो तो
इस सिंहासनपर बैठो सुनके राजाने कहा सच है जो कुछ
तूने कहा यह बात मुझेभी पसंद आई, इतना कहकर राजा
अपनी सभामें जाकर बैठा और दीवान मुत्सद्दियोंको बुलाया
कि तुम सब तैयारी संवत बांधनेकी करो, उस दिनकी यह

साझस यों टलगई, दूसरे दिन फिर राजाने सिंहासन पर बैठनेकी तय्यारी फरमाई और दीवानको बुलाकर कहा कि तुम सब तुरतही इसकी तैयारी करो देर नहीं लगाना यह बात सुनकर वररुचि पुरोहित बोला, राजा! अभी क्यों घबरातेहो! इस सिंहासनकी एक एक पुतली तुमसे बात करेगी उन सबकी बातें सुनकर पीछे जो कुछ आपको करना होगा सो कीजिये यह पुरोहितका वचन सुनकर राजानें उस सिंहासनके पास आकर उसपर पांव बढ़ाकर रख्खा कि, चित्ररेखा नामक

दूसरी पुतली

बोली राजा, तरेयोग्य यह आसन नहीं, और ऐसी अनीति कोई करता नहीं जो तू करनेपर तैय्यार हुआ है इस सिंहासनपर बैठे यह जो विक्रमादित्यसा राजा हो तब राजा बोला विक्रममें क्या क्या गुण थे! सो मुझसे कहो! तब वह बोली, एक दिन राजा विक्रम कैलासको गया, और वहा एक यतीसे मुलाकात हुई तब उसने राजाको योगकी रीत सब बताई राजाने अपने मनमें इरादः किया कि, अब योग कमावें एसा विचारकर योग करनेको तैयार हुआ और राजतिलक भर्तृहरिको दिया और राज पाटपर उसे बिठा आप राजकाज सब धन दौलत छोड कंथा पहन भस्म लगा संन्यासी बनकर अंग-

छको निकल गया और उत्तरखंडमें आकर योग साधने लगा उस शहरके जंगलमें एक ब्राह्मण तपस्या करताथा धुवां पीके रहता था और भूंख प्यासके दुःख सहताथा ब्राह्मणकी तपस्या देखके देवता खुश हुए. और उसको वर देने लगे और उसने न लिया तब आकाशवाणी हुई कि, हम अमृत भेजतेहैं सो तू ले एक देवता आदमीकी सूरतमें आकर उसे फलदे यह कहगया कि जो इसको तू खावेगा, तो चिरंजीव होवेगा फल लेकर यह तुरंत चला खुशी खुशीसे अपने घरको आया और ब्राह्मणीके हाथमें वह फल दिया और कहा कि आज देवताओंने अमृतफल देकर कहा जो इसे खावेगा सो अमर हो जावेगा यह बात सुनकर ब्राह्मणी व्याकुल हो रोने लगी फिर बोली यह अब दुःख आया पाप हम किस तरहसे काटेंगे ? और हमेशह भीख क्यों कर मांगें ? खाल मांस सब हाड़में मिल जायगा ऐसे जीनेसे मरजाना बेहतर है मरजानेवालोंको इतना दुःख नहीं होता इस फलको यह खावेगा जो हमेशः उठावेगा इससे योग्य यह है कि, तुम इस फलको ले जाकर राजाको दो और उनसे कुछ धन लो यह सुनकर ब्राह्मण अपने जीमें समझा, यह सच है इस संसारमें इतना जंजाल कौन है ! इसी तरह आपसमें बातें सलाहकी करके ब्राह्मण वहांसे उठ राजाके पास चलागया, जब राजाके द्वारपर पहुँचा तब द्वार

पाळसे कहा कि, राजाको खबर दो कि ब्राह्मण आपके लिये एक फल लाया है दरबाननें राजासे आकर अर्ज की, कि महाराज ! एक ब्राह्मण फल आपके पासे लाया है और दरवाजेपर हाजिर है जो कुछ हुक्म हो राजाने उसीवख्त हुक्म किया कि उसे अभी लाओ तब हरकारेने वहीं हाजिर किया ब्राह्मणने राजाको आकर आसीस दी कि, धर्मलाभ हो और यह फल राजाके हाथ दिया राजाने उसको हाथमे लेकर पूंछा इसका सब वृत्तांत कहो ? तब ब्राह्मण कहने लगा स्वामी! मैने जो तपस्या की थी सो देखकर देवताओंने उसका बर अमर फल मुझको दिया अब मैं अमर होकर क्या करूंगा ? इस-वास्ते इस फलको तुम खाओ और अमर हो क्योंकि तुमसे लाखों जी जीते हैं यह सुनकर राजा हँसा और उसे लाख रुपये दिये और गांव वृत्ति करके बिदा कर दिया फिर अपने जीमें विचार करने लगा कि मै तो पुरुष हूं कमजोर न हूंगा इसवास्ते यह फल रानीको दिया चाहिये, कारण वह मेरे प्राणका आधार है यह जीती रहेगी तो मै सुखभोग करूंगा यह दिलमें ठानकर राजा महलमें दाखिल हुआ फल रानीको दिखाया रानी हँसकर पूंछने लगी महाराज! यह क्या चीज है ? जिसे बड़ यत्नसे लिये हुये तुम यहां आये हो इसका ब्योरा कहो ? तब राजाने कहा सुन सुंदरी! तू जो इस फलको खायगी तो

सदा यौवनवती रहेगी दिनदिन रूप बढ़ेगा और अमर होगी यह अहवाल रानीने सुनकर फल राजाके हाथसे लेलिया और कहा महाराज ! मै इसे खाऊंगी राजा फल देकर बाहर गया और रानीका जो एक मित्र कोतवाल था रानीने उसे बुलाकर इसके हाथमें यह फल दिया और उसे कहा यह हमे राजाने देकर कहा है, जो इसे खावेगा सो अमर होगा इसवास्ते तुम मेरे दोस्त प्यारे हो, इसे खाओ और अमर हो; सो मुझे बड़ी खुशी हो यह सुनतेही कोतवालने खुश होकर फल हाथमें लेलिया और अपने मकानको गया एक कसबी उसकी आश्ना थी उसे यह फल देकर कहा यह अमरफल मै तेरे वास्ते लायाहूं तू इसे खा यह सुनकर उसने हाथसे लेलिया, और उसे बिदा किया फिर अपने जीमें बिचारा कि, एक तो मै कसबी हूं और अमर हूंगी तो कितना पाप मै कमाऊंगी इससे बेहतर है कि, यह फल राजाको जाकर दीजिये जो राजा जियेगा तो मुझे याद करेगा और पुण्य होवेगा पाप सभी कटेंगे यह मनमें सोचकर राजाके दरबारमें गई और यह फल राजाके हाथमें दिया राजा फलको देखकर बेसुध हुआ और अपने जीमें कहने लगा कि यह फल तो मैनें रानीको दियाथा जीमे यह बिचार अचंभा होरहा और हँसकर उसे पूंछने लगा कि यह फल तुझे किसने दियाथा. यह वे सब बातें जानतीथी पर राजासे फकत यह

कहाकि, मुझे कोतवालने दिया है यह सुनकर उसने समझा कि रानीनें पुरा काम किया उसे कुछ रुपये देकर विदा किया, और आप भयचक रहगया फिर समझकर कहनें लगा मैंने तो मन अपना रानीको दिया और उसनें अपना दिल कोतवालको, मनका भेदी कोई न मिला ऐसे जीनेको और मरी बुद्धिको धिक्कार है, जो मैं फिर राज करुं फिर उस रानीके ताई और उसनत उस कोतवालको और उस वेश्याको और कामदेवको धिक्कार है जो यह मति ससारकी करता है कि जिससे संसार महमक हो जाता है बाद उसको फलको लिये हुये महलमें गया और अपने चित्तमें कहने लगा—यह तन, मन, धन, जी सब चंचल है और यह संसार जानहार है इसमे कोई कायम न होगा जबहीं पैदा हुआ तबहीं कालने खाया और जब मरता है तो कुछ साथ नहीं लेजाता और मरा मरा करके जन्म गँवाता है सुखके सब साथी हैं और दुःख कोई नहीं बाटता यह संसार जो है सो समुद्र है और माया उसका जल है ममता मछली है एसा धधिक कोई न मिला कि जो इसको मारके खाय, यह विचार करता हुआ रानीके पास गया और उस पूंछा तूनें यह फल क्या किया ? तब वह बोली महाराज, मैंनें खाया सुनकर राजानें वही फल रानीको दिखाया तब वह देखकर जड़ हो गई तब राजा उस फलको लेकर बाहर आया और धोकर

खाया तिस पीछे सोच उसको हुआ निदान बनके जानेका सामान किया राज, पाट, धन, दौलत और रानीकी मोहब्बत तजकर चला न किसीसे पूंछा न किसीको साथ लिया ऐसा निर्मोही होकर निकला कि, किसीका ध्यान न किया देश देश और नगर नगरमें चर्चा हुई कि राजा भर्तृहरि राज तजकर योगी हुआ और यह बात उड़ती उड़ती राजा इंद्रके अखाड़ेमें पहुँची कि राजा तो देश छोड़के चला गया और उसके देशमें बड़ा दुलड़ हुआ तब यह बात सुनकर सब देवताओंने मिलकर विचार किया कि, एक देवको रखवालीके वास्ते राजा भर्तृहरिके देशमें भेजदो कि कोई विदअत रैयतपर न करे ऐसा ठहराय देवको बुलाकर वहां भेजदिया और कहा वहांकी निगाहबानी कर वहां सो वह रखवाली करताथा और वहां राजा विक्रमका योग पूरा हुआ वह अपनें मनमें मनसूबा करताथा कि, मैं छोटे भाईको राज देकर आयाहूं इस वास्ते अब चलकर देखूं कि वह किसतरह राज करताहै यह अपने दिलमें कहके चला और रातको अपनें नगरके पास आन पहुँचा देवने उसे आते देखा तब वह पुकारा तू कौन है? जो इस वख्त शहरमें जाता है? यातो अपना नाम बता नहीं तो मैं तुझे मार डालताहूं तब उसने कहा मैं राजा विक्रम हूं तू कौन है? जो मुझे रोकता है? तब देव बोला मेरे तईं देवताओनें भर्तृहरिके

राजकी रखवाली करनेके वास्ते भेजा है राजानें पूछा भर्तृहरिको क्या हुआ ? उसने जवाब दिया भर्तृहरिको कोई इहांसे छलकर लेगया यह बात सुनकर राजा हँसा और उसे कहा यह तो मेरा छोटा भाई है फिर देव बोला मैं नहीं जानताहूं कि तुम कौन हो ? और जो तुम विक्रम इस देशके राजा हो तो मुझसे लड़ो और मुझे मारकर जाओ विना लड़े मैं तुम्हे शहरमें पैठने न दूंगा यह सुन राजा बिगड़के बोला तू मेरे तांई क्या डराता है ? और जो लड़ा चाहे तो मैं तय्यार हूं इस तरह दोनों बातें कर तैयार हो लड़ने लगे और राजा उस देवको पछाड़कर छातीपर चढ़ बैठा तब यह बोला राजा ! तू मुझसे वर माग मैं तुझे दूंगा यह बात उसकी सुनकर राजा हँसकर बोला मैंने तुझे पछाड़ा है और चाहूं तो तुझे मार डालूं तू मुझे दान क्या देगा ? तब यह बोला राजा ! तू मुझे छोड़दे मैं तेरे आगे इसका सब ब्योरा कहताहूं तेरे राजकी धूम सब देशमें है और सब राजा तुझसे डरतेहैं पर मैं जो बात कहूं सो तू कान देकर सुन तेरे शहरमें एक तेली है और एक कुम्हार, सो तुझको मारनेकी फिक्रमें है पर तुम तीनोमेसे जो दोनोको मारेगा वही अचठ राज करैगा तेली तो पातालका राज करताहै और यह कुम्हार योगी बना हुआ जंगलमें तपस्या अपनें जीमें लाकर करताहै दिलमें करताहै कि, राजाको मारके तलीको तेलके जलते कड़ाहीमें

डालूं और देवीको बलि देकर मै निश्चिंत राज करूं. और तेली कहता है कि, राजा और योगीको मारके त्रिलोकीका राज मै करूं और तू इस बातको न जानता था मैने इसवास्ते तुझे खबरदार किया तुम इनसे बचे रहेना और आगे जो मै कहताहूं सो तुम ध्यान लगाकर सुनो योगीनें उस तेलीको मारकर अपनें बश कियाहै सो तेली एक सिरीसके वृक्षपर रहा है अब वह योगी तुमको नौता देनेको आवेगा छल करके तुझे ले आवगा तू न्योता लेकर वहा आइयो जब वह कहे कि तू दंडवत् कर तब तू कहियो मै दंडवत करना नहीं जानता मेरेतांई एक जहान दंडवत् करताहै जो तुम गुरु हो और मै चेला तो मुझे दंडवत् करना बताओ और उसी तरहसे मै दंडवत् करूं. जब वह शिर निहुरावे तब तू खांडा मार कि उसका शिर जुदा हो जावे और वहा कड़ाह जो देवीके आगे तेलका खौलता होगा उसमें उसको और वृक्षसे तेलीको उतारके दोनोको उसी कड़ाहमें डाल देना, यह मेरी बात तू गाठ बांध इसे हर-गिज कभी न भूलना, यह बात कहकर वह देव चलागया और राजा अपने महलमें आया भोर हुए सारे नगरमें खबर हुई कि राजा विक्रमादित्य आए दीवान मुत्सद्दी और सब अह लकार नजर लाए. तमाम शहरमें आनंद होगया घर घर मंगलाचार होन लग चारों तो खुशीके नगारे बज रहेथे इतनेमें

एक योगी आया और राजाको आदेश सुनाया एक फल उसके हाथ दिया उसने हँसकर वह फल हाथमें लिया योगीने कहा राजा! हमारे यहा यज्ञ होता है एक दिनका तुम्हारा नौता है तब राजाने कहा हम आवेंगे तुम अपने मनमें चिंता मत करो सांझ हुए पहुँचेंगे योगी यह सुनतेही ठिकाना बताकर अपनी मठीको गया जब सांझ हुई राजाभी खांडा फरसी ले तयार हुआ और किसीसे न कहा अकेला चलागया तुर्त योगीके पास पहुँचा और आदेश कहा योगी बोला कि देवीके आगे जाकर दंडवत् कर तो देवी तुझपर दया करे राजा बोला स्वामी! मैं तो दंडवत् करना नहीं जानता कि किस तरह करते हैं? इसवास्ते आप मुझे बताओ तो मैं करूं. योगी बताने लगा ज्योंही शिर झुकाया राजाने देवकी नसीहत याद करके एक खांडा ऐसा मारा शिर धडसे जुदा होगया और उसे मारके एकरान किया और उस वृक्षसे तेलीको भी उतार दोनोको तलके कडाहमें डालदिया तब देवी बोली- धन्य है विक्रम तेरे साहसको मैं तुझसे प्रसन्न हूं, तू मुझसे चाहे सो वर मांग और धन्य है तेरे माता पिताको जिनके घरमें तूने अवतार लिया देवी जब यह कह चुकी तब ब वीर आकर हाजिर हुए और राजासे कहने लगे कि हम आगिया और कोयला दो वीर तुम्हारी सेवाको आये हैं जो तुम्हारी कामना हो सो हमसे कहो हम

तुरंत पूरी करदें, सब जगहके आनेकी हम सामर्थ्य रखते हैं जल, थल, मही, आकाशमें पवनके रूप होकर जहां कहोगे वहां हम चले आवें जैसे हनुमान् तुर्त लंका पहुँचा वैसे हमभी आ सक्ते हैं यह सुन खुश हो राजाने कहा मुझे तो कुछ काम नहीं है मगर मेरे ताईं वचन दो तो मैं देवीसे तुम्हें मांगलूं लेकिन ये वीरो ! जो तुमसे वचन देकर निर्वाह किया जाय तो वचन दो तब उन वैतालोंने कहा कि, अच्छा तब राजाने उनको वचनबद्ध कर मांगलिया और कहा जिस जगह मैं याद करूं तुम उस जगह मेरेपास पहुँचना तब वीर बोले कि राजा ! जिस जगहमें हमें याद करोगे वहां हम पवनरूप होकर पहुँचें यह बात उनसे कहके राजा घरको गया ये बातें चित्ररेखा पुतलीने राजासे कहा कि राजा ! विक्रममें ये काम ये इतने योग्य तू नहीं है फिर ये वीर राजाके साथे हुए. और आगे बहुतसे काम किये जहां विक्रमके गाढ़ पड़ा तहां ये दोनों आकर हाजिर हुए जो कोई ऐसा काम करे तो सिद्ध हो राजा ! तू अपने जोरपर गरूर मत कर तुझ जैसे पृथिवीमें करोड़ों होगये हैं इतनी बात जब पुतलीने कही तब राजाकी यहभी साअत टलगई तब दूसरे दिन सुब हको राजाने फिर पाट बैठनेकी तैयारी की और चाहा कि सिंहासनपर पांव धरें, कि सत्यभामा–

तीसरी पुतली–

बोली– यह काम नहीं जो इसपर बैठो पहिले मुझसे एक नई कथा सुनलो एक दिन राजा वीर विक्रमादित्य दरिया किनारेपर महलमें खिळवत करके बैठेथे राग हो रहाथा और हरएक रंगकी चुहल मच रहीथी कि दिल फरेफ्ता होजाये और एकसे एक सहेली खूबसूरत पास बैठी थीं राजाका दिल वहां बेइख़तियार लग रहाथा कि एक पंथी त्रिया संग लिये हुए और उस त्रियाकी गोदमें एक बालक घरसे खफा होकर निकले थे दरियाके पास आकर गुस्सेके मारे कूदपड़े, मर्दके एक हाथमें रंडी और एक हाथमें वह लड़केका हाथ वह तीनो डूबने लगे तब पुकारकर बोले कि ऐसा धर्मात्मा कौन है ? जो इन तीनों आदमियोंकी जान बचाये उनमेंसे वह मर्द हाथ करके पुकारा जो कोई गुस्सा मार न सके तो इसी तरह हो बेभजल मर जाता है और गिरके बहुत पछताता है उसकी आवाज राजा विक्रमादित्यने सुनतही पासके लोगोंसे कहा कि, यह कौन दुःखी पुकारता है ? तब हरकारोंने खबर दी कि, महाराज ! एक मर्द और रंडी लड़केके समेत पानीमें डूबते हैं उनमेंसे यह मर्द चिल्ला रहा है कोई ऐसा परउपकारी हो कि हम डूबतोंको निकाले यह हरकारा कहताही था कि, वह फिर पुकारा– हम तीन जीव डूबते हैं कोई हम भगवानका

बंदा पार लगावे यह सुनकर राजा वहांसे धाया और आकर उस दरियामें कूद पड़ा जाकर एक हाथमें रंडी और दूसरे हाथमें लड़केको पकड़लिया यह मर्दभी राजासे लिपटगया तब राजा घबराया और आपभी डूबने लगा इतनेमें ईश्वरको याद किया और कहा कि हे नाथ ! मैं धर्मके वास्ते आया था और इससे मेरा जीवभी जाता है, धर्म कर्ते अधर्म होयेगा राजा यह कहकर बहुत जोर करने लगा और उस वख्त जोर उसका कुछ काम न आया तब उसने, आगिया और कोयला दोनों बीरोंको याद किया याद करतही दोनो बीर आकर हाजिर हुए और चारोंको उठा किनारेपर रख दिया तब वह विदेशी राजाके पाओंपर गिरपड़ा और कहा कि, महाराज ! तुमने हम तीनोंको जीवदान दिया तुमही हमारे भगवान् हो क्योंकि जीवदान इस वख्त तुमसे पाया राजा हाथ पकड़कर उन्ह तीनोंको रंगमहलमें ले आया और बिठाकर कहा जो तुम्हे चाहिये होय सो मांगो तब वह बोला महाराज! हमको हुक्म करो तो हम घरको जावें और जब तलक जियेंगे तबतलक आपको आशिष दिया करेंगे ऐसा कुछ तुमनें हमे दिया है तब राजाने अपनी तरफसे लाख रुपये देकर उन्होंको घर भिजवा दिया इतनी बात कहकर पुतली फिर बोली– राजा, इतन लायक जो तुमहो तो इस सिंहासनपर बैठो नहीं

तो तमाम लोग हँसेंगे यह अहवाल सुनतेही यहभी मुहरत राजाका टलगया दूसरे दिन फिर राजा दिलमें सोच करता हुआ सिंहासनपर बैठनेको आया तब चंद्रकला नामवाली—

चौथी पुतली–

बोली– सुनो राजा! तुम मन मलीन क्यों हो बैठ और सुनो जो मैं कथा कहूं एकरोज एक पंडित कहींसे फिरते फिरते राजा वीर विक्रमादित्यके पास आया और उसन आकर बयान किया कि जो कोई एक महल बनानकी बिना मुआफिक मेरे कहनेक धरे धन उठाये और बडा नाम पाये तब राजाने कहा अच्छा जाहिर करो ब्राह्मण कहने लगा– तुला लग्न जब आये तो उसमे मंदिर उठाये जब तलक यह लग्न रहे तब तलक काम जारी रक्खे और जब तुला लग्न होचुके तब उसका काम मौकूफ कर इसी तरह तुला लग्नहीमें यह सारा मकान तैयार करलाये तो उसका अटूट भंडार होजाय और लक्ष्मी उसके यहांसे कभी न जाय यह सुनकर राजा मनमें खुश हुआ और दीवानको बुलाकर मंदिर उठानकी इजाजत दी, कि–तुम अच्छी जगह ढूंढकर महल बनाओ इतनेमें तुला लग्नभी आन पहुँची तब मंदिरकी नीव दीवा दत दसमें यह दयाई हुई कि राजा विक्रम तुला लग्न मापकर महल बनाता है जितन कारीगर उसमें काम करतेथ व उठकर तुला लग्न मनातेथ जब लग्न

आती थी सुस हो हो बनातेथे कहीं उसमें काम सोनेका और कहीं रूपेका और कहीं लोहका और कहीं काठका, नई नई तरहसे बनवाया सुनांचे दरयारके किनारेपर वह हवेली बनाई चार दरवाजे और सात खम्ब उसमे रक्खे और जगह जगह जवाहिर अनमोलके उसमें अड़े और दरवाजेपर दो नीलमके बड़े नगीनें लगाये किसीकी नजर न लगे वह जड़ाऊ महल कितने बरसोंमें ऐसा तैयार हुआ कि दुनियाके परदेपर किसीने दूसरा न आंखोंसे देखा और न कानोंसे सुना तब दीवानने आकर राजाको खबर दी कि, महाराज! आपके हुक्म माफ़क मंदिर तैयार होगया है आप चलकर उसे देखिये जो कोई उस महलको देखताथा सो मोहित हो रहजाता ऐसा सुन राजा वहांसे मकान देखनेको गया एकबार राजाके साथ एक ब्राह्मणभी गया महलको जब राजानें मुलाहजः किया तब ब्राह्मण देखकर और हँसकर कहने लगा ऐ राजा! ऐसा घर जो मैं पाऊं तो बैठ यहां सुखसे समय यह बात सुनकर राजाने कुछ मनमे सोच न किया गंगाजल और तुलसीदल लेकर यह घर उस ब्राह्मणको संकल्प कर दिया यह घर पाकर ब्राह्मणको ऐसा आनंद हुआ कि जैसे. चकोर रातको पाता है चंद तुर्त वह अपने कुटुंबको ले आया और यहां आकर आनंदसे रहा और रातको खुशीसे पलँगपर सोताथा कि पहर रात गये लक्ष्मी वहां आई और कहने लगी—

बेटा! हुक्म दे तो मैं गिरूं और घर माहर संपूरण भरूं. सौ-फसे उसने कुछ जवाब न दिया तब वह दोपहर रातको फिर गई और कहा कि ऐ ब्राह्मण! अज्ञानी मुझे आज्ञा दे उन्होंने चिंता करके रात गँवाई और सुबह हुए राजा वीर विक्रमादित्यके पास आया, मन मलीन और रातके अहवालसे डरा हुआ रंग जर्द विच्छेरेका और डरसे कुम्हलाया हुआ इस शकलसे देख राजा उसे हँसने लगा फिर कहने लगा कि, कलकीसी खुशी हमनें आज न देखी अय ब्राह्मण! यह अचंभेकी बात है तब ब्राह्मण बोला कि सुन स्वामी! मेरे दुखके तुम दाता हो प्रजाके सुख देनेवाले और तुम शकबंधी नरेशहो जैसे राजा कर्ण और इंद्र अपने समयमें दानी थे वैसेही इस समयमें तुम हो आपने जो मंदिर मेरे तई दिया है उसकी हकीकत मैं कहताहूं मालूम नहीं के इस मंदिरमें भूत है! या पिशाच! मेरे तई उसने सारी रात सोने नहीं दिया आपकी कृपासे और या लड़कोंके भागसे जीता बचा इसवास्ते अब मैं यहां आया हूं इससे भीख मांगना मुझे बेहतर है पर उस महलमें न रहूंगा यह बात सुन राजाने प्रधानको बुलाया और ऐसा कहा कि जो उस मकानमें लगा है सो हिसाब करके इस ब्राह्मणको दो राजाकी आज्ञा पाय दीवा नने हिसाब कर तोडे रुपयोंके लदवाकर ब्राह्मणके साथ कर दिये और वह अपने घरको गया एक दिन मौका देख उस

हवेलीमें राजा आकर रहा और बैठकर कुछ विचार करने लगा इतनेमें हाथ बांधकर लक्ष्मी आन खड़ी हुई और बोली कि धन्य राजा विक्रम ! तेरे धर्मको, इतना कहकर लक्ष्मी उस वख्त तो चली गई और राजाने तो वहां आराम किया जब पहर रात रही तब लक्ष्मी फिर आई और कहने लगी कि राजा, अब मैं कहा गिरूं ! राजानें कहा जो तू पड़ा चाहती हो तो पलँग छोंडके जहां तेरी इच्छा हो वहा गिर इतनेमें खूब तरहसे सोनेका मेह तमाम नगरमे बरसा सुबह हुआ तब राजा उठा और देख कर कहने लगा हमारी रैयतपर बहुत सीखथी लेकिन अब कोई दिन निश्चिंतहो आरामसे रहेगी इतनेमें दीवान आया और खबर दी कि महाराज ! तमाम नगरमें कंचनकी वृष्टि हो गई है इसवास्ते अब जो हुक्म आप करोगे ऐसा हम करें तब राजानें कहा कि, तमाम नगरमें ढोल बजवादो कि जिसकी हद्दमें जितनी दौलत है सो उसे ले और कोई किसीको मना न कर यह राजाका हुक्म पाकर सब दौलत रय्यतनें अपने घरमें भरी य बातें कहकर चंद्रकला पुतली बोली कि राजा भोज ! सुन राजाविक्रमके गुण यह एसा राजाथा और प्रजाका हितकारी इससे तू किस तरह उसके सिंहासनपर बैठता है ? तेरी क्या जान है ? यह पुतलीकी बात सुनकर राजा भोज अज्ञान होगया और बररुचि पुरोहितभी शरमिंदा हुआ

यह सामत भी गुजरगई दूसरे दिन राजा फिर सिंहासनपर बैठने चला. और मनमें चाहाकि पांव सिंहासनपर धरें. तब लीलावती नामक—

पाचवीं पुतली—

बोली—सुन राजा विक्रमके गुण एक दिन दो पुरुष आपसमें झगड़नें लगे एकनें कहा कर्म बड़ा और दूसरेनें कहा बल बड़ा किसमतका तरफदार बोला नशीब बड़ा है कि अदनाको आला कर देता है और जारका जानिबदार कहनें लगा जोर बड़ा है. जोरावर होवेतो तमाम जहानको जेर करदे इस तरह दोनों झगड़ते२ राजा इंद्रके पास गये और हाथ जोड़कर कहने लगे स्वामी! आप हमारा न्याय कर जा दोनोंमें सच हो उसे फरमाइये और झगडा निबेड़िये तब राजा इंद्र बोला—इनका न्याय हमसे न होगा इस इन्साफको वह करेगा, जिसनें योग किया होगा इससे बेहतर यह है कि तुम मर्त्यलोकमें राजा विक्रमादित्यके पास जाओ इस न्यायको वह चुकावेगा उन्होने राजा इंद्रकी आज्ञा पाय राजा विक्रमादित्यके पास आकर अपना अरज किया और कहा कि हम तीनो भुवनमें फिर आये और किसीने हमारा न्याय नहीं चुकाया इसका धर्म अधर्म विचारके आप हमारा न्याय करो यह बात सुन राजाने कहा कि आज तुम अपने अपने घरको जाओ और छे महीनके बाद

हमारे पास आओ तब हम तुमको इसका जवाब देंगे यह सुनकर वे दोनों अपने घर गये राजा अपने मनमें चिंता कर वस्त्रोर पहन काछा पहरा खांडा करी ले विदेस चला और अपने दिलमें यह आहद किया कि, जब तलक इसका भेद न पावेंगे तब तलक देशमें फिर न आवेंगे तब फिरते फिरते समुद्रके किनारे जा पहुँचा तब वहां एक नगर उसने बहुत बड़ा निपट सुहावना खूब आबाद पाया और उसमें तरह तरहकी हवेलियां जिनमें करोड़ों रुपये लगे थे और उनमे शिवाय जवाहिरके कुछ नजर न आताथा यह देखकर राजा कहने लगा कि जिसका यह नगर है, वह राजा कैसा होगा ? शहरमें फिरते फिरते शाम होगई और शहर अखीर न हुआ। इतनेमें क्या देखता है कि एक दुकानमें महाजन शिर निहुड़ाये हुए बैठा है तब राजा उसीके सामने आ खड़ा हुआ तब सेठने राजासे कहा तू किस देशसे आया है ? और तेरा मन मलीन क्यों हो गया है ? किसे ढूंढता है ? और क्या तेरा काम है ? यह सब अपना अर्थ मुझसे कह ? किसका बेटा है तू ? और क्या तेरा नाम है ? तब वह बोला सेठजी ! मेरा नाम विक्रम है मै आज तुम्हारे पास आयाहूं मेरे दिलका मकसद यह है कि, मै राजासे मुलाकात करूं सो आज मुलाकात न हुई कल मै राजासे मिलूंगा और उनकी सेवा करूंगा जो वो मुझे नौकर रक्खेंगे और

मेरा महीना कर देंगे तो मै रहूंगा यह बात सुनकर वह महाजन बोला, तुम क्या रोज लोगे? तब राजा कहने लगा जो कोई लाख रुपये रोज देगा तो हम उसके यहां नौकर रहेंगे तब वह बोला भाई तुम क्या काम करतेहो? जो तुम्हें लाख रुपये रोजको कोई देवे वह काम मुझे बताओ? तब उसने कहा जिस राजाके पास मै रहताहूं उसकी गाढ़ी मुस्किलमें काम आताहूं सेठ हँसकर बोला, लाख रुपये रोज हमसे लो और कठिनतामें हमारे सहाय हो सुबह हुए नौकर रक्खा और दूसरे दिन लाख रुपये दिये उसने उनमेंसे आधे रुपये भगवानके नाम संकल्पकर ब्राह्मणोंको दिये, आधेके आधे कंगालोंको दिये और जो बाकी रहे उनका खाना पकवाकर भूखोंको खिला दिया रातहुए पर फिर जो एक फकीरने सवाल किया उसेभी खड्ग रेहन रखकर और भोजन पेटभर करवाया और आप चने चबाकर गुजरानकी कितने एक दिन उस साहूकारके पास रहकर रुपये हररोज योंहीं खर्च करते रहे गरज किसम तने तो पारीकी सब जोरबोला अब मेरी बारी है कि एकाएक सेठके दिलको कुछ उचाटी हुई और एक जहाज तैयार कर किसी देशमें जानेका उसने इरादा किया और विक्रमसे कहा मैं किसी देश जाताहूं वह बोला स्वामी! मैने यह वचन दियाथा कि गाढ़ी भीड़में तुम्हारे काम आऊंगा, अब मैं तुम्हारे

साथाई क्योंकि तुमनें मेरा प्रतिपाल किया है तब उसेभी सेठने जहाजपर चढ़ालिया और रवाना हुआ कितनेक दिनोंके बाद जहाज मँझधारमें तूफानसे तबाह होने लगा तब वहां लँगर डालकर उसी जगह चंदरोज रहा उससे आगे टापू था उसमें सिंहावती नाम राजकन्या रहतीथी हजार कन्या उसके साथथीं इसमें जब वह तुफान थंभगया तब सेठनें कहा कि अब लँगर उठाओ और चलो लँगर अलक बीच कहीं अटक रहाथा किसीसे उठ नसकताथा जोर कर रहेथे निदान निराश होकर सब परमेश्वरका स्मरण करने लगे और लगे कि कहने इस मझधारसे पार करनेवाला तेरे सिवाय कोई नहीं जहां जहां जिस जिसके सर्इ मुसकिल पड़ी है तहां तहां सहाय हुआ है दिनदयालु तेरा नाम है इस वास्ते तुझको हम शरण है और हम परभी दयाकर इतनेमें बनियां घबरा विक्रमसे यह कहनें लगा अब अथाहमेंपड़े हुए हैं किनारा हमे नजर नहीं आता और एक बात तरीही इस वख्त याद आई है जब तू हमारे पास नौकर रहाथा तब तूने इकरार किया था कि मुशकिल काम मे आसान करूंगा तो इससे और क्या कठिन होगा बालक बुदमें अब पड़गयाई यह सेठजीकी बात सुनकर विक्रम उठा और करी खांडा हाथमेंले रस्सा पकड़ जहाजके-नीच उतर गया आकर बहतसी हिकमतकी पर कोई हिकमत

न चली तब सेठसे कहा कि सेठजी अब पालें इसकी चढ़ादो लोगोंनें पालें चढ़ाई और उसनें कूदकर लंगर काटदिया पानी-की तेज़ीसे और हवाकी सुदीसे जहाज चल निकला और कोई रस्सा उसके हाथ न लगा उसी जगह रह गया जो कुछ विधा-तानें कर्ममें लिखा है उसको कोई मिटा नहीं सकता अलकिसः वह राजा वहांसे बहताहुआ चला और जाते जाते उसे एक नगर नजर आया वह वहां जानेलगा उस नगरका जो दर-वाजा था उसपर ज्योंही निगाहकी कन्यें देखा कि चौखटपर लिखा हुआहै कि सिंहावतीकी राजा विक्रमादित्यसे शादी होगी यह देख राजाको अचरज हुआ कि यह किस पंडितने लिखा है ! जब उस दरवाजेके अंदर गया तो वहां जाकर एक महल देखा और वहां रंडियां हैं मर्द कोई नहीं है और एक अच्छे पलँगपर सिंहावती सोती है और चौकीकी सहेलिया बैठी हैं यह भी जाकर पलँगपर बैठगया और तुर्त उसको जगा दिया वह उठकर बैठगई तब राजाने हाथ पकड़लिया और दोनो सिंहा-सनपर आ बैठे सब सखियां हाजिर हुई और इस भेदसे वाकि-फयीं कि राजा विक्रमादित्य यहा आवेगा और इससे उसकी शादी होगी राजाको जो देखा तो फूलोंकी माला ले आई और गंधर्वब्याह किया राजा जैसा दुःख पाकर पहुँचाथा वैसा हँसा इसवस्त उसनें सुखोपभोग किया अलगरज ये दोनों आप

समें रहने लगे और नौजवानीकी ऐसें करनें हर एक तरहका लुत्फ उठाने लगे और सखियांभी खिदमतमें हाजिर थीं और मानिंद चकोरके चांदसा राजाका मुंह देखतींथीं चंदमुरव राजाको इसी तरह गुजरी अपने राजकी सुध कुछ न रही यह बातें कह लीलावती पुतलीनें फिर कहा कि राजा भोज! जैसा राजानें यत्न किया वैसाही विधातानें उसको सुख दिया किसमतनें यह तमासा दिखाया फिर कहनें लगी कि उन सखियोंमें एक सखीसे राजा विक्रमादित्यकी बहुतसी प्रीति हुई और यह राजाकी दया विचार भेद वहांका कहनेलगी ऐ राजा! तुम यहां आन फँसहो जीते यहांसे कभी न निकलोगे तुम्हारा नाम सुनकर और तुम्हारी राजका ध्यान करके मुझको रहम आताहै क्योंकि तुम्हारे सरीखे धर्मात्मा, दयावंत, दाता, परोपकारी होकर यहां रहना इसमें तुम्हारा भला नहींहै उधर लाखों आदमी तुझबिना दुःख पाते होंगे उस सखीकी बात सुनकर राजाको ज्ञान हुआ और अपने राजका ध्यान आया तब सखीसे पूछा यहांसे जानेका भेद मुझे बताओ तब यह बोली एक घोड़ी इस राजकन्याकी घुड़सालमें है, सो उदयसे अस्ततलक आ सकतीहै यह बात सुनकर दूसरे दिन राजा रानीको अपनें साथ लेकर टहलता हुआ अश्वशालामें आ निकला घोड़ोंको देख कर तारीफ करने लगा रानी बोली जो तुझे ठीक होय तो

इन घोड़ोंमेसें किसी घोड़ेपर चढ़ाकरो भेद तो इसे वहांका मालूमही था दूसरे दिन घोड़ा उसनें वहांसे मँगवाया और उसपर सवार हो वहीं फेरनें लगा, यह राजाका अहवाल देख रानीभी खुश होती थी और राजाभी खुश होताथा इसी तरह कईएक दिन और २ घोड़ोंपर सवार होतारहा एक दिन उस घोड़ीको मँगाया और रानीके हुक्मसे उस घोड़ीपरभी सवार होगया रानी तो गफलतमें रही, कि इसने कोड़ा किया घोड़ीमानिंद हवाके राजाको ले उड़ी और सखिया पछता पछता रहगई इतनेमें राजा अंबावती नगरीको आन पहुंचा वहां नदीके किनार एक सिद्ध बैठा देखा, तब राजा उतर दंडवत् कर उसके पास जाकर बैठा सिद्धका जब ध्यान खुला तब उसने इसे देखा देखकर खुश हुआ और एक फूलकी माला इसे दी और कहा कि राजा! विजयमाला मैंने तुझ दी है इसका गुण यह है कि, जहां जायगा वहां फतह पायगा और यह माला पहिनपर तू सबको देखेगा पर तुझ कोई न देखगा फिर एक छड़ी राजाको दी और उसका ब्योराभी समझाकर कहा कि, इस लकड़ीका यह खयास है कि, पहले पहर रातको इसके पास सोनका जड़ाऊ गहना जो मांगोंगे तो यह देगी, और दूसर पहर रातको एक खूबसूरत नारी ऐसी देगी कि जिस देख राजा तुम मादिक होजाभाग और तीसरे पहर रातको जो इसे

हाथमें लोगे तो तुम सबको देखोगे और तुम्हें कोई न देखेगा, चौथे पहर रातको मानिंद काठके यह होजायगी इससे डरके कोई दुश्मन तुम्हारेपास आ न सकेगा यह बात सुनाकर योगीनें राजाको रुखसत किया राजा जब उज्जैन नगरीके पास जाकर पहुँचा तब नगरसे एक ब्राह्मण और एक भाटको आते देखा और जब नजदीक आकर पहुँचे तो उन्होने आशीर्वाद देकर कहा महाराज! आपके द्वारपर हमने बहुत दिन सेवा की पर हमारा भाग्यही ऐसा था कि कुछ इसका फल न मिला तब राजाने सुनतेही ब्राह्मणको छड़ी दी और भाटको माला दी और उसका सब भेद कह दिया तब आशीर्वाद देकर वह दोनों कहने लगे महाराज! इस समयमें तुम राजा कर्ण हो तुम्हारे बराबर दानी आज पृथ्वीमें दूसरा और नहीं यह कहा और दोनो बिदा होकर गये राजाभी अपने स्थानको गया तब दीवान प्रधान सब आनकर हाजिर हुए. शहरकी तमाम रैयत खुश हुई और व दोनों झगड़ेलूभी यह खबर सुन तुर्त आकर राजाके सामने खड़े रहे और कहा महाराज! आपने जो छै महीनेका करार कियाथा सो बीत गया अब हमारा न्याय करदीजिये यह सुनकर राजा बोला कि बिना फल कर्म कुछ कामका नहीं और बिना कर्म फल काम नहीं आता इससे ये दोनों बराबर हैं इसको सुन संतोषकर बाद छोड़ दोनों अपने अपने घरको गये ऐ

राजा भोज ! यह महवाल मैनें तुझसे इसलिये कहा है कि, तू समझकरके यह खयाल अपनें जीसे उठावेगा इसवास्ते कि, जो ये लियाकत रक्खे वह सिंहासनपर बैठे यहभी योग राजाका बीतगया फिर उसके दूसरे दिन भोर होतेही सिंहासनपर बैठनेको तैयार हुआ कि इतनेमें कामकंदला—

छठी पुतली—

हँसी और कहने लगी, कि जिस आसनपर राजा विक्रमने पांव धरा है तू उसमें बैठनेके लायक कहां है ? अय पापी ! तू अपने होशको गुम न कर और पांव खाली रखदे, क्यों कि तुझे देख मेरा मन मलीन होजाता है इस सिंहासनपर वही बैठे जो विक्रमसा राजाहो तब राजा बोला तू अपने मुहसे कह कि विक्रम राजाने क्या क्या कर्म किये हैं ! वह बोली तू सुचित्त होकर बैठ मैं नृपतिकी कथा कहतीहूं एकदिन नृपति अपनी सभामे बैठाथा वहां एक ब्राह्मणने आकर एक अचरजकी बात कही कि उत्तर दिशामे एक बड़ा बन है और उस बनमें एक पर्वत और उसके आगे एक तालाब है और उस तालाबमें एक खंभ स्फटिकका है, जब सूर्य निकलताहै तब उस सरोवरमेंसे वह खंभभी निकलताहै और ज्यों ज्यों सूरज चढ़ताहै त्यों त्यों खंभभी चढ़ताहै जब ठीक दोपहर होतीहै तब वह खंभ सूर्यके रथके बराबर जाकर पहुँचताहै

तब उस जगह रथभी खड़ा रहताहै और वहां सूर्य जब कुछ भोजन कर लेतेहैं तब रथ फेर आगे ले चलतेहैं और खंभभी घटता जाताहै निदान सामके वख्त पानीमें लोप हो जाता है, इसको देवता या देव कोई नहीं जानता यह बात ब्राह्मणके मुहसे सुनकर राजानें अपनें मनमें रख्खी जाहिर न की और उसके लई कई रुपये दे बिदा किया और अगिया बैताल बेतालोंको याद किया वे दोनो वीर वहां आकर हाजिर हुए. और उन्होने कहा कि हमे जो इस वख्त आपने याद किया है सो आज्ञा कीजिये कहिये स्वर्गको ले जावें ! कहिये पातालको ! कहिये समुद्रपार ! इन तीनो लोकोंमें जहां आपकी मर्जी हो तहां लेचलें ! तब हँसकर राजाने कहा एक कौतुक देखने हम जाया चाहतेहैं सो वह उत्तरखंडमें है तहां तुम लेचलो यह सुनकर वीर कांधेपर चढ़ा राजाको लेउड़े और उस जगह तुर्त जा पहुँचे तब राजानें वह तालाव देखा कि चारो घाट उसके पक्के हैं हंस बगुले उसमें फिरतेहैं और मुरगाबियां चकोर पनडुबियां कलोल करतीहैं कमलके फूलोंपर भँवरे गुंज रहे हैं मोर बोल रहे हैं कोयल कूक रही हैं और तरह तरहके पंछी हुलासमें हैं, फूलोंकी सुगंधोंके साथ पौन चली आतीहै और मेवादार दर ख्तकी डालियांसी लचके जाती हैं राजा यह सभा देखकर मनमे बहुतही खुश हुआ, रातभर वहीं रहा जब सुबह हुई तब सूर्य

निकला जो कुछ अहवाल ब्राह्मणने कहाथा यह सब वहां देखकर वीरोंसे कहा एक बात मेरे जीमें आती है, कि मेरे तई ले जाकर इस खंभपर बिठलादो और भगवानका ध्यानकर अपने स्थानको जाओ तब वीरोंने खंभपर ले जाकर बिठा दिया और वे अपने मकानको गये ज्यों ज्यों यह बढ़ने लगा त्यों त्यों राजा अपने दिलमें खौफ करने लगा जितना सूर्यके नजदीक पहुंचताथा उतनाही गर्मीसे जला जाताथा निदान सूर्यके निकट पहुँच जलकर अंगार होगया जब खंभ बराबर रथके पहुंचा और रथवानने एक मुर्दा जला हुआ देखा तब अपने रथके घोड़ोंकी बाग खैंची सूर्यने झुककर देखा कि खंभपर जला हुआ एक आदमी लग रहा है सूर्य त्राहि त्राहि कर बोले कि यह साहस आदमीका नहीं यह कोई योगी है या देवता या कोई गंधर्व इस मुर्देके होते में इस जगह किसतरह भोजन करूंगा? यह कहकर सूर्यने अमृत ले इसपर छिड़काया तब राजा राम रामकर पुकार उठा और देखकर सूर्यको दंड वत् कर हाथ जोड़ कहने लगा कि धन्य है भाग्य मेरा और मेरे कुलका जो आपके दर्शन पाये और मैंने इस जन्ममे यज्ञ दान किये थे इसीके सबबसे तुम्हारे चरण देखे जिन्दगीका जो फल था सो मुझे मिला इच्छा संसारमें सबको है, लेकिन जिस-पर तुम्हारी मिहरबानी हो उसीको दर्शन मिलताहै यह सुनकर

सूर्य बोले कि तू कौन है ? तेरा क्या नाम है ? तुझे देख देखके मेरे जीमें तरस आती है अपना नाम तू अच्छीसे कह तब राजा बोला कि, स्वामी ! नगर अंबावतीमें गंधर्वसेन नाम जो राजाथा उसका मै बेटा हूं मेरा नाम विक्रम है आपकी कथा मैने एक ब्राह्मणके मुहसे सुनीथी तब मुझे आपके दर्शनकी इच्छा हुई और आपकी समझोहसे आपके चरण देखे अब मेरे तई आज्ञा दीजिये तो मै बिदा हूं यह सुन सूर्यने हँसकर अपना कुंडल उतारकर राजाको दिया और कहा अब तू निडर राज कर फिर सूर्यका रथ आगे बढ़ा और खंभभी घटने लगा जब राजा अकेला रहगया तब बीरोंको अपने पास बुलाया वे आकर हाजिर हुए. उनके कांधेपर सवार होके अपने मकानको आया जब शहरमें दाखिल होने लगा तब सामनेसे एक गुसाईं आया और राजासे अपने योगकी महिमा कहा महाराज ! जो आप सूर्यके पाससे कुंडल लायहो सो मुझे दान दीजिये और यश धर्म, बड़ाई लीजिये राजा बोला ऐ मतिहीन ! ऐसा योग तूने कब कमाया ? जो तू कुंडल मांगता है यह सन्यासी कहनें लगा कि महाराज ! मैने योग तो कुछ नहीं साधा पर सुनाथा कि राजा विक्रम बड़ा दानी है इससे मैनें आपको आंचा राजानें हँसकर कुंडल उतार उसके हाथ दिया आप खुश होता हुआ अपनें घरमे गया कामकदला ये बात सुनाकर कहने लगी

राजा! तुममें इतनी शक्ति हो तो तूमी इस सिंहासनपर बैठ यह बात सुन राजा मनमलीन हो महलमें गया दूसरे दिन राजा मनमें गुस्सः खाताहुआ फिर सिंहासनपर बैठनेको चला और वररुचि पुरोहितसे कहा कि इस बेर मै पुतलीके रोकनेसे न रुकूंगा आज सिंहासनपर मै जरूर बैठूंगा जब राजाने अपना पांव उठाकर सिंहासनपर बैठनेको चाहा कि रक्खूं तब कामोदी नाम-

सातवीं पुतली–

कहने लगी–और पांव तले आन गिरी, तब राजाने यह देख दुःखित होके पांव खैंचलिया और उस पुतलीसे कहा तू किस कारन पांवतले आनगिरी! तब इसन कथा शुरू की कि हम जो हैं अबला सो सत्ययुगकी हैं राजा! तेरा अवतार कलियुगमे हुआ हमने एक मर्दको छोड़ दूसरेका मुह नजरसे नहीं देखा, हम पहले आपना माजरा कहती हैं कि विश्वकर्माने तो हमे जन्म दिया और बाहुबल राजाके पास आकर रहीं उसने राजा वीर विक्रमादित्यको हमे दिया वह अपने घर ले आया जब हम वहांसे बिछड़ीं तबसे कभी सुख नहीं पाया जो उस राजाके बराबर होवे सोही इस सिंहासनपर बैठे राजा बोला विक्रममे वसफ क्यायेे तू वे मुझसे बयान कर तब वह पुतली बोली, सुन राजा! विक्रमका अहवाल, एकदिन

राजा वीर विक्रमादित्य अपने घरमें दोपहर रातको सोताथा और तमाम शहर नींदमें यहांतक गाफिल था कि जो किसी आदमीकी आवाज न आतीथी कि, उत्तर दिशाकी तरफ नदीके पार एक स्त्री ढाढ़ें मारके रो उठी उसका अवाज राजाके कान पड़गया तब राजा अपने मनमें चिंता करने लगा कि, हमारे नगरमें कोई दुःखी आया है कि यह अपने दुःखसे कूक मार मार रो रहा है यह बात दिलमें विचार ढाल तलवार हाथमें ले उधरको चला और नदीके किनारेपर पहुँचकर वस्त्र छोड़ लंगोट मार पैरकर पार हुआ और थोड़ा आगे बढ़कर देखा तो एक अति सुंदरी जवान नारी खड़ी कूकमार रो रही है उसके पास आकर राजाने पूछा कि पुरुषका तुझे वियोग है या पुत्रका शोक है सो कह! या तुझे सौतका साल है इतने दुःखोंमेसे किस दुःखसे तू रोतीहै! जो कुछ तुझे व्यापा है सो मुझे कह! तब वह कहने लगी सुन राजा! हमारा बालम चोरी करताथा इतनेमें शहरके कोतवालने उसे पकड़कर शूली दिया है और मै उसकी मुहब्बतसे कुछ खाना खिलानेको लाईहूं और चाहती हू उसे भोजन करवाऊं पर शूली ऊंची है और मेरा हाथ उसके मुंह तलक नहीं पहुँचता इस दुःखसे मै रोतीहूं और बहुत यत्न करतीहूं पर पहुँचने नहीं पाती तब नरपतिनें कहा यह तो थोड़ीसी बात है इसके वास्ते तू क्या रोतीहै! उसने जवाब दिया

कि, मुझे यह थोड़ी महुतही है, तब राजा बोला मेरे कांधेपर चढ़ उसे खिलादे तब यह कंकालिन राजाके कांधेपर चढ़ी उस शूलीपर चढ़ चोर खो टँगाया उसे खयानें लगी तब रक्त राजाके बदनपर गिरने लगा राजा मनमे सोचा कि, यह कोई और है ये मनुष्य नहीं इसने मुझे धोखा दिया तब अपने जीमे राजाने सोचकर पूंछा कि, कह सुंदरी! तेरा पिया भोजन करता है कि नहीं? तब कंकालिन बोली रुधिरसे खा चुका, अब इसका पेट भरगया इसवास्ते मुझे कांधसे उतार जब हेठ उतरी तब राजाने कहा उसने चाहसे खाया तब कंकालिन हँस कर बोली तू मांग जो तुझे चाहिये होय? मैं तुझसे बहुत खुश हुई मैं कंकालिन हू अपने जीमें मुझसे मत डर तब यह बोला मैं तुझसे क्या डरुगा और क्या मागूंगा? तैंने सो मर्दको मरे कांधपर चढ़ खवाया सो तू मुझे क्या देगी? यह फिर बोली कि राजा! तू इसक खयालमें मत पड़ कि मैने क्या किया और क्या न किया? जो तुझे इच्छा होय सो मांगले राजाने हँसकर कहा कि अन्नपूर्णा मुझ दो और जगत्मे यश लो यह बोली अन्नपूर्णा मेरी छोटी बहन है तू मेरे साथ चल मैं तुझे दूंगी इस तरह आपसमें दोनों वहांसे वचन कर चले आगे२ कंकालिन और पीछे पीछे राजा नदीके किनार जा पहुँचे वहां एक मंदिर था उसके द्वारे कंकालिनने ताली मारी और अन्नपू-

र्णाने प्रकट होके उससे कहा के यह भूपाल कौन है? वह बोली कि यह राजा विक्रम है इसने मेरी सेवा की है और मैंने इससे वचन हारा है अगर मेरी मोहब्बत तेरे दिलमें हो तो अन्नपूर्णा इसे दे तब हँसकर उसने राजाको एक थैली दी और कहा कि इसमेंसे जितनी खानेकी चीज तुम मांगोगे उतनी पाओगे तब राजाने हाथ फैला लेली और वहांसे खुश हो नदीके किनारे स्नान ध्यान कर निश्चिंत हुआ कि इतनेमें एक ब्राह्मण वहां आन पहुँचा उसको राजाने पास बुलाया और कहा कि कुछ भोजन करोगे? उसने कहा मुझे भूंख लगी है, जो आप देओगे तो मै खाऊंगा? राजा बोला क्या खाओगे? किस चीजपर तुम्हारी सूरत है? तब ब्राह्मण बोला इस वख्त मिले तो पकवान खाऊंगा राजा अपने मनमें सोचने लगाः— जो इसदम पकवान न पहुँचेगा तो मै ब्राह्मणसे झूठा हूंगा इतनी बात मनमें विचार थैलीमें हाथ डालकर जो निकाला तो देखा कि पकवानही निकला ब्राह्मणने पेट भरकर खाया और बोला—महाराज! भोजन तो मैंनें किया, अब इसकी दक्षिणाभी दीजिये तब राजानें कहा महाराज! आप जो दक्षिणा मांगोगे सो मैं दूंगा ब्राह्मण बोला—यह थैली मै दक्षिणा पाऊं तो आनंदसे अपने घर जाऊं थैली ब्राह्मणको देकर राजा अपनें महलमें आया इतनी कथा कहकर यह राजा भोजसे

फिर बोली कि इतनी मेहनतसे थैली पाई और ब्राह्मणको देनेमें वार न लगाई ऐसा साहसी और ऐसा दानी जो तू हो सो इस सिंहासनपर बैठ और नहीं तो पातक होगा यहभी मुहूर्त राजाका टूट गया जब दूसरे दिन फिर राजा सिंहासनपर बैठनेको आया तब पुष्पावती–

आठवीं पुतली–

बोली–हे राजा भोज ! तूने जो सिंहासनपर बैठनेका चित्त किया है सो इसकी आशा मनसे छोड़दे राजा बोला–मैं किस तरह छोड़ूं ? तब पुतलीने कथा शुरू की कि, एक दिन राजा वीर विक्रमादित्य अपने दरबारमें बैठाथा उसवख्त सब राजा मुजरेको हाजिर थे कि इतनेमें एक बढ़ईने आकर सलाम किया और कहा महाराज ! मैं आपके दर्शनको आयाहूं और एक घोड़ा आपके लिये लाया हू राजाने आज्ञा की कि ले आ बढ़ईने जो हिकमतका घोडा बनाया था सो नजर किया राजाने घोड़ेको देख उससे पूंछा–कि, इसमें क्या क्या गुण हैं ? बढ़ईने कहा–महाराज ! इसमें ये गुण हैं–कि न यह कुछ खाता है न कुछ पीता है और जहा चाहो वहां ले जाता है दर्याई घोड़ेके बराबर है घोड़ा इस वख्त चालाकीसे एक जगह ठहरता न था कूद फांद रहा था ज्यों ज्यों राजा देखताथा त्यों त्यों रीझताथा आखिर पसंद करके कहा कि इसको इस

मैदानमें फेरकर दिखादो ज्योंही उसनें कोड़ा किया फिर तो गर्दही नजर आतीथी और घोड़ा मालूम न होताथा अब ऐसे गुण घोड़ेमें राजाने देखे, तब दीवानको बुलाकर कहा-कि, एक लाख रुपये इसे दो दीवानने अर्ज की कि, महाराज ! यह काठका घोड़ा और लाख रुपये इनाम मुनासिब नहीं राजाने दो लाख रुपये फरमाया तब उस दीवानने चुपके हवाले कर दिये और अपने दिलमें सोचा जो कुछ और तकरार करूंगा सो और बढ़ेंगे वह बढ़ई रुपये ले अपने घरको गया घोड़ा थानपर बांधा और यह यह कहतेहुये चला गया कि इसपर सवार होते न कोड़ा कीजो, न ऐंड़ मारियो पर किस्मतका लिखा कोई मिटा नहीं सक्ता जो बात हुई चाहती है, सो होतीही है कई दिनके बाद राजाने घोड़ा मँगवाया और अपने मुसाहिबोंसे फरमाया कि कोई तुममेसे सवार होकर इस घोड़ेको फेरे तो हम देखें यह बात सुनकर वे एकेकका मुह देखनें लगे घोड़ेकी चालाकीसे कोई न चढ़ा तब राजा झुँझलाकर बोला-घोड़ेको साज लगाकर तैयार कर लाओ यह बात सुनकर एककी जगह हजार आदमी दौड़े और जल्दी तैयार कर लाए. तब राजा सवार होकर वहां फेरनें लगा कि यह चाहताथा कि आसन जमाकर घोड़ेको अपने काबूमें लावें पर वह रानोंसे निकला जाताथा और पारेकी तरह जगापर ठहरता न था

छलावेकी मानिंद छलछल कर रहाथा राजा खुशीके मारे बद-हैकी बात भूल गया और घोड़ेको कोड़ा दिया चाबुक लगा तेही वो आग बबूला होकर ऐसा चढ़ा कि समुद्रपार लेगया और एक जंगलमें दरख्तके ऊपरसे गिरा आप रानोंसे निकल गया राजाभी दरख्तपरसे लड़खड़ाता हुआ नीचे गिर पड़ा और यह हालत हुई कि मुलकसा हो गया अब कितनी देर लगी तब कुछ उसे होश आया तब अपने दिलमें कहनेही लगा कि, देश, नगर, राज पाट, रैयत और अपने परिवारके ये सब छूटे किस्मत यहां मुझे लेआई देखिये आगे क्या होय ! यह मनमें बिचारकर धीरज बाध उठकर यहांसे आगे चला ऐसे महाब नमें आ पड़ा कि निकलना फिर मुश्किल हुआ पर ज्यों त्यों उस जंगलसे भूला भटका दश दिनमें सातकोस राह चलकर फिर ऐसे एक बनमें आ पहुँचा कि उसमें ऐसा अँधियारा था कि हाथको हाथ न सूझताथा और चारों तरफ शेर, गैंड़े,चित्ते, बल्कि सब परिंदे बोल रहेथे उनकी डरावनी आवाजें सुनकर राजा सहमा जाता था कभी पूर्व, कभी पश्चिम, कभी दक्षिण, कभी उत्तर, भटका भटका फिरता था, पर कहीं राह न मिलतीथी इस तरह दुःख भोगता हुआ पंद्रह दिनके बाद एक तरफ आ निकला यहां एक तमाशा नजर आया कि एक मकान है और उसके बाहर एक बड़ा दरख्त और दो बड़े

हुए थे, उस दरख्तपर एक बंदरिया बैठी थी वो कभी नीचे उत
रती है, और कभी ऊपर चढ़ती है राजा यह कौतुक छिपाहुआ
देखता रहा इतनेमें निगाह उसकी ऊपर गई तो क्या देखता है
कि उस हवेलीपर एक खाजाखाना है अब दरख्तपर चढ़ गया तो
देखा कि वह एक पलंग बिछा है और सब ऐशका असबाब
धरा है तब मनमें कहा अभी जाहिर होना अच्छा नहीं पहिले
यही मालूम करूं कि, कौन यहां आता है और कौन जाता है
जब ठीक दो पहर दिन हुआ तब एक सिद्ध यहां आया और
बाईं तरफ जो कुआ था उसमेंसे उसने एक तूंबा जल निकाला
तब वह बंदरिया निकल आई तब सिद्धने एक चुल्लू पानी
उसपर डाल दिया तो वह खूबसूरत स्त्री होगई और उस
रूपवती स्त्रीसे योगीनें भोग किया जब तीसरा पहर हुवा
तब योगीने दूसरे कुआसे पानी खैंच उसपर छींटा मारा फिर वह
बंदरीकी बंदरी बनगई और दरख्तपर चढ़ी और योगीभी
पहाड़की गुफामें जाकर बैठा और अपना योग करने लगा
इतनेमें राजाने प्रकट हो चतुराई कर बांए कुवेसे जल निकाल
उस बंदरीपर छींटा मारा फिर वह ऐसी सुंदरी नारी हुई कि,
गोया इंद्रके अखाड़ेकी अप्सरा है और राजाको देख लाजसे
मुंह फेर लिया कामके बाण राजाके आन लगे प्रेमकर उसको
अपने पास बिठाया जब उसने आंखें प्यारकी देखीं तब हँस

कर बोली कि, महाराज ! हमारी ओर और दृष्टिसे मत देखो क्यों कि हम तपस्विनी हैं जो हम सरापेंगी तो तुम भस्म हो जाओगे राजा बोला कि, शाप मुझे न लगेगा मै राजा वीर विक्रमादित्य हूं, कोई मेरा क्या कर सक्ता है ? मेरे हुक्ममें ताल बेताल हैं विक्रमका नाम सुनतेही वह राजाके चरणपर गिरपड़ी और कहा महाराज ! तुम तो नरेश हो हमारा उपदेश सुन जल्दी यहांसे जाओ अभी यती आवेगा तो मुझे और तुम्हें दोनोंको शाप देकर जलादेगा तब नरपति बोला– कि, हम यतीके सामने न होंगे, तो हमारा कुछ वह कर न सकेगा पर स्त्रीहत्या लेनी उचित नहीं क्यों कि स्त्रीहत्या लेनेसे आखिरको नरक भोग करना पड़ताहै फिर राजाने कहा कि, उस सिद्धने तुझे कहां पाया ? तब वह बोली कि, कामदेव मेरा बाप है और पुष्पवती मेरी मा है मैंने उनके कुक्षमें अवतार लिया था जब बारह बरसकी मै होगई तब उन्होंने मुझे एक आज्ञा की सो मैंने न मानी इतनेही अपराधसे माता पिताने क्रोधकर मुझे यतीको दे डाला और मुझे वह अपने बश करके इस बनमें ले आया और यहां आकर बंदरी करके रूखपर चढ़ा दिया इस शक्लसे एक बरस गुजरा कि मै इस बनमें पड़ी हूं, सच है कि किसमत्के लिखेको कोई मिटा नहीं सक्ता यह मनमे सोचकर चुपकी हूं तब राजा बोला– मेरा जी

चाहता है कि तुझे अपने घर ले आऊं तब वह बोली— महाराज! यह बात तो मेरेभी दिलमें आती है पर क्योंकर आऊं तुम्हारा नगर तो समुद्रके पार है तब राजाने वचन दिया कि, मै तुझे ले चलूंगा समुद्र लांघनेकी फिक्र अपने मनमें मतकर इस तरह ले आऊंगा कि, तुझे मालूमभी न होगा यों दोनोंने आपसमें बातें कर रैन आनंदसे निकाली और सुबह होतेही राजाने पानी दूसरे कुएसे निकाल उसपर छिड़क दिया कि फिर वह बंदरिया हो कूच दरख्तपर आ चढ़ी और राजाभी वहीं छुप रहा उसी दम योगी आन पहुँचा वही चल योगीने कर छिन्न एक यहां सुखा खुशी की अब चलने लगा तब वह सुंदरी बोली— महाराज! मेरी एक विनती सुनिये कुछ प्रसाद मै आपके पास मागती हूं सो तुम मुझे कृपा कर दीजिये यह सुन योगीने हँसकर एक कमलका फूल उसे दिया और कहा कि एक लाल हररोज इस कमलसे पैदा होगा और कभी न कुम्हलायगा इसे तू अच्छी तरहसे रखना यह सुन कर उसने अपनी चोलीमे रखलिया और दिल उसका खुश हुआ योगी फेर उसे बंदरी बनाके आप चला गया राजाने आकर फेर कुएसे पानी निकालकर उसे नारी बनायी और उसने यह कमलका फूल राजाको दिखाया और कहा कि महाराज! एक अद्भुत चरित्र है कि इसमेसे एक लाल हररोज निकलेगा

यह बात बुद्धियाहर है राजाने कहा अचरज नहीं भगवान्की सब शक्ति है और वह क्या क्या नहीं करता ये बातें कर रात ऐशमें काटी और प्रभात होतेही उस कमलसे एक लाल गिरा दोनोंने यह तमाशा देखा तब राजानें कहा कि, चलले! अब यहां ठहरना उचित नहीं बेहतर यह है कि, मेरे देशको चलो यह बात राजाकी सुनकर वह बोली-सुनो महाराज! एक मेरी अधीनी मैं पांव पड़कर जो आपको कहतीहूं सो सुनो महाराज! आप बड़े दानी हो ऐसा दानी मैंने आजतक नहीं सुना ऐसा नहीं कि, किसीको मुझे दान करदो मैं दासी होकर आपकी हरवस्त सेवा करूंगी तब राजा बोला-कि, यह नहीं होसका कि, कोई अपनी नारी परपुरुषको देय यह काम तो धर्मविरुद्ध है और लोकविरुद्ध है इस तरह उसकी खातिर जमा कर दोनों वीरोंको बुलाया वे आकर हाजिर हुए. उन्होंसे कहा कि जल्दी हमारे देशको ले चलो वे वीर उन दोनोंको तखतपर बिठा हवाकी तरह ले कर उड़े, वे तो यों अपने शहरकी तरफ गये और योगी जो वहां आया और उस सुंदरीको न पाया तब पछता पछता मनमार मुरझाय रहा निदान राजा अपने नगरके पास आया और सिंहासनसे उतर उस राजकन्याका हाथ पकड़ शहरको लेचला रास्तेमें देखा उसने कि, किसीका एक खूबसूरत लड़का दरवाजेपर खड़ा रहा है राजमहिषीके हाथमें

कमलका फूल देखकर वह लड़का रोनें लगा और विकल विकल बोला कि, मैं यह फूल लूंगा तब राजानें कमल रानीके हाथसे ले लड़केको दिया लड़का फूल ले हँसता हुआ अपने घरमें गया राजाभी अपने मंदिरमें आ बिराजमान हुआ जब सुबह हुआ तब उस कमलके फूलमेसे एक लाल गिरा लड़केके बापने उसे देख उठा लिया और कमलको छिपा रक्खा इसी रंगमें हररोज लाल निकलने लगे कि एक दिन कितनेक लाल वह लेकर बजारमें बेंचनेको गया यह खबर कोतवालको हुई तब कोतवालनें उसे पकड़वा मँगवाया और पूंछा कि तू बनिया है और तूने इतने लाल कहां पाये ? तब वो कहने लगा कि, ये हमारेही घरके हैं पर उसकी बात न सुन उसे बहुतसी सियासत कर लाल लेकर राजाके पास आया और सब यह अहवाल बताया तब राजाने कहा कि उसको मिलादो और उसे पूछा कि, तूने ये लाल कहां पाये ? और राजाने उसे कहा कि जो तू सच मुझसे कहेगा तो मैं तुझे और भी दौलत दूंगा और झूंठ कहेगा तो देशसे निकाल दूंगा उसने अर्ज की सुनो भूपाल ! द्वार खेलता था मेरा बाल उसके हाथमें कोई कमलका फूल देगया और उसने आन मुझे दिया मैंने रातभर उसे अपने पास रखलिया सुबह होतेही उसमेसे एक लाल गिरा और अब हररोज एक एक लाल योंही निकलता है और

भसमी यह फूल मेरे घरमे है राजानें कहा यह तो तूने सब अच्छी बातें कहीं अब तू ये लाख लेकर अपने घरको जा और कोतवालने बहुत बुरा काम किया जो बेतकसीर तुझे पकड़ लाया इससे न्याय अब यह है कि, लाख रुपये कोतवाल तुझे दंड दे यह कह कोतवालसे लाख रुपये दिलाये और उसे घरको भेज दिया ये बातें कह फिर पुतली बोली–सुन राजा भोज! वीर विक्रमादित्यके गुण और धर्म तू मूर्ख है कुछ उसकी हकीकत नहीं जानता ऐसे राजाको तू अपने आगे हीनकर मानता है और अपने ताईं मनमे तू अधिक समझता है ये बातें पुतलीसे सुन राजा उस दिन योंही अछता पछता रहगया यह सामतभी जाती रही सुबहको दूसरे दिन राजा सिंहासनके पास खड़ा हुआ और पुतलीसे पूंछने लगा कि, तू खुश तो है? तुम्हारे मुहसे कथा सुनकर मुझे निहायत खुशी पैदा होती है तब मधुमालती—

नवमी पुतली–

बोली– सुन राजा भोज! यहां बैठकर मै एक दिनकी कथा राजा वीर विक्रमादित्यकी कहतीहूं एक दिन राजानें होम करनेका आरंभ किया जहांतक देशके ब्राह्मण थे उन्होंको नौता भेज बुलाया और जितने उसके देशके राजा और साहूकार

थे वे भी हाजिर हुए. भाट, भिखारी, भिक्षुक सुनकर सब धाय धाय आए और देश देशके राजा अपने सब छोगोंको ले ले आये और जितने देवता थे वे भी सबके सब आवे राजा अपने सिंहासनपर बैठा यज्ञ होने लगी कि एक बूढ़ा ब्राह्मण उस समय आया राजा अपने यज्ञके मंत्र पढ़ता था ब्राह्मणको दूरसे देखके मनमेंही दंडवत की, उस पंडितको आगम विद्यासे मालूम होगया इसवास्ते हाथ बढ़ाकर राजाको आसीस दी कि, चिरंजीव हो अब राजाने मंत्रसे फुर्सत पाई तब उस ब्राह्मणसे कहा कि महाराज! आपने बहुत मंद काम किया कि, बिना प्रणाम मुझे आशीर्वाद दिया "जबतक पांव न लागे कोई यह आसीस पापसम होई" तब ब्राह्मणने कहा राजा! जब तूने अपने मनमें दंडवत की तबही मैंनें आसीस दी यह बात सुन राजानें लाख रुपये ब्राह्मणको दिये तब ब्राह्मण हँसकर कहने लगा कि, महाराज! इतने रुपयोंमें मेरा निर्वाह न होयेगा ऐसा कुछ विचार कर दीजिये कि जिसमें मेरा काम हो तब राजाने पांच लाख रुपये उसे दिये वह लेकर अपने घरको गया और जो जो ब्राह्मण उस यज्ञमें थे उनकोभी बहुत कुछ दिया इसवास्ते राजा भोज! मैंने तेरे आगे यह बात कही कि तू सिंहासनपर बैठनेके योग्य नहीं सिंहकी बराबरी स्यार

नहीं कर सकता और हंसकी बराबरी कौवेसे नहीं होसकी और बंदरके गलेमें मोतीकी माला नहीं शोभती और गधे-पर पाखर नहीं फबती इसवास्ते मेरा कहा तू मान और इस खयालसे दर गुजर; नहीं तो नाहक किसीदिन तेरा प्राण जायगा यह बात सुनकर राजा चुप रहा और यह दिनभी गुजर गया जब रात हुई अंदेशा कर सुबहको बदस्तूर सिंहा-सनके पास आया और चाहा कि पाव धरे; तब प्रेमावती–

दशवीं पुतली–

हँसकर बोली–हे राजा भोज! पहले तुम मुझसे यह बात सुनलो पीछे इस सिंहासनपर बैठो तब राजा बोला–तू कया कह मेरा जीभी सुननेको चाहता है राजा यहां आसन बिछाय बैठ गया और पुतली कहने लगी–सुन राजा! एक दिन बसंत ऋतुमें टेसू फूला हुआ था मोर मोराया हुआ कोयल कूक रहीथी हवा चलरहीथी राजा वीर विक्रमादित्य अपने बागमें बैठा हुआ हिंडोल झुलवाया इसमें एक वियोगी किसी देशसे भूला भटका आ निकला राजाके पांवपर गिरपड़ा और कहने लगा कि स्वामी! मैंने बहुत दुःख पाया और अब मैं आपकी शरण आया हूं और उसकी यह सूरत बनगई थी कि तमाम छोड़ बदनका सूख गया था और आखसे कम सूझता था, अन्नपानी सब छोड़ दियाथा किसी तरह धीरज

नहीं धरता था राजा ज्यों ज्यों समझाता था त्यों त्यों वह विरहसे व्याकुल हो हो रोता था तब राजाने कहा तू अपने जीको सँभाल और इतना दुःखी क्यों है ? और अब जो यहां आया है तो आपनी कथा कह दे कि किसकारण ऐसी गति हुई है ? और किसके गमसे तेरी यह शकल बन गई है ! तू किस देशसे आया है और क्या तेरा नाम है ? वह एक आह सर्द दिल पुर दर्दसे खैंचकर बोला नगर कलंजर देश है मेरा मैं मतिहीन और दुर्बुद्धि हूं एक यतीनें मेरे आगे यह बात कहीथी कि एक खूब सूरत स्त्री एक जगह है वैसी सुंदरी कोई जगहमें नहीं गोया कामदेवसे पैदा हुई है बल्कि तीनों लोकमे वैसी न होगी और लाखों राजा जी लगा उसके यहां आते हैं और जल जल जाते हैं पर उसे नहीं पाते राजानें कहा किसलिये वे जलते हैं ? तब वह हकीकत कहने लगा कि, उसके बापने वहां एक आग भड़काई है और एक कड़ाह भर घी चढाकर रक्खा है वह घी पड़ा खौलता है और यह उसकी शर्त है कि जो उस कड़ाहमें स्नानकर जीता बच निकले उससे कन्याकी सादी करूंगा यह बात उस योगीसे सुनकर मैं भी वहां गया था सो मैंनें अपनी आखोंसे यह तमाशा देख हैरान हुआ और वहां हजारों राजे देश देशके लाखों नौकर, चाकर, साथ लेकर

आते हैं और यह देख पछताकर जाते हैं उनमेंसे जो इरादः कर्ता है सो उस कड़ाहमें गिरकर भुन जाता है जब शक्ल उस राजकन्याकी नजर आई सब सुध बुध मैंने गँवा अपनी हालत यह उसके इश्कमें बनाई है यह बात उसके मुखसे सुनकर राजाने कहा आज तुम यहांही रहो कल तुम हम मिलकर वहां चलेंगे और उसे तुम्हें दिला देंगे अपनी खातिर जमा रक्खो यह राजाकी बात सुन उसको समाधान हुआ ये देख राजाने उसे स्नान करवा कुछ खिलया अपनी सभामें बैठाकर यह हुकुम किया कि जितने संगीतविद्यावाले हैं सो सब तैयार होहो आज यहां आकर हाजिर होवें और अपना अपना मुजरा बतलावें राजाकी यह आज्ञा पायके सब आन हाजिर हुए. और अपना अपना गुण जाहिर करने लगे राजाने उससे कहा कि, इन्होंमेंसे जिस रंडीको तुम चाहो उसे हम तुम्हें देंगे तुम यहां बैठकर सुख भोग करो और उसका खयाल दिलसे भुलादो यह बात राजाकी सुनकर वह वियोगी बोला महाराज! सिंह अगर सात दिन उपवास करै तौभी घास न चरे सिवाय उसके मुझे किसी औरकी इच्छा नहीं इसी तरह तमाम रात बीत गई जब सुबह हुआ तब राजाने स्नान पूजा कर उन बीरोंको याद किया व तुर्तही आन हाजिर हुए और अर्ज किया कि महाराज! हमको क्या हुकुम है? हम

किस देशको तुम्हे लेचलें ? तब राजा बोला जहां यह प्रेमी कहे उसने कहा महाराज ! कन्याके नगरमे ले चलो जिस जगह वह घीका कड़ाह खौल रहा है, और सारा आलम वहां जमा है उसी देशको ले चलो राजाने तखतपर उसकोभी बिठला दिया और अगिया कोयला दोनो बीरोंको हुकुम किया कि, उसी देशमें ले चलो बीर यह सुनतेही ले उड़े और एक दमसे सिंहासन उसी जगह जाकर रखदिया राजाने वहां जाकर देखा तो बाजन बजरहे हैं और मंगलाचार हो रहा है वह राजकन्या हाथमे फूलोंकी माला लिये फिरती है और राजपुत्र वहां उसके लिये कामना करके जो गये हैं सो सब वहां खड़े हैं लेकिन हिआव किसीका यह नहीं पड़ता जो उस कड़ाहमें कूदे और जो कोई जानपर खेलकर कूदता है सो जल जाता है, राजाने जब उस कन्याके पास जाकर देखा उसके रूपको तो मोहित होरहा और कहा कि जिस कोखसे यह कन्या पैदा हुई है धन्य है उस कोखको आदमीकी तो जान क्या है ! इसे देवता देखें तोभी बेसुध हो जायें इतनी बात राजाने कहकर बीरोंको कहा कि हम इस कड़ाहमें कूदते हैं इस वास्ते तुम खबरदार रहना तब बीर बोले महाराज ! तुम निश्चिंताईसे कूदिये और किसी बातकी खौफ न कीजिये इतनी बात कह राजा कड़ाहके पास जा झड़ाकसे कूद पड़ा,

कूदतेही जलके राख हो गया वैतालने देखा और तुरत अमृत ले आया और राजाके ऊपर डाला अमृत पड़तेही राजा राम राम करके खड़ा हो गया और जितने ब्राह्मण वहां थे सो सब जयजयकार करनें लगे वहां जो राजकन्या थी उसने आतेही फूलोंका हार राजाके गलेमें डाल दिया यह जयमाला जब राजको पहना दी तब सब लोग अचंभेमें रहगये कि, यह राजा कोई अजब तरहका आया है जो जल गया फिर जीता उठा यह काम मनुष्यका नहीं यह कोई देवता है जिसने ऐसा काम किया राजाकी नीयत पूरी है तब उस कन्याके व्याहकी तैयारी हुई राजाके मुल्कके जितने लोग वहां हाजिर थे वे सब खुश हुए. और मंदिरमेंभी रानियां मंगलाचार करनें लगी इस तरह राजासे शादी कर दहेजमें जवाहिर, जोड़े, घोड़े, हाथी, पालकी और तमाम माल असबाब कई करोड़का दिया यह देकर आधा राज संकल्प कर दिया और दास दासी भी बहुतसे दिये तब यह विरही जो इसके साथ था सो देख देख बहुत खुश हुआ जब ये सब दे ले चुके तब राजानें विदा मांगी उस राजानें सब असबाब और माल उस व्याही हुई दुलहिन समेत साथ उसके कर रुखसत किया और कहा अपने देशको तुम जाओ और हमपर दया माया राखियो हमारा मुख इसलाइक नहीं कि तुम्हारी कुछ तारीफ करें

जैसा साहस तुमने किया वैसा न हमनें आंखोंसे देखा न कानोंसें सुना इस कलियुगमें तुम कोई अवतार हो एक जबानसे हम कहां तलक तुम्हारी सिफत करसकें? एक सिर है हमारा हम तुम्हे क्या चढ़ावें? तुम्हारे पराक्रमपर करोड़ों शिर सदके हैं जो नियत हमने कीयी सो तुमने पूरीकी, इसका भरोसा हमे न था कि यह इरादः हमारा पूरा होगा राजकन्या हाथ जोड़कर राजासे कहने लगी–महाराज! मेरा यह महादुःख आपने छुड़ाया नही तो मेरे बापने ऐसा पाप किया था कि आपतो नरक भोग करता और मै सारी उमरभरही अन ब्याही रहजाती इतनी कथा कह प्रेमावती पुतली बोली कि सुन राजा भोज! ऐसा पराक्रम करके उस कन्याको लाया और उस बिरहीको इसे देते बार न लाया राजकन्या और सब माल असबाब बिरहीको दे दिया और आप खाली हाथोंसे अपने मंदिरमें आ दाखिल हुआ और तू विद्यार्थी है एसा साहस तुझसे न होसकेगा यह सुनकर राजाने हैरान होकर शिर नीचे कर लिया यह साअतभी इसी तरह गुजरी फिर दूसरे दिन राजा भोज जब सिंहासनके पास आया और चाहा कि बैठें तब पद्मावती–

ग्यारहवीं पुतली–

बोली–कि हे राजा भोज! पहले मुझसे कथा सुनले पीछे

इस सिंहासनपर पांव दे एक दिन राजा वीरविक्रमादित्य उज्जैन नाम नगरीको गया और अपने सब आदमियोंको विदा कर आप वहां रातको रहा सोता था कि उत्तर दिशाकी ओरसे एक रंडी हाय मार उठी और पुकार पुकार कहने लगी कि कोई ऐसा है कि मेरी आकर खबर ले इस पापीसे मुझे बचावे और जीवदान दे दममें मरी मरी पुकारती थी और दम चुप हो जाती थी उसकी आवाज सुनकर राजा चौंक पड़ा और ढाल तलवार हाथमे ले अँधेरी रातमें अकेला उठ चला किसीको खबर न हुई जब वनमे राजा पैठा वह सुंदरी फिर रो रो पुकार उठी कि राजा वहां जा पहुँचा और देखा कि वहां एक देव उस स्त्रीसे रति मांगता है और वह नहीं मानती, तब शिरके बाल पकड़ पकड़कर जमीनपर दे दे पटकता है तब राजानें कहा अब पापी! तू इस स्त्रीको क्यों मारता है? नरकसेभी नहीं डरता? राजाकी बात सुनकर फिर वह उसे मारने लगा राजानें कहा तू इसे छोड़दे नहीं तो अभी मैं तुझे मारताहूं यह राजा विक्रमका वचन सुनकर वह सन्मुख होगया और गुस्सेसे होक कर बोला या तू भाग? नही मैं तुझ खाताहूं? और तू कौन है? जो यहां आनकर बात करता है? तब राजानें गजबमें आकर एक तलवार ऐसी मारी कि, शिर उसका

धड़से जुदा होगया- रुंड मुंडसे दो बीर निकले और राजाके दोनो हाथोंमें छिपट गये तब राजानें धीरज धर छल बलकर उनमेसे एकको मारा दूसरा रैन भर लड़ता रहा और भोर होतेही भाग गया दैत्य जब भाग गया तब उस रंडीसे राजानें कहा अब तू जल्दी मेरे साथ चल और कुछ जीमें अंदेसा मतकर वह राक्षस मेरे डरसे भाग गया फिर न आयेगा तब वह सुंदरी बोली कि, सुनो भूपाल जो मै सात द्वीप नौखंड पृथ्वीमे जहां भागकर छिप रहूंगी उससे बचनें न पाऊंगी वह आकर ले आयगा उसके बिना मरे जिंदगी न होगी उसके पास एक मोहनी पुतली है वह उसके पेटमें रहती है जहां मै छिपूंगी उसके बलसे वह ढूंढ निकालेगा और उस पुतलीमें यह ताकत है कि एक देव मरनेसे दूसरे चार देव बना सकती है यह बात उसकी सुनकर राजा उसी बनमें छिप रहा सुबह होते वह देव आया उस औरतसे फिर ख्वाहिश करनें लगा जब उसने न माना और बाल शिरके पकड़ जमीनपर पटकने लगा तब वह धाड़ करनें लगी उसकी आवाज सुनतेही राजा निकट आया और उससे लड़नेको तैयार हुआ तब देवभी रंडीको छोड़ राजाके सामनें होगया चाहे कि राजाको मारें इतनेमें राजानें ऐसा एक खांडा मारा कि, धड़से शिर अलग होगया उसके धड़से वह मोहनी निकली और अमृत

लेने चली, तब राजानें वीरोको आज्ञाकी कि यह कहीं जानें न पावे सब वीरोनें दौड़कर उसकी चोली पकड़ खेंच लिया और राजाके सामनें लाकर हाजिर किया राजानें उससे पूंछा कि तू चंपा- वरनी, मृगनयनी, गजगामिनी, कटिकेसरी, चंद्रमुखी, नख शिखसे ऐसी कि, हँसीसे तेरी फूल झड़ते हैं और सुगंधसे भौंरे मड़लाते हैं बतला कि देवके पेटमें क्योंकर रहीथी? तब यह बोली, सुन राजा! पहले मै शिवगण थी पर एक आज्ञा शिवजीकी मै चूक गई तिससे उन्होंने मुझे शाप दिया और मै मोहिनीरूप होगई और इस दैत्यनें महादेवकी बहुत तपस्या की, तब सदाशिवनें मेरे तई उसको बकसीस दिया फिर उस पापी- नें मुझे लेकर अपनें पेटमें भर रक्खा तबसे मै मोहिनी कहलाई पर शिवकी आज्ञा थी कि इसकी सेवा कीजियो और जो यह कहै सो मानियो यों इसके वश होकर मैं रहतीहूं मेरा माजरा जो था सो मैनें आपसे कहा अब ये वीर मुझे काबू कर तुम्हारे पास लाये हैं और आदमीको इतनी कुदरत नहीं थी बल्कि जो तुमभी बहुतेरा उपाय करते तोभी तुम्हारे हाथ न आती अब राजा! मै तुम्हारे बसमें हूं और मै मोहनी हूं इसवास्ते तेरेपास रहूंगी, ज्यों महादेवके पास पारवती यह कहकर बचन दिया एक यह मोहनी और दूसरी वह रंडी जिसे देवसे छुड़ाया था ये दोनो राजाके साथ हुईं ये बातें कर पद्मावती पुतली

बोली सुन राजा भोज! उस मोहनीसे राजा विक्रमादित्यनें गांधर्व विवाह किया और जो कुछ आगे राजाके पराक्रम हैं सो मै कहती हूं सुन कान देकर यह रंडी दैत्यसे जो लीथी उसे राजाने यों कहा सुन सुंदरी! मै तुझे पूछताहूं कि देयने तुझे कहां पाया था? कौन द्वीप और कौन नगर तेरा! और कौन बाप है तेरा! नाम ले उसका अपना सब ब्यौरा मुझसे कह और सब बातें सुर्त बताय! अब देर मतकर सुनकर तेरी अवस्था जैसा तू कहेगी वैसाही मै विचार करूंगा यह नारी बोली—महाराज! अब मेरी कथा सुनो, कि किस्मतका लिखा मिटता नहीं है और जो कुछ विधातानें कपालमे लिखा है वह इन्सानको भुगतना होता है एक ब्रह्मपुरी है समुद्रके पास जिसे सिंहलद्वीप कहते हैं वहांके ब्राह्मणकी मै बेटी हूं एक दिन अपनी सखियोंके संग तालावपर स्नान करनेको गई थी और वह तालाव ऐसा था कि, घने घने दरख्तोंसे सूर्य वहां नजर न आता था वहां सखियोंके साथ मै स्नान पूजा करके घरको आतीथी कि सामनसे यह राक्षस नजर आया और मुझे देखकर वहांही रति मांगने लगा ज्यों ज्यों मै न मानती थी त्यों त्यों मुझ बहुत दुःख देता था मै अनब्याही अपना धर्म क्यों कर गँवाती कितने दिनोंस मुझ सताया और नरकमें पडनेस डरता न था राजा! अब तूने धर्म रखलिया, और

मेरे कुलकीभी लाज रक्खी तुझे संसारमें यश और कीर्ति होवेगी जैसा तूने मुझपर उपकार किया, वैसाही मुझसे आसीसले हजार बरसतक जीता रह और किसीके बश न पड़ दिन दिन सत और तेज बढ़ते जायगा साहस तेरा ऐसा होवेगा कि तुझे कोई न जीते इतनी आसीस जब वह दे चुकी तब उसे बेटी कह राजाने अपने पास तखतपर बिठा लिया और मोहनीकोभी उठा बेतालको हुकुम किया कि हमारे नगरको लेचलो तब बेताल सबको लेकर चले, पलक मारते महलमें ला दाखिल किया राजाने आतेही दीवानको याद किया वह मंत्री आकार हाजिर हुआ राजाने कहा कोई पंडित सुज्ञानी ब्राह्मण ढूंढकर लेआओ जलदी प्रधानने आज्ञा पाय नगर नगर ब्राह्मणोंको भेज एक ब्राह्मण सुंदर विद्वानको बुलाया मार्कंडेय नाम वह ब्राह्मण जब आया तब उसे ले मंत्री राज-सभामें लाया राजाने उससे हाथ जोड़कर कहा कि महाराज! एक ब्राह्मणकी कन्या हमारे यहां है उससे हम तुमको दिया चाहतेहैं तुमभी यह बात कबूल करो ब्राह्मण बोला, यह कन्या हमको दो और जगतमे तुम यश, धर्म और बड़ाई लो राजानें यह बात सुनतेही ब्राह्मणको तिलक दे सादीके सामानका दान दहेज तैयार किया फिर ब्राह्मण बुलाकर संकल्प कर उस कन्याका कन्यादान किया और उसको बहुत कुछ दिया

बोली सुन राजा भोज! उस मोहनीसे राजा विक्रमादित्यने गांधर्व बिवाह किया और जो कुछ आगे राजाके पराक्रम हैं सो मैं कहती हूं सुन कान देकर यह रंडी दैत्यसे जो लीमी उसे राजाने यों कहा सुन सुंदरी! मैं तुझे पूछताहूं कि दैत्यने तुझे कहां पाया था? कौन द्वीप और कौन नगर तेरा? और कौन बाप है तेरा? नाम ले उसका अपना सब ब्यौरा मुझसे कह और सब बातें मुझे बताव! अब देर मतकर सुनकर तेरी अवस्था जैसा तू कहेगी वैसाही मैं विचार करूंगा यह नारी बोली—महाराज! अब मेरी कथा सुनो कि किस्मतका लिखा मिटता नहीं है और जो कुछ विधाताने कपालमें लिखा है वह इन्सानको भुगतना होता है एक ब्रह्मपुरी है समुद्रके पास जिसे सिंहलद्वीप कहते हैं वहांके ब्राह्मणकी मैं बेटी हूं एक दिन अपनी सखियोंके संग तालाबपर स्नान करनेको गई थी और वह तालाब ऐसा था कि, घने घने दरख्तोंसे सूर्य वहां नजर न आता था वहां सखियोंके साथ मैं स्नान पूजा करके घरको आतीथी कि सामनेसे यह राक्षस नजर आया और मुझे देखकर वहांही रति मांगने लगा ज्यों ज्यों मैं न मानती थी त्यों त्यों मुझे बहुत दुःख देता था मैं अनब्याही अपना धर्म क्यों कर गँवाती कितने दिनोंसे मुझे सताया और नरकमें पड़नेसे डरता न था राजा! अब तूने धर्म रखलिया, और

औरभी बहुत कुछ दान करता है और ऐसा राजा धर्मात्मा उसके सिवाय दूसरा हमने नहीं देखा यह बात सुनकर राजाके जीमे इच्छा हुई कि, उस राजाको चलकर देखिये यों अपनें जीमे विचारकर बेतालोंको बुला तख्तपर सवारहो समुद्रके किनारे चला और जो उसके नगरके पास पहुँचा, सिंहासनसे उतर बेतालोंको कहा कि, अब तुम देशको जाओ और हम इस राजाकी सेवा करनेपर तैयार हुए तुम यहांसे हमारी खबर लेते रहियो तब बेताल बोला--इसका विचार क्या है? राजाने कहा तुम्हें इस बातसे क्या काम है? जो हम तुम्हे कहते हैं सो करो यह बात सुनकर बेताल अपनें नगरको आये और राजा पाओं पाओंसे शहरमें दाखिल हुया नगरमे फिरता हुआ राजाके द्वारपर जाकर पहुँचा और द्वारपालोंसे कहा अपने स्वामीको समाचार दो कि कोई विदेशी तुम्हारी सेवा करनेके लिये खड़ा है इसकी बात डेवढ़ीदारोंनें सुनकर राजासे अर्ज की, महाराज सुनतेही हँसता हुआ आपही बाहर निकल आया राजाको देखकर विक्रमने जुहार किया तब उसने पूंछा कि क्षेम कुशलसे हो? तब विक्रम बोला कि आपकी दयासे फिर राजाने कहा तुम किस देशसे आये हो? और तुम्हारा नाम क्या है? और तुम्हारा अर्थ क्या है? सो सब सुनाओ? यह बोला सुनो महाराज! मेरा नाम विक्रम है, राजा विक्रमके

इतनी बात कह कर पुतली कहने लगी कि सुन राजा! वीर विक्रमादित्यने सोच कुछ न किया और लाखों रुपयोंका दान दहेज दे एक पलमें ब्राह्मणके हवाले किया तू इस लायक नहीं है इस सिंहासनपर बैठनेसे डर ये राजा भोज! तू गुण- ग्राहक है दानी और साहसी नहीं, तू नाहक हिर्स कर्ता है! यह सुनकर राजा भोज मनमें पछताकर चुप हो, रहगया दूसरे दिन सुबह होतेही फिर सिंहासनके पास आया और बैठनेको तैयार हुआ जब उसने पांव बढ़ाया तब कीर्तिवती-

बारहवीं पुतली—

बोली— सुन राजा भोज! एक दिन राजा वीरविक्रमादित्य अपनी मजलिसमें बैठकर कहने लगा कि, कलियुगमें औरभी कहीं कोई दाता है ऐसी बात सुनतेही एक ब्राह्मण बोला कि, सुन राजा! प्रजाके हितकारी तेरे बराबर साहसी और दानी कोई नहीं पर एक बात मैं कहना चाहताहूं शर्मसे कह नहीं सक्ता राजानें कहा कि सत्य बात कहनेमे लाज काहेकी है! तुम हमारे आगे साफ कहो! हम उस बातको बुरा न मानेंगे यह ब्राह्मण बोला, एक राजा समुद्रके किनारे रहता है और सदा धर्मकार्य कर्ता है जब वह सवेरे स्नान किया चाहता है तब लाख रुपये दान देता है और जल पीता है यह तो मैंने एक उसके दानकी रीत कही

औरभी बहुत कुछ दान करता है और ऐसा राजा धर्मात्मा उसके सिवाय दूसरा हमने नहीं देखा यह बात सुनकर राजाके जीमे इच्छा हुई कि, उस राजाको चलकर देखिये यों अपने जीमे विचारकर बेतालोंको बुला तखतपर सवारहो समुद्रके किनारे चला और जो उसके नगरके पास पहुँचा, सिंहासनसे उतर बेतालोंको कहा कि, अब तुम देशको जाओ और हम इस राजाकी सेवा करनेपर तैयार हुए. तुम यहांसे हमारी खबर लेते रहियो तब बेताल बोला–इसका विचार क्या है? राजाने कहा तुम्हें इस बातसे क्या काम है! जो हम तुम्हे कहते हैं सो करो यह बात सुनकर बेताल अपने नगरको आये और राजा पावों पावोंसे शहरमें दाखिल हुवा नगरमे फिरता हुआ राजाके द्वारपर जाकर पहुँचा और द्वारपालोंसे कहा अपने स्वामीको समाचार दो कि कोई विदेशी तुम्हारी सेवा करनेके लिये खड़ा है इसकी बात डेवढ़ीवारोंनें सुनकर राजासे अर्ज की, महाराज सुनतेही हँसता हुआ आपही बाहर निकल आया राजाको देखकर विक्रमने जुहार किया तब उसने पूछा कि क्षेम कुशलसे हो! तब विक्रम बोला कि आपकी दयासे फिर राजाने कहा तुम किस देशसे आये हो? और तुम्हारा नाम क्या है! और तुम्हारा मर्म क्या है! सो सब सुनाओ! यह बोला सुनो महाराज! मेरा नाम विक्रम है, राजा विक्रमके

देशका मै रहनेवाला हूं कुछ वैराग्य मेरे जीमें हुआ इससें मै आपके दर्शनको आयाहूं अब आपका दर्शन मैने किया इसीसे सब मेरा सोच बिचार गया राजा बोला तुम्हे हम क्या रोज करदें और कितनेमे तुम्हारा निर्वाह होगा तब इसने कहा चार हजार रुपयेमे मेरी गुजरान होगी यह सुनकर राजाने कहा ऐसा क्या काम करतेहो जो चार हजार रुपये रोजीना हम तुम्हे देवें ? वह बोला जो काम हमसे कहोगे हम वह करेंगे फिर विक्रम बोला जिस राजाके पास मै रहता हूं उसकी गाढी भीडमें काम आता हूं और इस तरेसे चार हजार रुपये लेकर राजा वहां रहने लगा यह बात पुतलीने समझा राजा भोजसे कहा अब इस तरहसे नौदस दिन गुजर गये तब राजा वीरविक्रमादित्यनें अपने मनमें विचारा कि, जो लाख रुपये रोज दान करता है उसका नित्यनेम क्या है ? इसे मालूम किया चाहिये किस देवताका इसे मढ है ? इसी सोचमें रहने लगा एक दिन क्या देखता है कि, दोपहर रातके समय राजा अकेला वनको जाता है यह देखतेही उसके पीछे होलिया आगे आगे राजा और पीछे पीछे विक्रमादित्य इस तरेसे शहरके बाहर निकल एक वनमें पहुँचे यहां जाकर देखा तो एक देवीका मंदिर है और उस मदिरके बाहर कढाह चढा है और उसमें अग्नकी आगसे घी औटता है यह राजा तालावमे

स्नान करके देवीका दर्शन कर उस कढ़ाहमें कूद पड़ा और पड़तेही भून गया वहां चौसठ योगिनियां आनके राजाके उस तले हुए बदनको नोचकर खागईं इतनेमें कंकालिन अमृत ले आई और उसके हाड़पंजरपर छिड़का तब वह राजा राम राम करके उठकर खड़ा हुवा तब देवीने मंदिरमें लाख रुपये दिये और वह लेकर अपने घरको आया तब योगिनिया अपने धामको गईं यह तमाशा देखकर राजा विक्रमादित्यभी उसी कढ़ाहमें कूद पड़ा और उसी तरह जल गया फिर तुर्त योगिनियां दौड़ीं और उसकोभी खागईं और उसी तरह कंकालिनने अमृत ला उसपरभी छिड़क जिला दिया मंदिरमेंसे उसेभी लाख रुपये देवीनें दिये रुपये ले दुबारा फिर यह कढ़ाहमें गिरा योगिनियां फिर जला भूना गोस्त बदनका नोचकर खागईं और कंकालिननें अमृत छिड़क जिलादिया फिर देवीने लाख रुपये दिये गरज वह इसी तौर सातवेर गिरा और लाख लाख रुपये हरबेर पाया जब आठवीं दफह इरादः गिरनेका किया तब देवीने आनकर उसका कर पकड़ा और कहा कि मांग जो तुझे चाहिये? तब राजा विक्रम हाथ जोड़कर बोला कि, मैं मांगूं जो मांगा पाऊं? देवीने कहा जो तेरी इच्छामें आये सो तू मांगले मैं तुझे दूंगी राजानें कहा देवी! जिस थैलीमेंसे तुमने रुपये दिये हैं वह थैली मुझे

कृपा कर दीजिये यह सुनतेही उसने वह थैली दी वह खुश हो उसी राजाके स्थानपर गया और दूसरे दिन रातको फिर वह राजा वनमें गया और वहां उसने देखा कि न देवीका मंदिर है और न कड़ाह है स्थान भंग पड़ा है यह दशा वहांकी देख सोचमें डूब गया फिर जो होश आया तो हाय मारके रोने लगा आखिरको लाचार हो उलटा फिर अपने मंदिरको आय उदास होकर सोरहा भोर हुआ जो सभाके लोग आये और राजाको देखा कि, बिहाल पड़ा है न हँसता है, न किसीसे बोलता है, बल्कि जो कोई राजकी बात करता है, वह सुन कर मुंह फेर लेता है यह हालत राजाकी देख दिवानने विनती किया कि, महाराज! आपका मन मलीन होनेसे सारी सभा उदास होरही है राजाने यह जवाब दिया कि आज तुम बैठकर दरबारका काम करो मेरा शरीर माँदा है सब प्रधान बैठ राजकाजकी बातें करने लगा और जो कोई आताथा सो अपने मनमें जो चाहताथा सोई विचारताथा कोई कहता था कि राजा बीमार हो गया है कोई कहता कि राजाको कोई मोह गया है और कोई कहताथा कि राजा है नहीं पर जो इसकी अवस्था थी सो किसीको मालूम न थी इतनेमें अपने समयपर राजा वीर विक्रमादित्यभी गया और पूछा कि तुम्हारे मनमें क्या दुःख है? क्यों कि मैने

तुमसे प्रतिज्ञा की थी कि, मै तुम्हारी मुश्किलसे वख्त काम आऊंगा सो मेरा वचन क्या आप भूल गये ! मेरे आगे अपनी सब अवस्था ब्योरेवार कहिये तब राजा बोला कि, मै तेरे आगे क्या अपनी बात कहूं पर एक मेरे जीमे है कि अब अपना प्राणघात करूंगा विक्रमनें कहा पृथ्वीनाथ ! एक वेर मेरे आगे अपनें मनकी व्यथा कहिये और पीछे अपनें मनमें जो करना होय सो करो राजानें कहा एक देवी मेरे पास थी सो मै नहीं जानता वह कहां गई लाख रुपये रोज यह मुझे देतीथी और वे लाख रुपये मै नित्य दान पुण्य करताथा और अब मुझे बड़ा कष्ट हुवा है मेरी नित्यक्रिया निबहेगी नहीं इसवास्ते अब मै जान दूंगा और ऐसा मै किसीको नहीं देखता कि जिससे मेरा नित्य नेम चले और जो धर्म पुण्य न रहेगा तो मेरा जीना संसारमें अकारण है यह बात उसकी विक्रम सुनतेही बोला ऐसा काम मै करूंगा ऐसा बोलकर यह थैली हाथमे दी और कहा महाराज! स्नान ध्यान कर नित्यधर्म कीजिये और थैलीसे जितनें रुपये चाहोगे वे खर्च करोगे कम कमी न होंगे यह बात सुनतेही राजा खुश होकर उठ बैठा और थैली हाथमे ले प्रधानको बुला उसमेसे रुपये निकाल प्रधानको दिये और खर्च करनेका हुकुम किया और कहा कि जितन ब्राह्मण

सदा दान पाते हैं उन्होंको उसी तरहसे दो दिवान मुवाफिक हुक्मके अपने काममें मशगूल हुआ और राजा वीर विक्रमादित्यनें कहा महाराज! मुझे आज्ञा दीजिये तो मैं अपनें देशको जाऊं! बहुत दिन गुजरे हैं तब वह राजा बोला हम तुम्हारे कहां तक गुण मानेंगे तुमनें हमें जीवदान दिया है फिर कहा जो तुम अपने देश पहुँचोगे तब संदेसा हमे भेज देना कि हम क्षेम कुशलसे पहुँचे और ठीक अपना ठिकाना बता जाओ जो हमारा पत्र तुम्हारे पास पहुँचे तब उसन कहा कि हे राजा! मै राजा वीर विक्रमादित्य हूं अंबावती नगरीमें राज करता हूं तुम्हारा नाम और यश सुनकर दर्शनके लिये आयाथा सो तुम्हे देखा और मेरा चित्त प्रसन्न हुआ तुम अच्छी तरहसे राज करो और हमें बिदा दो तुम्हारा साहस बल धर्म हमनें देखा यह सुनतेही वह राजा उसके पाओंपर गिरपड़ा और हाथ जोड़कर कहनें लगा कि महाराज! बड़ा अपराध हुआ मैनें तुम्हारा मर्म न जाना तुमने मेरी सेवा की सो तुम अपनें जीमें कुछ न लाना और जैसा धर्म मैने आपका सुनाथा वैसाही देखा और धन्य है तुम्हारे तांई और तुम्हारे धर्म साहस और पराक्रमको, यह कह राजाको सिरूफ दे बिदा किया राजा वीरोंको बुला सवार हो अपनें नगरमें आया इतनी बात कीर्तिवती पुतली

कहकर राजा भोजको समझानें लगी कि सुन राजा भोज! राजा वीर विक्रमादित्यका साहस! ऐसी वस्तु पाकर देते कुछ विलंब न लाया और अपनें जीमें न पछताया और जैसा साहस राजानें किया वैसा सुनकर कोई न करता तू किस गिनतीमें है! यह बात सुन राजा भोज चुप हो रहा पुनि दूसरे दिनके प्रभात समयमे राजा उठ तैयार हो पास बैठनेको गया और मनमें इरादा बैठनेका करताथा फिर झिझक कर रह जाताथा इतनेमें त्रिलोचनी—

तेरहवीं पुतली—

बोल उठी—सुन राजा भोज! एक पुरातन कथा मै तुझे सुनाऊ कि इस सिंहासनपर वही चढ़ेगा, जो राजा विक्रमके समान पराक्रम करेगा तब राजानें कहा कह! सुंदरी, विक्रमका बल और कथा सुननेको मेराभी मन चाहता है पुतली बोली राजा! कान देके सुन एक दिन राजा वीर विक्रमादित्य शिकार खेलनेको चला और साथमें जितने मुसाहिब रजपूत बली थे वेभी सजकर तैयार हो आये और एक एककी सवारीमें हजार हजार कोसक धायेका तुरंग था राजा अपन घोडेपर सवार था और वह गोया हवाया था राजकुमार अपने सिकारी जानवर बाज, बहरी जुर्रा, शाहीन बूही, छरगड, भैंगवा भैंगवा अपने अपने हाथोंपर लेले साथ हुए. और

राजानेभी एक बाज अपने हाथपर बिठा लिया मीरसिकारोंको हुक्म पहुँचा कि, जिस जिसके पास जो जो शिकारी जानवर तैयार हैं सो लेकर रिकाबमें हाजिर होवें इस तरह वन उसने एक वनकी राहली और यहां आकर किसीने बाज और किसीने बहरी और किसीने कुही, किसीनें शाईन उडाई और अपने अपने जानवरोंके पीछे घोडे बढ़ाये और उधर राजानेभी जितने मीरशिकार थे उन्हे हुक्म किया कि इस जंगलमें सब शिकार करो, मै तमाशा देखूंगा जो शिकार कर लावेगा वह इनाम पावेगा और जो शिकार न कर लावेगा सो नौकरीसे दूर होवेगा यह बात सुनतेही जितने मीर शिकार थे उन सबोंने उस वनमें चारों तरफ जानवर छोड़े और उधर हुक्म सहेलियोंको किया कि, तुमभी शिकार करो इस तरह सब शिकार करते थे और ला लाके राजाको गुजराते थे यह खड़ तमाशा देख रहाथा फिर उसने एक परिंदापर बाज उड़ाया और आप उसके पीछे लगा जिधर जिधर वह बाज जाताथा राजाभी पीछा किये जाताथा इसमे कोसों निकल गया देखे तो शाम होगई तब याद आई और फिरकर पीछे देखा तो वहां कोई आदमी नजर न आया और वह तमाम फौज राजाकी शाम हुएपर राजाको ढूंढ़ शिकार खेले जानकर नगरमे दाखिल हुई और यहां सूने जंगलमें राजा भटकता फिरता था कहीं राह

न पाताथा अब अँधेरा होगया और रात बहुत होगई तब एक नदीके किनारेपर जा पहुँचा वहा उतरकर अपने हाथ जीन-पोस बिछा घोडेको एक झाडीसे बांधकर बैठ रहा फिर देखता क्या है कि, वह नदी बढ़ती आती है और वह हटने लगा गरज ज्यों ज्यों राजा हठता आताथा त्यों त्यों वह बढ़ती आतीथी फिर जो निगाह की तो यह देखा कि नदीकी धारमें एक मुर्दा बहा चला आता है और उसके साथ एक बेताल और एक योगी खैंचा खैंची किये हुए आते हैं और आपसमें झगड़ते हैं योगी बेतालसे कहता है कि, तूने बहुतसे मुर्दे खाये हैं और यह मैंने अपने अवसरपर पाया है तू छोड़दे मैं उसे लेजाकर अपना योग कमाऊंगा यह सिद्धि मैंने तुझसे पाई यह सुन बेताल बोला–भाई! मैं अघाना नहीं हूं जो तू मुझे फुसलावे क्योंकर मैं अपना आहार तुझे दूं इसी तरह दोनों आपसमें झगड़तये और कहतेये, कोई तीसरा पुरुष इस वक्त ऐसा नहीं कि हमारा न्याय चुकावे फिर योगी कहने लगा कि बेताल तू मेरी बात सुन कल प्रभातको हम तुम सभाको जायें और जो सभामें न्याय चुके वही तूभी प्रमाणकर और मैंभी करूंगा इतनेमे एककी दृष्टि राजाकी ओर आ पड़ी, देख कर दोनों हँसे और कहने लगे कि, यह कोई मनुष्य नदीके किना-रेमें नजर आता है यहां चलो कि यह अपना न्याय निबेड़े

यह कहकर मुर्दा लेकर दोनों किनारेपर आये राजाको तमाम किस्सा सुनाकर कहा कि महाराज ! तुम धर्मात्मा हो इसवास्ते धर्म विचारके हमारा न्याय करो योगी बोला–महाराज ! मैं कहताहूं सो आप ध्यान लगाकर सुनिये इस बेतालने बहुत मुर्दे खाये और यह मुर्दा मैंने अपने दांवपर पाया है और यह नाहक मुझसे रार करता है ! और कहता है कि, मैं तुझे न दूंगा मैं इससे बिनती करके मांगता हूं और कहता हूं कि गोया यह प्रसाद मैंने तुझसे पाया यह नहीं मानता तब राजाने बेतालको पूछा कि तू अपनी भी मनकी मुझसे बात कह ! यह बोला–महाराज ! यह योगी बड़ा मूर्ख है जो इसने मुझसे राहमें झगड़ा लगाया मैं हजार कोशसे इस मुर्देको ले आयाहूं और यह मुझसे मांग रहा है मैं इसे क्योंकर दूंगा इस मुर्देके लिये मैंनें बहुत कष्ट किया यह नाहक देखके मन चलाता है मैं क्या कहूं कि जो जो मैंनें इसके वास्ते दुःख उठाया है और आहारके समयमें इस दुष्टने आन सताया और इसका न्याय तेरे हाथ है क्यों कि तू धर्मात्मा राजा है, जो तू कहेगा सो मुझे प्रमाण है तब राजा कहने लगा कि तुम दोनो ही बड़े हो इस वास्ते यह प्रसाद हमे दो कुछ तुमसे हम मांगते हैं तब तुम्हारा न्याय हम चुकावेंगे यह सुन योगीने हँसकर झोलीमेंसे एक बटुआ निकाल राजाके हाथ देकर कहा–राजा ! मुझे जितना

द्रव्य अभीष्ट होगा इतना यह बटुआ देगा और इसमेसे कभी कम न होगा पुनि बेतालने कहा राजा! मै एक मोहनी तिलक तुझे देताहूं इसे जब तू घिसकर टीका देगा, सब सब तुझे दबेंगे तेरे सामने कोई न होगा ये दोनोंनें प्रसाद राजाको दिया उसने कर जोटकर लिया और बोला कि सुन बेताल! तू इस मुर्देको छोडदे और मेरे घोड़ेको खा, यह मुर्दा योगीके हवाले करदे क्यों कि तू भूखा न रहे और उसका कामभी बंद न होय यह सुनतेही बेताल उस घोड़ेको खागया और योगी मुर्दा ले अपना मंत्र साधने लगा राजा वीरोंको बुलाय उनपर सवार हो अपने देशको चला रास्तेमें एक भिखारी सन्मुख चला आताथा उसने देखा कि शकबंधी राजा आता है, डरते डरते उसने सवाल किया कि महाराज! आपके नगरमें मै बहुत दिन रहा लेकिन कुछभी अर्थ मेरा सिद्ध न हुवा अब मै कुछ तुमसे मागता हूं, मेरे तई दीजिये यह सुनतेही राजाने यह बटुआ उसके हाथ दिया और उसका भेद बताया वह आसीस दे अपने घरको गया और राजाभी अपने मंदिरमें आया इतनी बात कह त्रिलोचनी पुतली बोली—सुन राजा भोज! ऐसा दानी और ऐसा साहसी जो होगा सो ही इस सिंहासनपर बैठे नहीं तो पातक है उसके दूसरे दिन राजा सवेरे उठ स्नान ध्यानकर दरबारमें आन बैठा और दीवान मुत्सद्दियोंको बुलाकर कहा

कि आज मेरा चित्त बहुत प्रसन्न है अच्छी घड़ीकर सिंहासन पर बैठूंगा इतनी बात कह वहांसे उठ सिंहासनके पास आ-कर गोदान कर ब्राह्मणोंको तृप्ति कर दी फिर गणेशको मना सिंहासनपर बैठनेको पांव बढ़ाया कि इतनेमें त्रिलोचना नामक

चौदहवीं पुतली–

बोली–हे राजा भोज! पहले कथा सुन ओ मै कहतीहूं पीछे सिंहासनपर बैठ यह बात राजानें सुनतेही पांव खैंच लिया और सिंहासनके नीचे आसन बिछाय बैठगया तब पुतली बोली कि, राजा! सुन एकदिन राजा वीर विक्रमादित्यने अपने प्रधानको बुलाकर कहा कि मै यज्ञ करूंगा जिसमें पुण्य हो और आगेका निस्तार होवे दीवानने सुनते ही देश देशको नौता भेजा जहां तलक राजा प्रजा थे उन्हे बुलाया कर्नाटक, गुजरात, काश्मीर, कन्नौज, विलगान इन नगरोंको भी नौता भेज जितनें ब्राह्मण थे उन्हे बुलाया और सातो द्वीपोंको नौता भेजा वहांके राजाओंको तलब किया, फिर एक वीरको पाताल्के राजाके पास नौता भेज उसे बुलाया और दूसरे वीरको स्वर्गको रवाना कर देवताओंको नौता भेज बुलाया और एक ब्राह्मणको बुलाकर कहा कि, तुम समुद्रके पास जाकर हमारा दंडवत् कहो और निवेदन करो कि, राजा विक्रमादित्यने यज्ञका आरंभ किया है और आपको बहुत नम्रता कर बुलाया

है यह ब्राह्मण तुर्त यहांसे चला और कितने एक दिनोंमें साग-रके तीरपर आ पहुँचा और यहा देखता क्या है कि, न कोई मनुष्य है और न कोई यहां पशु पक्षी है केवल जलही जल नजर आता है, यह देख ब्राह्मण अपने जीमें चिंता कर कहने लगा कि, राजाका संदेशा किससे कहूं? यहां तो कोई जीव दिखाई नहीं देता और है तो जलही जल है ऐसा अपने मनमे विचारकर यह पुकारा कि राजा वीरविक्रमादित्यका नौता मै दिये जाताहूं और तुम जल्दी पहुँचना इतना कह यहासे यह जब चला तब रास्तेमे एक बूढे ब्राह्मणके रूप समुद्र नजर आया और उसने पूंछा कि वीर विक्रमादित्यनें हमें किसवास्ते बुलाया है? तब उसने कहा कि राजाके यहां यज्ञ है? और तुम्हे जरूर बुलाया है तब समुद्र बोला कि, मैं चलूंगा पर मेरे चलनेसे जल जो यहांसे चलेगा तो कई नगर डूब जावेंगे इस लिये मेरी तरफसे तुम राजाको विनती कर कहना कि, मेरे न आनेका कुछ पछताव न करना मै इस सबबसे पहुँच नहीं सक्ता तब समुद्रने ब्राह्मणको पांच लाल दिये और एक घोडा राजाको सौगात भेजा और आप यहीं रहा तब ब्राह्मण खुश-वक्त हो राजाके पास गया वे पाच रत्न राजाको दिये और घोड़ा सामने खड़ा किया फिर सब यहांका वृत्तांत कहा तब राजाने प्रसन्न हो ब्राह्मणसे कहा कि, यह लाल और घोड़ा

तुमको मैनें तुम्हें दिया है यह कहकर त्रिलोचना पुतलीने राजा भोजको समझाया कि सुन राजा भोज! ऐसा पदार्थ राजा विक्रमने देते विलंब न किया वे लाख और घोड़ा कई लाखोंकी कीमतके थे, ऐसे दानी राजाके आसनपर बैठनेके योग्य तू नहीं, पंडित तू है पर माया तुझसे छूटती नहीं यह दिनभी यों ही गुजर गया दूसरे रोज राजा फिर सिंहासनपर बैठनेको तैयार हो गया तब अनूपवती

पंद्रहवीं पुतली—

कहने लगी—सुन राजा भोज! राजा वीर विक्रमादित्यके गुण कहनेमें नहीं आसक्ते जो बात कहनें योग होवे तो कहिये अयुक्त कहते हुए जी सक खाता है राजा बोला तू कह! मेरा जी सुनेको चाहता है जैसी बात हुई है वैसी कह इसमें तुझे दोष नहीं तब अनूपवती बोली अच्छा अब मैं कहती हूं तुम कान देकर सुनिये एक दिन राजा वीर विक्रमादित्य सभामें बैठा था और कहींसे पंडित आया उसने आकर राजाके सन्मुख एक श्लोक पढ़ा यह सुनकर राजा मनमें बहुत प्रसन्न हुआ इस श्लोकका मुद्दा यह था कि, मित्रद्रोही और विश्वासघाती जो हैं सो नरक भोग करेंगे जब तलक चंद्र और सूर्य हैं यह सुनकर लाख रुपये राजानें उस ब्राह्मणको दान दिये और कहा कि इसका अर्थ मुझे [illegible] कि क्या दृष्टांत है

हसका ? तब यह ब्राह्मण कहने लगा कि, एक राजा बड़ा अज्ञानी था उसकी रानी जो प्राणकी आधार थी पलभरभी राजा उसे आपसे जुदा न करता था जब सभामें बैठता था तब साथही जांघपर ले बैठता था और जब शिकारको जाता था तब दूसरे घोड़ेपर बिठा साथले ऐसा गरज जागना, सोना, खाना, पीना, एकही साथ था पर ऐसा मूर्ख था कि, किसीसे लज्जा न था रानीको दृष्टिमें रखता था एक दिन उसके प्रधानने अवसर पाकर हाथ जोड़ और शिर नवा कर कहने लगा कि स्वामी! जो मुझे जीव दान दे तो मैं एक बात कहूं तब राजा बोला अच्छा यह बोला कि महाराज! रानीके संग आप शोभा नहीं पाते राजपुरुषकी आन और मर्याद रहती नहीं आपका देश देशके राजा हँसते हैं, और कहते हैं कि, ऐसी सुंदरी राजाके मनमें बसी है कि पलक आटभी नहीं करता एक मेरी बात मानिये जो आपको यह बहुत प्यारी है तो एक चित्रपट लिखवाइये और अपने पास रखिये इसमें लोक निंदा न करेंगे यह बात प्रधानकी राजाके मनमें भाई और बड़ा अच्छा चित्रकारको बुलाकर चित्र खिंचाओ मंत्रीने उसको बुला भेजा वह तुरत आकर हाजिर हुआ और वह ऐसा था कि ज्योतिषविद्यामें अतिनिपुण था और चित्रकारी विद्यामें भी परिपूर्ण था उसे राजाने कहा कि रानीकी

मूर्तिका पट लिख दे जो मै अपनी नजरमें हमेशः रक्खूं सुन कर उस शारदापुत्रने मस्तक झुकाके कहा महाराज ! अच्छा मै लिख लाताहूं राजासे रुखसत हो अपने घरको आया और लिखना आरंभ किया कितने एक दिनोंमें लिखकर वह चित्र तैयार किया सो ऐसा कि जाने अभी इंद्रलोकसे अप्सरा उतरी है और उस रानीका जैसा अंग जहां था तैसाही उसने अपनी विद्याके जोरसे लिखा जब वह तसवीर तैयार हुई तब लेकर राजाके पास गया और राजानें देखकर बहुत पसंद किया अंग अंग उसने निरख निरख देखा नखसे शिख तलक गोया सांचेकी ढाली हुईथी राजाकी दृष्टि देखते देखते दाहनी जांघपर जा पड़ी तो वहां एक तिल देखा तब बहुतसा अपने जीमें घबराया और कहने लगा कि इसने रानीकी जांघका तिल क्यौं कर देखा हो न होय रानीसे इसकी मुलाकात है इस तरह अपने मनमें विचार सोचकर दिवानसे कहा कि इस चित्रकारको तुरत बुलाओ उसने सुनतेही उसे बुला भेजा जाना कि राजा खुश हुआ है सो कुछ इनाम देगा जब वहूं आनकर राजाके सन्मुख हुआ तब वधिकको बुलाकर हुकुम किया कि इसकी गर्दन मारके आंखें निकालके मेरेपास ले आओ जब वह उसे मारनें चला तब दिवानभी बिदा हो पीछे हो लिया बाहर निकल जल्लादसे कहा

कि तू इसे मुझे दे और आंखें हरनकी निकालकर राजाके पास लेजा जल्लादनें प्रधानका कहना किया और दिवान राजाकी तरफसे बहुत बेइखतियार हुवा कि ऐसा मूर्ख राजा हमनें नहीं देखा न सुना कि गुणवंत पुरुषको यों जीता मारे कदाचित् गुणवान् पुरुषसे कुछ तकसीर हो जाय तो उसको देशसे निकाल देते हैं यह राजाओंका चलन हमेशासे है पर कोई राजाओंकी बात पर न भूले मुहमे तो उनके अमृत रहता है और पेटमें विषभरे हुए हैं जो कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं इस तरह दिवाननें अपने जीमे विचारकर डरते डरते उसे छिपारक्खा और जल्लाद हिरनकी आखें निकाल राजाके पास लेगया कि महाराज! उसको मारकर आंखें निकालकर आपके पास लाया हूं राजानें हुक्म किया कि इन आंखोंको संडासमें लेजाकर डालदो इस तरह यह साजत तो यों टलगई फिर कितने एक दिनोंके बाद उस राजाका बेटा एकदिन अकेला शिकारको गया जाते जाते एक महावनमें जा निकला एक शेर वहां नजर आया बाघको देख यह राजपुत्र बहुत घबराया सब घोड़ा वहीं छोड़ एक वृक्षपर चढ़ गया उसकेऊपर जो देखे तो एक रीछ बैठा है रीछको देखतेही उसके हाथ पांव फूलगये और कांपने लगा बाद कि बहाल होकर गिरें इसमें वह रीछ बोला कि ऐ कुंवर! तू अपनें मनमें भय मत कर मैं तुझे नहीं खा-

ऊंगा क्यों कि तू मेरे शरण आया है और मैने तुझे जीवदान दिया है अब तू निःसदेह होकर आनंदसे यहां बैठ यह बात रीछसे सुन उसके जीमें जी आया इसमें दिन बीतगया और रात होगई तब रीछ बोला राजपुत्र ! अबतो रात होगई यह नाहर शत्रु हम दोनोको खानेको बैठा है इस वक्त सोना जीका जियान है बेहतर यह है कि दोदो पहर रात हम आपसमें जागें आधी आधी रात जागना आधीरात तू जाग और आधीरात मै जागूं राजपुत्रनें कहा बहुत अच्छा रीछने कहा पहले दोपहर रातको तू सोरह मै अब जागताहूं और पिछले दो पाम निशाको तू जागियो मै सो रहूंगा आपसमें इस तरह दोनोनें करार किया और राजपुत्र सोरहा वह रीछ बैठा और चौकी देने लगा इसमें शेरनें रीछसे कहा कि तू मेरी बात सुन और अज्ञानी मत हो यह मनुष्य तो अपना भक्ष्य है तू क्यों बिपका बीज बोता है ? इसे नीचे डालदे हम दोनों इसे खाजांय यह आदमी है और हम तुम दोनों बनवासी हैं हाथका माणिक गिरके हाथ फिर नहीं आता जब यह जाग उठेगा और तू सोवेगा तो यह तेरा शिर काटकर फेंक देवेगा अब यही बेहतर है कि मेरा कहना कर फिर यह अवसर न पावेगा और आखिरको तू पछतावेगा रीछनें जवाब दिया कि सुन अज्ञान बाप अपने ऊपर अपराध लेना उचित नहीं जितना होता है

पाप राजाके मारने और वृक्षके काटने, गुरुसे झूठ बोलने और वन जलानें और विश्वासघात करनेसे, इतनाही होताहै शरणागतको मारनेसे इन सबका पाप महापाप है और यह पाप किसी तरहसे छूटता नहीं इसने मेरी शरण ली है क्या हुआ ! जो एक भी मैनें न खाया तब बाघ खफा होकर बोला कि तूनें मेरा कहा तो न माना इस वास्ते मैंभी तुझे जीता न जाने दूंगा इतनेमें रीछकी बारी तो होगई और राजपुत्र जागा, रीछ सोया यह चौकी देनें लगा इससेभी बाघनें यही बात की कि भाई ! जो मै कहूं सो तू सुन भूलकरभी तू इससे मत पतिया सोकर सुपहको जब उठेगा तब अकुलाकर तुझे खा जायगा यह मुझसे कह चुका है कि सोकर उठूं तो मै इसे खाजाऊं इससे यह भला है कि, तू पहलेही इस रीछको गिरा दे जो मै इसे खाजाऊं और अपनी राहलै तू भी सहीह सलामत अपनें घरको जा उसके प्रबोध देनेसे यह बातोंमें आ गया और उस टहनीको पकड़ ऐसा हिलाया कि जिससे यह रीछ तले गिरपड़े इससे उसकी आख खुल गई और टहनीसे लिपट कर रह गया और इससे कहा कि अयपापी ! जो तूने मुझसे सलूक किया उससे मैने तेरी जान रक्खी और तू मतिहीन मेरे मारनेको तयार हुआ अब जो मै तुझे मार कर खाजाऊं तो तू क्या करेगा ? यह बातें रीछकी सुनतेही इसकी जान सूख गई और

अपने दिलमें जाना कि अब यह मुझे मुकर्रर खायगा इसमें स-
वेरा होगया बाघ उठकर यहांसे चला गया रीछनें उसके कानों-
में मूत दिया और कहा तुझे जीसे तो क्या मारूं क्यों कि अब
यहां तेरा कोई बचानेवाला नहीं है इससे असमर्थ जानकर मै
छोड़ देताहूं यह कह कर रीछ तो चला गया और यह गूंगा
बहरा हो बहुत घबरा और व्याकुल हो घरमें आया राजा
उसकी दशा देख अपनें जीमें चिंता करने लगा महलोंमे यह
खबर हुई सो रानियां कूक मार मार रोनें लगीं और कहने
लगी कि, भगवाननें यह क्या अयुक्त किया कोई कहनें लगी
कि किसीने इसे छला है तिससे इसकी यह हालत हो गई है तब
राजानें सोचकर दीवानसे कहा कि, जितने गुणी लोग हैं मंत्र
यंत्र जाननेवाले अपने नगरमें उन सबको बुलाकर कुँवरको
दिखलाओ प्रधाननें आदमियोंको भेज सब सयानोंको बुलाया
और उनसे कहा जिससे इसे आराम होय ऐसा काम किया
चाहिये तब वे अपने मंत्र यत्न करनें लगे जिस कदर कि
उन्होनें उसका उतार किया परंतु कुछभी फायदा न हुवा तब
हारकर उन सबोंनें जवाब दिया कि हमारी विद्या यहां कुछ
काम नहीं करती जब मंत्रीनें यह देखा कि उन्होके गुणोंसे
इसे कुछ आराम न हुवा तब राजासे हाथ जोड़ बिनती किया
कि महाराज! मेरे पुत्रकी बहू जो है सो बड़ी गुणवती है इस

वास्ते आप आज्ञा कीजिये तो मैं उसके तई ले आऊं और यह कुंवरको देखे भगवान चाहे तो आराम हो आयगा इसके सिवाय और कुछ यत्न नहीं राजाने कहा तरे बेटेकी स्त्री क्या जाने ! तब फिर दीवाननें कहा महाराज ! यह एक योगीकी चेली है और उस योगीनें मंत्र, यंत्र, तंत्र विद्या सब उसे सिखादी है राजानें आज्ञा दी और दीवान सवार हो अपने घरको चला गया और वहा चित्रकारको बुला सब अवस्था वहाकी कही और कहा कि मैं इस तरहसे राजाको वचन देकर आयाहूं तुम स्त्रीका भेष बनाकर मेरे संग चलो तब उसनें कबूल किया और स्त्रीका भेष बन साथ हो लिया दोनों सवार होकर राजा-के पास आये लोग महलमें उसे परदा करके लेगये दरमियान एक कनात खैंचली और उस तरफ कनातके उसे बैठाया राजा और लड़का और दीवान ये तीनों कनातके बाहर बैठे और उसनें कनातके अंदरसे कहा कि कुंवरको स्नान करवा कपड़े बदलवा चौका दिलवा एक पलंग बिछवाकर बिठाओ और कुंवरको कहो कि तुम सावधान होकर बैठो और जैसे मैं मंत्र कहूं सो तू कान दकर सुन विभीषण बड़ा शूर वीर था और दगा करके रामचंद्रसे जा मिला उन्होंने रावणका राज सब खराब किया और अपने कुलका नाश किया उस लाजसे एक बरस तक सिर न उठाया और अपनें कियेका फल पाया

अपने दिलमें आना कि अब यह मुझे मुकर्रर खायगा इसमें स मेरा होगया बाघ उठकर वहांसे चला गया रीछनें उसके कानोंमें मूत दिया और कहा मूझे जीसे तो क्या मारूं क्यों कि अब यहां तेरा कोई बचानेवाला नहीं है इससे असमर्थ जानकर मैं छोड़ देताहूं यह कह कर रीछ तो चला गया और वह गूंगा बहरा हो बहुत घबरा और व्याकुल हो घरमें आया राजा उसकी दशा देख अपनें जीमें चिंता करने लगा महलोंमे यह खबर हुई तो रानियां कूक मार मार रोनें लगीं और कहने लगी कि, भगवाननें यह क्या अयुक्त किया कोई कहनें लगी कि किसीने इसे छला है जिससे इसकी यह हालत हो गई है तब राजानें सोचकर दीवानसे कहा कि, जितने गुणी लोग हैं मंत्र यंत्र जाननेवाले अपने नगरमें उन सबको बुलाकर कुँवरको दिखलाओ प्रधाननें आदमियोंको भेज सब सयानोंको बुलाया और उनसे कहा जिससे इसे आराम होय ऐसा काम किया चाहिये तब वे अपने मंत्र यंत्र करनें लगे जिस कदर कि उन्होंनें उसका उतार किया परंतु कुछभी फायदा न हुवा तब हारकर उन सबोंनें जवाब दिया कि हमारी विद्या यहां कुछ काम नहीं करती जब मंत्रीनें यह देखा कि उन्होंके गुणोंसे इसे कुछ आराम न हुवा तब राजासे हाथ जोड़ विनती किया कि महाराज ! मेरे पुत्रकी बहू जो है सो बड़ी गुणवती है इस

पास आप आज्ञा कीजिये तो मैं उसके तई ले आऊं और वह कुँवरको देखे भगवान चाहे तो आराम हो जायगा इसके सिवाय और कुछ यत्न नहीं राजाने कहा तेरे बेटेकी स्त्री क्या जाने? तब फिर दीवाननें कहा महाराज! यह एक योगीकी बेटी है और उस योगीनें मंत्र, यंत्र, तंत्र विद्या सब उसे सिखादी है राजानें आज्ञा दी और दीवान सवार हो अपने घरको चला गया और वहां चित्रकारको बुला सब अवस्था वहांकी कही और कहा कि मैं इस तरहसे राजाको वचन देकर आयाहूं तुम स्त्रीका भेष बनाकर मेरे संग चलो तब उसनें कबूल किया और स्त्रीका भेष बन साथ हो लिया दोनों सवार होकर राजाके पास आये लोग महलमें उसे परदा करके लेगये दरमियान एक कनात खेंचली और उस तरफ कनातके उसे बैठाया राजा और लड़का और दीवान ये तीनों कनातके बाहर बैठे और उसनें कनातके अंदरसे कहा कि कुँवरको स्नान करवा कपड़े बदलवा चौका दिलवा एक पटड़ा बिछवाकर बिठाओ और कुँवरको कहो कि तुम सावधान होकर बैठो और जब मैं मंत्र कहूं सो तू कान देकर सुन विभीषण बड़ा शूर वीर था और दगा करके रामचंद्रसे जा मिला उन्होंने रावणका राज सब खराब किया और अपने कुलका नाश किया उस लाजसे एक बरस तक शिर न उठाया और अपनें कियेका फल पाया

कि सब कुछ गँवाया और भस्मासुरने महादेवजीकी तपस्या कर वर पाया और उन्हीसेही विश्वासघात किया कि पार्वतीजीके लेनेकी इच्छाकी और उसकाभी फल उसने तुर्त पाया कि क्षण भरमें आपही जलके भस्म होगया, और कुँवर तू मित्र द्रोही और विश्वासघाती है क्यों हुआ ? सोएहुये रीछको तूने नीचे ढकेल दिया ! उसने तो तेरेपर उपकार किया था और तूने उसका बुरा बिचारा पर उसमे तेरा दोष कुछ नहीं है तेरे पिताका दोष है इस वास्ते कि जैसा बीज होवेगा वैसाही फल होवेगा यह तुमनें अपने पिताके पापसे दुःख पाया इतनी बात सुनतेही कुँवर सचेत हो बोल उठा तब राजा बोला अय सुंदरी ! तू सच कह कि तूनें यह बनका जानवर क्योंकर पहँचाना ! यह उस सुनकर उसनें जवाब दिया कि राजा ! मै अपनी पूर्व अवस्था तेरे आगे प्रकट करतीहूं सों चित्त लगाय सुनो जब मै अपने गुरुके पास पढ़ने आतीथी तब गुरुकी अति सेवा करतीथी गुरुनें प्रसन्न होकर एक मंत्र मुझे बताया यह मंत्र मैंनें साधा तबसे सरस्वती मेरे मनमें बसी है और जैसे मैने रानीकी जांघका तिल पहँचाना वैसेही बनके रीछकोभी जाना यह सुनतेही राजा प्रसन्न हो परदा दरमियानसे दूरकर दिया और कहा कि, तू सच्चा शारद-पुत्र है तेरे गुनको मैने अब जाना यह कह राजाने आधा

राज उसे दिया और अपना मंत्री कि
वह ब्राह्मण बोला कि राजा वीरविक्रमादि
अर्थ है यह कथा उस ब्राह्मणके मुखसे
विक्रमादित्यनें उसे हजार गांव वृत्ति
कहकर पुतली बोली कि सुन राजा भोज
कहां है! और अब इस नगरमें विक्रमादित्यके समान राजा होना मुश्किल है मैनें तुमसे यह सब बात कही और तू इस सिंहासनके योग्य नहीं ऐसा सुन उस दिनकीभी साअत जाती रही राजा महलमें दाखिल हुआ और अपने प्रधान और पुरोहितको बुलाके यह हाउस कही दूसरे दिन सुबहको उठ स्नान पूजाकर ध्यानलगा सिंहासनके पास जाकर खड़ा हुआ और प्रधानको बुलाकर कहा कि अब मेरा जी चाहता है कि सिंहासनपर आज बैठूं बेहतरहे कि तुमही अच्छा मुहूर्त इस वख्त मुझे देख दो तब दीवाननें कहा महाराज! आपतो बैठियेगा पर ये पुतलियां आप आके रोरो मरेंगी राजा उठकर खड़ा रहा और सुन्दरवती—

सोलहवीं पुतली—

बोल उठी–सुन राजा भोज! मैं तुमसे विचारकर कथाका अहवाल कहती हूं उज्जैन नगरीमें छत्तीस कौम और चार जात बसती थी एक वहांकाही नगरसेठ जिसके यहां अति धन था

कि सब, प्रतापी था नगरके लोगोंको व्यौहार करनेके लिये रुपये माया देता लेताथा जो कोई उसके पास अपना स्वार्थ विचार कर आताथा वह खाली फिरकर नहीं जाताथा उसका बेटा रत्नसेन नाम बहुत सुंदर था और अति विद्यावान् माता पिताकी आज्ञामें निशिदिन रहता उस सेठके मनमें आया कि, कहीं अच्छी सुंदरी कन्या ठहरा उसीकी शादी कर दें ऐसा ठहराय ब्राह्मणोंको बुला देश देश भेजा और कह दिया कि, जहां कहीं अच्छी लड़की ठहरे वहांका टीका लेके तुम आओगे तो बहुत कुछ धन तुम्हें दूंगा और कुछ रुपये खर्चको दे बिदा किया ब्राह्मण देश देश ढूंढ़नें लगे उन्हमेसे एक ब्राह्मणनें समाचार पाया कि समुद्रके पार एक शेठ है और उसकी बेटी बहुत सुंदर है उसेभी वरकी तलाश है यह सुनकर एक जहाजपर बैठ समुद्रके पार हुआ वहां जा शेठका ठिकाना पूंछकर उसके द्वारपर ठहरा और खबर दी कि उज्जैन नगरीसे एक ब्राह्मण यहांके शेठका आया है यह खबर सुन उस शेठने उसको बुलाया और दंडवत् कर आसन दे बिठाया ब्राह्मण आसीस देकर बैठा शेठने पूंछा किस कार्यके लिये तुम आये हो ? सो कहो ! ब्राह्मणने कहा हमारे शेठनें अपने लड़केकी शादीके लिये भेजा है और कह दिया है कि जहां कन्या अच्छी कुलीनकी ठहरे वहांका टीका ले हमारे पास

पहुँचो सेठ यह सुनकर थोडा मेरीभी यही इच्छा थी कि पुत्रीका ब्याह मै कहा करूंगा ? पर भगवाननें घर बैठे ही संयोग कर दिया फिर कहा कि कुछ दिन तुम यहां आराम करो मै अपना पुरोहित तुम्हारे साथ कर दूंगा वह लडकेको देख टीका आकर देगा और तुमभी इस लडकीको देखलो और यहां आकर उस सेठसे कहो कि, अपनी आंखों देख आयाहूं यह ब्राह्मण कितनेक दिनोंतक वहां रहा और उस कन्याको अपनी आंखोंसे देख सेठके ब्राह्मणको साथ ले उज्जैन नगरीको फिर चला तब उस सेठने अपने पुरोहितसे कह दिया कि टीका दे ब्याहकी जल्दी कर आना ये दोनों वहांसे चल जहाजपर चढ कितनेक दिनोंमें उज्जैन नगरीमें आन पहुँचे ब्राह्मणने सेठको खबर दी कि मै कन्या ठहरा आयाहूं सेठने दूसरे दिन उस ब्राह्मणको बुलाया और लडकेको अपने पास बैठा दिखलाया ब्राह्मणने देख उसे तिलक कर दिया और हाथ जोड अपने सेठकी तरफसे विनती कर कहा कि, आप जल्दीसे बरात लेकर आइये हम जाकर वहां तैयारी करते हैं ऐसा ठहराकर फिर रुखसतहो वह ब्राह्मण अपनें मुल्कको गया वहां जा सेठसे यहांका सब समाचार कहा सेठ यह खबर सुनकर ब्याहका सामान तैयार करने लगा और इधर यह सेठ ब्याहकी तैयारी करने लगा कारखानेमें नौबत बजने लगी और मंगलाचार होने लगा

तरह तरहकी तैयारियां कीं जितने कुटुंबेके लोग थे उन्होंने
नये नये जोड़े पहना अपने साथ ले आनेको तैयार हो रहा
नाच राग रंग खुशीसे होने लगे इस तरह तमाम शहरकी
जियाफत करते करते बरातकी तैयारी होरही ब्याहका दिन
नजदीक पहुँचा अजबस कि जाना दूरका था फिक्र करने लगा
कि अरसा थोड़ा रहा है समुद्रपार इतने दिनोंमें हम क्योंकर
जा सकेंगे ? यह बात सुनकर इसके सब भाई बंधु अंदेशा
करनें लगे और खुशी तमाम शादीकी भूलगये इसमें एक
शख्सने आकर उस सेठसे कहा कि इस कन्याका प्रारब्ध होगा
तो इस लग्नमें विवाह होगा और मैं एक बात बताताहूं तुम
इसकी फिक्र मत करो भगवान चाहे तो बनजाय तब उसने हाथ
जोड़कर कहा कि भाई ! यातो भगवानके हाथ हमारी लज्जा या
तेरे हाथ जिससे हमारा काम बने सो कह ? वह कहनें लगा कई
एक महीनें हुए हैं कि एक बढ़ई उड़न खटोला बनाकर राजाके
पास ले आयाथा और यह कहताथा कि, इस खटोलेका यह
स्वभाव है कि, इसपर बैठकर जहां तुम्हारी इच्छा हो वहां आओ
यह पहुँचायेगा राजानें सुनकर उसको दो लाख रुपये दिये और
खटोला ले लिया वह अब राजाके घरमें होवेगा इसवास्ते तुम
राजाके पास जाओ और सब हाल राजासे कहो तो राजा
वह खटोला देगा और तुम्हारा सब काम सिद्ध होजा-

यगा यह सुनतेही वह खुशी होकर राजद्वारपर गया और द्वारपालसे कहा कि मेरी खबर महाराजसे जाहिर कर दो तब दरवानोंनें जाकर दीवानसे अर्ज की कि नगरसेठ द्वारेपर हाजिर है आपकी आज्ञा हो तो राजाके दर्शनको आवे दीवाननें कहा कि बुलाओ दरवान आकर उस सेठको अंदर लेगया उसने यहां आकर दीवानको दंडवत् की और विनती कर कहने लगा कि, महाराज! आपके दर्शनको मै आया हूं और अपना बड़ा जरूरका कामभी है यह सुनकर दीवाननें कहा कि राजा महलमे हैं सेठ यह सुन अति उदास होगया और कहा कि मेरा बड़ा कार्य है सो ऐसा कि लड़केकी शादी है और जाना तो समुद्रके पार है और चारदिन बीचमें बाकी हैं इसमे जो न पहुंच सकें तो मेरे कुलकी हँसी होगी बनियेसे यह बात सुनकर दीवाननें राजासे आकर सब हकीकत जाहिर की तब राजाने आज्ञा दी कि यह उड़न खटोला उसे लेजाकर दो और जो कुछ यह कहेगा वैसीही सब तैयारी करदो जो किसी तरह उनक काममें विघ्न न आवे तब प्रधानने खटोला मँगवा बनियेको दे दिया और कहा कि जो कुछ सामान तुम्हे दरकार हो सो कहो! महाराजका यह हुक्म हुया है कि, उसको जो कुछ चाहिये होय सो दे दो तब सेठने कहा कि महाराजकी दयासे सब कुछ है पर मेरी यही जरूर थी और आपकी

कृपासे सब काम सिद्ध होगया है महाजन खटोला लिये अपने घरको आया और ब्राह्मणको बुलाकर साथ लिया लड़का और आप उसपर बैठ समुद्रपार चला एक अरसेमें वहां आकर पहुँचा और वहां आकर देखे तो मंगलाचार सारे नगरमें हो रहा है और सब लोग राह देखरहे हैं जब लोगोनें देखा तो हाथो हाथ ले गये आकर एक हवेलीमें उतारा और अपनें सेठको खबरदी कि तुम्हारा संबंधी बरात लेकर आन पहुँचा है वह सेठभी वहांसे उसकी मुलाकातको आप आया और देखकर इन तीन आदमियोंको अपने जीमें बहुत पछताया और पूंछा कि क्या सबब है ? जो तुम इस तरहसे आयेहो तब सब अवस्था अपनी सुनाई सुनतेही उस सेठनें अपने गुमास्तेसे कहा कि, कल ब्याह है और आज बरातकी तैयारी सब तुम जल्दी करदो कि जिसमें शहरके लोग न हँसें उन्होने सब तैयारी आठ कहतेही करदी दूसरे दिन बरात लेकर वह सेठ ब्याहने गया और बेटेका ब्याह किया उस सेठनें हाथी घोड़े जोड़े पालकी मियानें जड़ाऊ गहने और बहुतसा कुछ दान दहेज दिया इसने वहांसे सब लेकर जहाजमें रखकर जहाज रवाना कर दिया और आप खटोलापर सवार हो अपने शहरमें आया और नयेसिरमें शादी रचाई ब्राह्मणोंको बहुत कुछ दान दिया और कुछ जवाहिर पोशाक और बाजे तुहफः और तहायफ

थालोंमें रत्न और चार घोड़े खांसे लेकर राजाके नगरको चला और वहांसे खटोला जो लेगया था वहभी फेर देने जब द्वारेपर पहुँचा तब द्वारपालोंसे कहा कि, महाराजको मेरी खबर दो तब द्वारपालोंनें राजाको आकर कहा राजानें खबर सुन उसे बुला लिया और जो कुछ वह लेगयाथा सो आकर उसने राजाकी भेट किया और कहा महाराज! आपके पुण्य प्रतापसें सब काम अच्छा हुवा अब इस दासकी भेंट आपको कबूल करनी चाहिये तब राजा सुन हँसकर बोला कि, मेरा यह सुभाव है कि, दी हुई चीज मैं फेर नही लेता यह खटोला मैंनें तुझको दिया और जो कुछ तू तुहफे लाया है यह सब तुहफे और लाख रुपये अपने खजानेसे मंगवाया और कहा कि हमनें तेरे बेटेको दिये इस वास्ते कि, इसकी शादी हुई है गरज ये सब कुछ इनायत करके मानदे उसे रुखसत किया वह प्रसन्न हो अपने घरको आया इतनी बात कह यह पुतली बोली सुन राजा भोज! राजा वीरविक्रमादित्यकी बराबरी इंद्रभी नहीं कर सकता था और तुम तो किस गिनतीमें हो! जो तूने अपना मन बढाया है इससे तू बाज आ इन बातोंमें वहभी दिन गुजर गया तब राजा महलमें दाखिल हुआ रात जिस तिस तरह गुजरगई फिर जब सुबह होगई तब राजा सिंहासनपर बैठनेका इराद करके वहां आगया तब सत्यवती

सत्रहवीं पुतली–

कहने लगी–सुन राजा भोज ! एकदिन राजा वीरविक्रमादित्य अपनी सभामें इंद्रकी समान बैठा था और गंधर्व मधुर मधुर स्वरोंसे गा रहेथे रंडी नृत्यकर भाव बताय रहीं थीं कहीं भाट खड़े हुए यश वर्णन कर रहेथे किसी तरफ ब्राह्मण वेदपाठ कर रहेथे किसी तरफ मल्ल आपसमें युद्ध कर रहेथे और किसी तरफ चित्ते, कुत्ते, सियाह गोसहरन, मेढ़े मीर सिकार लिये खड़े थे और जितनी तयारी राजाओंकी चाहिये सो सब तयार थी उनकी सभामें एकसे एक पंडित चतुर और धीर बैठे थे उनमे राजा इंद्रकी तरह और सब सामान इंद्रके अखाड़ेके ऐसा था इसमें राजानें अपने चित्तमे विचारकर पंडितोंसे कहा कि, तुम एक एक बात मेरी सुनों कि, स्वर्गमें राजा इंद्र जो हैं सो मर्त्य लोकका सब मर्म जानते हैं पर कहो कि पातालका राजा कौन है ! और किस जगह वह रहता है ! तब उनमेसे एक पंडित बोला कि महाराज! पातालके राजा शेष नाग हैं ! जिनके हजार फन हैं और पद्मिनी रानी उनके यहां है ! और कभी शोक संताप उन्हे नहीं व्यापता इस वास्ते वह आनंदसे वहांका अचल राज करते हैं और जैसा वह राजा सुखी है वैसा इस संसारमें कोईभी नहीं पंडितकी बात सुनकर राजाको उनसे मिलनेकी इच्छा हुई

तब बेतालोंको बुलाकर कहा कि, मेरे तई पातालको लेचलो, मै शेष नागके दर्शनको जाऊंगा ऐसा राजाका वचन सुन बेताल उठाकर पातालको लेगये और शेष नागका मंदिर दिखा दिया राजाने उनका मंदिर देखतेही बेतालोंको बिदा किया और आप मंदिरको चला गया जब जाकर उनके पास पहुँचा और देखे तो यह कंचनका मंदिर है और उसमे रत्न जड़े हुए चकमका रहेहैं और ऐसी ज्योति है उसकी कि जिसकी रोशनीके सिवाय रात दिन कुछ नहीं मालूम होता द्वार द्वारपर कमलके फूलोंकी बंदनवारें बँधी हुई हैं और घर घर आनंद मंगलाचार हो रहा है वहां राजा कुछ डरता डरता कुछ खुशी खुशी हो आकर खड़ा हुआ और वहांके द्वारपालोंसे दंडवत करके कहा कि महाराज ! हमारा समाचार शेष राजाजीको पहुँचाओ कि मर्त्यलोकसे एक राजा आपके दर्शनको आया है तब दरवान राजाको खबर देनेको गया और यह द्वारपर खड़ा हुआ कहता था कि धन्य भाग्य है मेरा कि मैं यहांतक आन पहुँचाहूं और चारों तरफसे रामकृष्ण रामकृष्ण इस नामकी आवाज आतीथी राजाके मंदिरमें वेदकी ध्वनि कान पड़ती थी जब दरवान राजाके सन्मुख जा प्रणामकर हाथ जोड़कर खड़ा हुआ राजाने उसकी ओर दृष्टिकी, उसने कहा महाराज ! एक मनुष्य द्वारेपर

खड़ा है और कहता है कि मै मर्त्यलोकसे आया हूं द्वारेको हजारों दण्डवत् करता है उसको आपके दर्शनकी अभिलाषा है जिससे निहायत बेचैन है यह बात सुनतेही शेष नाग उठके द्वारेपर आये राजाने देखते ही उनको साष्टांग प्रणाम किया और उन्होनें हँसकर आसीसदी और पूंछा कि तुम्हारा नाम क्या है ? और कौनसा देश है ? तब राजाने हाथ जोड़कर कहा कि स्वामी ! विक्रम भूपाल मेरा नाम है और मै मर्त्यलोकका राजा हूं और आपके चरणके दर्शनकी मुझे इच्छा थी सो मेरे मनकी इच्छा पूरी हुई आज मुझे करोड़ यज्ञका फल हुआ और करोड़ों रुपये दान कियेका पुण्य पाया और धन्य भाग मेरा जो आपके चरणकमलके दर्शन हुए. बल्कि चौंसठ तीरथ न्हायेका मुझे फल हुआ विक्रमका नाम सुनतेही शेष नाग उसको मिले और हाथ पकड़कर अपने मकानमे लेगया अच्छी जगह बैठाकर क्षेम कुशल पूंछी राजानें कहा महाराजके दर्शनसे सब आनंद है फिर कहा—तुम किस कारण यहां आयेहो ? और आते हुये पंथमें तुमने बहुत कष्ट पाया होगा विक्रम बोला कि फणिनाथ ! मैंने जो कष्ट पाया सो सब तुम्हारे दर्शन कियेसे निस्तरा फिर राजाको रहनेके लिये एक अच्छा स्थान दिया और बहुतसे लोग टहल करनेको उन लोगोंसे कह दिया कि मरी सयासे भी तुम अधिक राजाकी सेवा जानना इस

तरहसे पांच, सात दिन राजा विक्रमादित्य वहां रहा बाद उसके एक दिन हाथ जोड़कर कहा कि पृथ्वीनाथ! मुझे विदा कीजिये अब मैं अपने नगरमें जाऊं और वहां बैठ आपका गुण गाऊं तब शेषने हँसकर कहा कि, राजा! अब तुम्हे घर आनेकी इच्छा हुई है सो तुम्हारे वास्ते कुछ प्रसाद हम देतेहैं तुम लेते जाओ यह कह चार लाल मँगवाकर राजा विक्रमको दिये और उनका गुण कहनेको लगे कि इस एक रत्नका यह स्वभाव है कि जितना गहना तुम चाहोगे सो यह तुम्हें देगा और क्षणभर देते विलंब न करेगा और दूसरे लालका ऐसा स्वभाव है कि, हाथी घोड़े पालकिया जितनी तुम मांगोगे उतनी इससे पाओगे और तीसरे लालका यह स्वभाव है कि, तुम जितनी लक्ष्मी चाहोगे तुमको उतनीहीं यह देगा और चौथे रत्नका यह प्रभाव है कि, हरिभजन और सत्कर्म करनेकी जितनी मनमें इच्छा रक्खोगे उतनी यह पूरी करेगा इस तरह चारों लालोंके गुण राजाको समझाकर कहे और विदा किया राजा हाथ जोड़कर खड़ा हो कहने लगा—महाराज! मैं आपके गुणको उपमा नहीं दे सकता हूं पर आप मुझे दास समझकर कृपा रखियेगा यह कहकर राजा वहांसे रुखसत हुआ और अपने बेतालोंको बुलाकर उनपर सवार हो अपने घरको आया अब कोश एक नगर रहगया तब बेतालोंको

छोड़ राजा पांओं पाओं शहरको चला तो देखता क्या है कि एक दुर्बल भूखा ब्राह्मण चला आता है जब वह पास आया तब उसने कहा कि राजा! मैं भूखा ब्राह्मण हूं, कुछ मुझे भिक्षा दो तो मैं जाकर अपने कुटुंबको पालूं यह सुनतेही राजा चिंता कर अपने मनमें कहने लगा कि इस ब्राह्मणको इसमेंसे एक लाल दूं यह विचारकर ब्राह्मणसे कहा कि, देवता! इस वखत मेरे पास चार रत्न हैं और उन चारोंका एक एक गुण है इस वास्ते जो तुम इनमेंसे चाहो वह मैं तुम्हे दूंगा तब ब्राह्मणनें कहा पहले अपने घर हो आऊं तब तुमसे कहूं यह कहकर ब्राह्मण अपने घर गया और राजा वहां खड़ा रहा वह घरमें जाकर अपनी स्त्री पुत्र और पुत्रकी स्त्रीसे कहनें लगा कि, उन चारों लालोंका यह व्योरा है तब उन तीनोंमेसे ब्राह्मणी बोली कि स्वामी! तुम वह लाल लो कि जो लक्ष्मी देता है, सो और ख्याल मनमेसे उठादो, क्यों कि लक्ष्मीसे मिलते हैं सहाय और लक्ष्मीसे होते हैं सब उपाय धर्म, ज्ञान, नेम, पुण्य, दान यह सब लक्ष्मीसेही होते हैं इससे तुम और तरफ चित्त मत डुलाओ और जाकर लक्ष्मी लेआओ, फिर उसका पुत्र बोला—लक्ष्मी किस कामकी है, जो साम सामान न हो और जो सामान हो तो राजा कहाये और सब कोई शिर नवाये सामान हो तो दुर्जन डरे और संसारमें

शोभा पावे जो घरमें लक्ष्मी हुई और जगमें शोभा न पाई तो उस पुरुषका जन्म लेना निष्फल है तुम यह लाल लो कि जो इस संसारमें शोभा दे उसनेमें उसके बेटेकी बहू बोली कि तुम यह लाल लो कि जो अच्छे अच्छे आभूषण दे गहने पहननेसे स्त्री अप्सरा मालूम हो जो राक्षसी पहने तो अति सुंदरी दिखाई दे और बिपत् पड़े तो बेंच बेंच बहुतसा धन ले और जितना मागोगे उतना इससे पाओगे और पुरुष हमारा बावला है और सास बुद्धिहीन है इससे ससुरजी! तुम सज्ञान हो और तुमसे मै कहतीहूं यही लाल लेकर आओ जो मैंने तुमसे कहा है उससे तुम सब कुछ पाओगे यह सुनकर ब्राह्मण बोला कि तुम तीनो बौराये हो और मेरी इच्छा शिवाय धर्मके और कोईमें नहीं क्योंकि धर्मसे संसारमें आदमी राज पाता है, और धर्मसे सब काम सिद्ध होते हैं धर्मसेही जगमें यश होता है और धर्म करनेसे देखो कि राजा बलिनें पातालका राज पाया और धर्मसे ही राजा इंद्रनें स्वर्गमें जाकर इंद्रासन पाया और धर्मसे यह काया अमर हो जाती है गर्भवास छूट जाता है इससे तुम मेरा धर्म मत डुबाओ और मैंभी अपना सत न छोडूंगा इसस जो हो सो हो इसी तरह चारोंनें चार मत किया और एकका एकने नहीं माना तब यह ब्राह्मण घरसे फिरकर राजाके निकट आया

और सब अहवाल राजाको सुनाया और कहा कि महाराज ! मै घर सो गया पर बात कुछभी मन न आई अपनी अपनी सब कोई कहता है और हम चारोंकी चार मती हैं और आपने यहां खडे होकर हमारे लिये दुःख पाया पर हमारा मतलब नहीं आया यह सुन राजानें कहा कि, महाराज ! तुम अपनें चित्तमें निराश होकर उदास न होना चारों लाल अपने घरको लेजाओ मै तुम्हे देताहूं क्योंकि जिससे तुम्हारा कुटुंबभी प्रसन्न हो और तुमभी हमारा इसीमे कल्याण है निदान राजानें चारों लाल ब्राह्मणके हाथ दिये ब्राह्मण लेकर खुश हुआ और आसीस दे अपने धामको गया सुन राजा भोज ! राजा विक्रमादित्यभी अपनें मंदिरको गया और दान देते कुछ विलंब न लाया ऐसा दानी और प्रतापी अब इस कलियुगमें कौन है ? जो उसके समान हो वह इस आसनपर बैठे और नहीं तो नरकवास पावे अभी तू अपने मनमें मत उकता धीरज धर और आगे कथा सुन जो जो राजानें साहस और दान किये हैं यह बात पुतलीकी सुनकर राजा भोज सिंहासनके पाससे उठकर घर आया और सारी रात सोच चिंतामें गँवाई सुबह होतेही स्नान पूजा करके बैठा इतनेमें दीवान प्रधान आकर हाजिर हुए सबको साथ ले सिंहासनके पास जाना चाहा कि पांव उठाकर धरें तब रूपरेखा—

अठारहवीं–

पुतली उठी और हाँहाकर कहने लगी कि राजा ! मुझपर दया कर और पहले मेरी बात सुन, तिस पीछे जो इच्छामें आवे सो कर तब राजा बोला कि तू कह ! जो तेरे चित्तमें है सब यह पुतली कहने लगी कि सुन राजा भोज ! एकदिन दो संन्यासी आपसमें योगकी रीतिसे झगड़तेथे न यह उससे जीत सकसाथा न वह इससे आखिर इस तरह झगड़ते झगड़ते वीरविक्रमादित्यके पास आये और कहा कि महाराज ! हम दोनों विवादी हैं इसका आप न्याय चुकावो आप धर्मात्मा राजा हैं यह समझकर हम आये हैं राजानें कहा मुझसे सम झाकर तुम जाहिर करो कि किस बातपर झगड़ा है ? तब उन मेसे एक यती बोला कि, महाराज ! मैं कहताहूं कि मनके वशमें ज्ञान है और मनके वशमेंही आत्मा है और मनके वशमेंही देह है और माया, मोह, पाप, पुण्य येभी सब मनसे हैं और जितनी बातें हैं यह सब मनकेही तावेमें हैं और मनकी इच्छाहीसे सब कुछ होता है मन जो है सो तमाम शरीरका राजा है और जितने अंग हैं सो मनके आधीन है मन उनसे जो काम लेता है सो ही वे करते हैं एक दोनोमेसे यह जब कहचुका तब दूसरा बोला सुनो राजा ! निश्चय करके जो मैं कहूं ज्ञान जो है वही राजा है देहका और मन जो है सो

उसका तावेदार है और जो कदाचित् मन अपना अमल किया चाहे तो ज्ञानसे कुछ इसका वश नहीं चलता मनके काबूमें हैं इंद्रियां वह चाहे तो उनसे कर्म करवावे पर ज्ञान नहीं करने देता जब ज्ञान आता है तब वह मनको मार कर निकाल देता है और पांचों इंद्रियांभी ज्ञानके वश हो जड़से कटी हुई हैं जब मनुष्यसे मन और इंद्रीका विकार छूटा निर्भय हुआ संसारके भयसे और योग सिद्ध हुआ दोनोंकी ये बातें सुनकर राजा बोला कि, तुमने जो कहा सो मैं सब समझा इसका उत्तर विचार कर तुम्हें दूंगा, कितनी एक देरके बाद राजानें सोचकर कहा कि, सुनो योगेश्वर! चार वस्तु एक साथ रही हैं अग्नि जल वायु और पृथ्वी इन चारोंसे शरीर है मन इनका सरदार है मनकी मतिसे जो ये चलें तो घड़ी पलमें नाश करदे पर उनपर ज्ञान बली है मनका विकार होने नहीं देता और जो नर हैं ज्ञानी उनकी काया विनाशको नहीं पाती वे इस संसारमें अमर हैं और जबतक योगी ज्ञानसे मनको नहीं जीते तबतक उसका योग सिद्ध नहीं होता ये बातें राजाकी योगियोंनें सुन अपने मनका हठ छोड़ दिया और ये योगियोंनें प्रसन्न होकर राजाको एक खड़िया कलम देकर कहा कि इसमे ये गुण है जो इससे दिनको तुम लिखोगे सो रातको प्रत्यक्ष सर्व देखोगे यह कहकर दोनो योगी चले

गये राजानें अपने जीमें अचरज माना कि यह बात किस तर-हसे सत्य होगी ? तब राजानें एक मंदिर खाली करवाया और शहका घुलवाय लिपवा अकेले उसके घरमें आ बिछोना बि छवा किंवाड़ बंदकर दीवालमें मूरत लिखनें लगा पहले कृष्ण की मूर्ति लिखी, पीछे सरस्वतीकी फिर देवताओंकी इतनेमें सांझ हुई और एक बार जय जय शब्द होनें लगा जो जो देवता लिखेथे सो साफ देखे देखतेही राजा मोहित हो गया और जो जो बातें वे आपसमें कहतेथे यह राजा सब सुनताथा इत-नेमें प्रभात होगया और देवताओंने उठ उठ अपनी अपनी राह ली और पुतलीकी पुतलियां रहगई फिर राजाने दूसरी तरफ दीवालमें हाथी, घोड़ पालकी, रथ और फौज यह सब कुछ लिखा फिर जब शाम हुई तो वे सब हाजिर हुये राजा देख देख अपने जीमें प्रसन्न होताथा और योगीको याद कर ताथा कि, मुझे यह पदार्थ दे गया जब भोर हुआ तब यह चित्रका चित्र रहगया फिर तीसरे दिन राजानें पहले एक भृ ंदंगी लिखा फिर गंधर्व लिखा पुनि अप्सरायें खंची तालबीन, रबाब, तंबूरा, मुहचंग, सितार, पिनाक, बांसुरी, करताल, अल गोजा, एक एक साज एक एक मूर्तिके हाथ दे दे लिखा जब संध्याका समय हुआ तब पहले एक शब्द हुआ और गंधर्व संगीत शास्त्रकी रीतिसे गाने लगे और सब साज स्वरोंके साथ

मिल मिल बाजनें लगे और ये अप्सरायें नृत्य करने लगीं और भाव बतानें इस तरहसे राजा हमेश आनंदसे रात काटताथा और दिनको यही लिखताथा इसी तरहसे यह रात दिन यहा व्यतीत करता और रनवासमे नहीं आताथा तब रानियोंके जीमें चिंता हुई कि राजा किस कारण महलमें नहीं आता ? और जुदे मंदिरमें रहता है इसका क्या सबब है यह मालूम किया चाहिये यह रानियां आपसमें मत ठान राजाका खोज लेनेको तैयार हुई और उनमेंसे चार रानियां आपसमें विचार करके कहने लगीं कि हमारा जीनाभी धिक्कारकासा है और जगमेभी हमको धिक्कार है कि राजा हमे छोड़ यहां बैठ रहा है और हम यहां विरहमें दुःख पाती हैं इतने दिनों तो हम दुःख भरीं पर अब एक दिनभरभी बिन प्रियतम नहीं रहा जाता यह बिचार कर रातको सवार हो जिस मंदिरमें राजा बैठा कौतुक देख रहाथा ये भी यहां आ पहुँचीं और हाथ जोड़ बिनती कर कहनेलगीं कि, महाराज! हमसे क्या अपराध हुआ है ? जो आप हमारी सूरत बिसरा यहां बैठ रहे हैं यह सुन राजा हँसकर बोला कि, सुनो सुंदरियो! तुम्हे किसने सताया है और किस कारण तुम यहां आई क्या तुम्हे किसीनें कुछ कहा है कि यह तुम्हारा मुखचंद्र मलीन हो रहा है ? राजाकी यह बात सुन शिर निहुड़ाके उन्होनें कहा कि स्वामी! जो बात है

सो आपके सन्मुख हम प्रकाश करती हैं तब राजानें कहा अच्छा, जो कुछ कहना हो सो कहो सब उन्हमेंसे एक रानी जो चतुरा थी सो बोली महाराज! हम अवला हैं और कभी कुछ नहीं देखा सुखहीमें उमर गँवाई और अब विरहमें काम निशिदिन हमे दहता है सो यह दुःख हम तुम्हारे सिवा किससे कहें! इस व्यथासे हमे आप बचाइयो और आपनें हमसे वचन कियाथा कि हम तुम्हें पीठ न देंगे सो इतनी मुद्दतसे तुमने बिसार दिया इतने दिनोंतलक जिस तरह हुआ हमने वियोग मारा अब हममें बल नहीं कि अब वियोग सहन करेंगे इसी तरहकी बातें करती हुई तो सुबह होगई और वे सब मूर्ते फिर नकशीदार और दीवाले होगई तब रानियोंने कहा कि महाराज! जबसे तुमनें मंदिर छोडा तबसे दुःखही सदा रन वासमें हो रहा है और उन रानियोंका पाप आपको लगता है क्योंकि सब आपहीके आसरेमे हैं ये बातें सुन राजा हँसकर बोला कि अब जीमे तुम प्रसन्न हो जो तुम कहोगी सोही हम करेंग और जो मांगो सो हम देंगे सब रानियां खुश होकर बोलीं महाराज! हमारे मांगनसे जो आप देंगे तो हम मागें राजाने कहा जो तुम मांगोगी सो हम देंगे रानियोंने कहा महाराज! यह जो खडिया आपके हाथमे है सो हमे दो यह सुनतेही राजाने आनंदसे हयालेकी रानियोंनें लेली और

छिपा रक्खी फिर सवार हो अपने अपने महलमें आई और राजाभी आकर दाखिल हुआ और अपना राजकाज करने लगा इतनी कथा कह रूपरेखा पुतली बोली कि सुन राजा भोज! ऐसा पदार्थ देखे राजानें विलंब न किया और ऐसी विद्या तू कहा पावेगा और जो पावेगा तो तुझसे दी नहीं जायगी इससे इस आसनके ऊपर बैठनेका तू भदय छोड़दे मै तुझसे सच कहतीहूं तू बौरा न जा, और इस योग तू नहीं यहभी सायत गुजर गई, राजा उठकर यहांसे महलमें दाखिल हुआ तमाम रात सोचमें गुजरगई सुबह उठ स्नान पूजासे फरागत कर फिर उसी मकानमें आया सिंहासनके पास खड़ा हो चाहा कि पांय उठाकर धरें इतनमें तारा नामक—

उन्नीसवीं—

पुतली बोली – कि हे राजा! तू अज्ञानी बादशा होकर यह क्या करता है? पहले मै तुझसे एक बात कहतीहूं सो सुनकर पीछे और विचार कर जो तुम इस सिंहासनपर चरण रक्खोगे तो सबके अपराधी होग, मुझपर पग दिया था राजा विक्रमादित्यने तून अपने जीमें क्या विचारा है? जो यह इरादा करके आया है! मेरा हृदय जो है सो कवल कमल है और मधुकर वीर विक्रमादित्य था तू गोबरका कीड़ा है और मुझपर पांव किस तरह रक्खेगा! राजा बोला सुन बाला! तूने मुझे गोबरका

क्रीड़ा क्यों कर आना ? तब पुतली बोली सुन राजा भोज ! एक दिनकी कथा एक ब्राह्मण सामुद्रिक नाम सामुद्रिक पढ़ा हुआ था बनमें चला जाताथा उसके बराबर दुनियामें कोई और पंडित न था अनेक अनेक विद्याके भेद जानताथा उसनें दर्याफ्त किया कि इस रस्ते कोई आदमी गया है जब उसके निशान पांवके देखे तो उसमें ऊर्ध्वरेखा और कमलका चिन्ह नजर आया तब वह अपने जीमें विचार करनें लगा कि कोई राजा नंगे पाव इस रस्तेसे गुजरा है इसको देखा चाहिये कि वह कहां गया है ? यह विचार कर उन पांवोंका निशान देखता हुवा जब कोशभर आ पहुँचा तो उस बनमें देखा कि एक आदमी दरख्तसे लकड़ियां तोड़कर गठड़ी बांध रहा है तब ब्राह्मण उसके पास जाकर खड़ा हुआ और पूछा कि तू यहां इस बनमें कबसे आया है ? यह बोला महाराज ! दो घड़ी रात रहेसे इधर आयाहूं तब ब्राह्मणनें पूछा कि, तूनें किसीको इस राहसे जाते देखा है कि नहीं ? उसने कहा कि महाराज ! मै जिस समयसे यहां आयाहूं तबसे इस बनमें मनुष्यका तो जिक्र क्या है कोई पंछी भी नजर नहीं आया तब फिर उस ब्राह्म णनें कहा कि देखूं तेरा पांव यह सुनकर पांव उसने आगे रख दिया और ब्राह्मण सब चिन्ह देख देखकर अपनें जीमे कहने लगा कि, यह सबब क्या है कि सब लक्षण इसमें

राजाके हैं और यह इतना दुःखी क्यों है ? फिर उसने पूंछा कि कितने दिनोंसे तू यह काम करता है ? उसने कहा जबसे मैंने होश सँभाला है तबसे यही उद्यम करके खाताहूं और राजा वीर विक्रमादित्यके नगरमें रहताहूं ब्राह्मणने पूंछा कि तू बहुत दुःख पाता है यह बोला महाराज ! यह भगवतकी इच्छा है कि किसीको हाथीपर चढ़ावे और किसीको पैदल फिरावे किसीको धन दौलत विन मांगे दे और किसीको भीख मांगे टुकड़ाभी न मिले कोई सुखमें चैन करते हैं कोई दुःखमें घीरा रहते हैं भगवतकी गति किसीसे नहीं जानी जाती कि कौन रूप किसमे रचा है और जो कर्ममें लिख दिया है सो मनुष्यको भुगतना होताहै ? उसके हाथ सुख दुःख हैं इसमें किसीका कुछ जोर नहीं चलता उससे यह बातें सुन और यह चिन्ह देख ब्राह्मणने अपने जीमें अचरज किया कहा कि मैंने बड़ी मेह नतसे विद्या पढ़ीथी सो मेरा श्रम व्यर्थ गया और सामुद्रिकमें जो विधि लिखी है पुरुषके लक्षण देखनेकी सो झूंठ गँवाई और यह कह मनमें मलीन हो विचार करता राजाके पास चला कि जाकर उसकाभी पाय देखूं कि उसमेभी निशान हैं या नहीं ? और जो लक्षण पोथीके प्रमाण न मिलें तो सब पोथियां फाड़ जला संन्यासी हो तीर्थयात्राको चला जाऊं फिर संसारमें रहनेसे कुछ अर्थ नहीं आर न मानूंगा क्यों कि इतनी मुद्दतकी मेह

नर झूठ कर्मके पीछे गँवाई तो आगे संसारमें क्या फल मिलेगा ? उससे भगवद्भजन करना अच्छा है इस लिये कि, स्वार्थ न हो तो परमार्थ तो होगा यह विचार करता करता राजाके पास आकर पहुँचा और राजाको आसीस दी तब राजानें दंडवत् करके कहा कि, देवता ! तुम इतना मन मलीन होगये इसका कारण क्या ? क्या दुःख मनमे तुम्हारे उपजा है ? सो मुझसे कहो ! ब्राह्मणने कहा कि राजा ! तू पहले अपना चरण मुझे दिखा तो मेरे चित्तका संदेह जाय तब राजानें अपना पांव ब्राह्मणको दिखाया और उसने कुछ लक्षण उसमें न पाया यह देख सीस नवाय चुप होरहा और अपने जीमें कहने लगा कि पोथियां सब अला संसारको त्याग वैराग्य ले देश देश फिरिये यह तो अपने जीमें विचारकर रहाथा राजाने कहा पंडित ! तू क्यों सोचकर शिर डुलाय पछताय चुप हो रहा है ? अपनें मनकी बात मुझे कह कि तूने अपने मनमें क्या ठानी है ? तब ब्राह्मण बोला कि सुनो महाराज ! मर पास सामुद्रिक पोथी है और बारह बरस मैंने पढ़कर याद की है सो मेहनत मेरी निष्फल गई इस वास्ते संसारस मेरा जी उदास हुआ है राजानें हँसकर कहा कि, यह तुमन प्रत्यक्ष क्यों कर देखा यह बोला महाराज ! एक मैन बडा दुःखी देखा कि जिसके पायमें ऊर्ध्व रेखा और कमल था और उसकी रोजी यह

थी कि, लकड़ियां बनमेसे लाता और बेचकर खाता यह देखकर मैंने जो तेरा पांव देखा तो कोई अच्छा लक्षण न पाया और तू सारे नगरका राज करता है इससे मेरे जीमें क्रोध हुआ है इससे अब घर जाकर ग्रंथ जला देश त्याग करूंगा राजाने कहा ब्राह्मण! सुन मै तुझे बुझाकर कहता हूं और ग्रंथ साधकर तुझे दिखलाताहूं तब तेरा जी पतिआवेगा किसीके लक्षण गुप्त होते हैं और किसीके प्रकट. तब ब्राह्मणनें कहा महाराज! यह मै किस तरहसे जानूं तबहीं राजाने छूरी मँगवा तलुवोंकी खाल चीर लक्षण दिखला दिये ब्राह्मणने देखा कि कमल और ऊर्ध्वरेखा है यह देखकर उसके जीको संतोष हुआ और कहा कि हे विप्र! ऐसी विद्या पढ़ी हुई किस काम आती है कि जिसके सब भेद मालूम न हों इस तरहके लक्षण देख ब्राह्मण आधाक् हुआ फिर राजाको आसीस दे अपनें घरको गया इतना किस्सा कह पुतली बोली कि सुन राजा भोज! कब इस योग तू हुआ! जो सिंहासनपर बैठनेकी इच्छा करता है! और जो इतना साहस करे सोही इस सिंहासनपर बैठे नाम धर्म बड़ा आदमीके जानेसे नहीं जाता जैसा फूल नहीं रहता और उसकी सुगंध मतरमें रह जाती है यह सुनकर राजाको कुछ खेद हुआ और कहने लगा कि, यह संसार स्थिर नहीं जैसी तरुवरकी छांह है वैसीही दुनियाकी गति है जिस

तरह चंद्र सूर्य आते जाते हैं उसी तरह मनुष्यका जीना मरना है जैसे कोई सपनेमे कौतुक देखता है वैसाही जगका रूप नजर आता है और मनुष्यदेह धरके अनेक दुःख भोग करते हैं पर सुख यह है कि जो हरिभजन हो इतना ज्ञान राजा अपने जीमें विचार वहास उठ अपने मंदिरमें गया रात जैसी तैसी काटी प्रभात होवेही फिर वहां आन मौजूद हुआ और पुत ळियोंमें पूछा कि अब मैं क्या करूं! तुम मुझे कहो तब चंद्र–ज्योति नामवाळी—

वीसवीं पुतली—

कहन लगी–महाराज! मै समझाकर कथा आपके आग कहतीहूं एकदिन राजा वीर विक्रमादित्यने खुश होकर राजमं-डळीके प्रधानको आज्ञा दी कि यह कातिकमहीना धर्मका महीना है इसमें कुछ हरिका भजन मन लगाकर करना चाहिये शरद-पूनोको ठाकुरकी रासलीला करो प्रधाननें राजाकी आज्ञा पाय दश देशके राजा और पंडितोंको नौता भेज बुलाया और जितन नगरके योगी थे उनकोभी खबर दे न्योत किया और जितन देवता थ उनकोभी मत्रोंसे आवाहन करके बिठलाया रास होन लगा चारों ओरसे जयजयकारशब्द होन लगा और राजा एक पत्रका शिष्टाचार मनुहार करकेर फूलमाला ठाकु-रका प्रसाद देनें लगा राजानें देखा सब देवता आय पर चंद्रमा

नहीं आये यह अपनें जीमें विचार बेतालपर सवार हो चंद्र-लोकको गया वहां जा सन्मुख हो दंडवत् की और हाथ जोड़कर कहा स्वामी! मेरा क्या अपराध है? जो आपने कृपा न की और सबने मेरेपर कृपा की है तुम्हारे विना मेरा काम आधा है अब काम मेरा सुधारिये आपको धर्म होगा तुम्हें संसारमें यश और कीर्ति मिलेगी जो कदाचित् आप इसमें विलंब कीजियेगा तो मै हत्या दूंगा तब चंद्रमाने हँसकर कोमल मधुर वचनसे कहा राजा! मै तुमसे सत्यकर कहताहूं तू अपनें जीमें उदास न हो मेरे आनेसे संसारमें अंधकार होजायगा इसलिये मेरा आना नहीं बनता तुझे अभिलाषा थी मेरे दर्शनकी सो तेरी इच्छा पूरी होगई और तेरा काम सुफल होगा तू अपनें नगरमें जा जो काम तूनें आरंभ किया है सो पूर्ण कर इस तरहसे राजाको समझा अमृत दे विदा किया राजानें शिर चढ़ा ले लिया और दंडवत् कर अपनें नगरको चला रास्तेमे देखा कि यमराजके दो दूत एक ब्राह्मणका जीव लिये जाते हैं राजानें यह देवदृष्टिसें जाना और उस ब्राह्मणके जीवनें राजाको देख दूतस कहा कि हम राजाकों भेटना है राजानें उस ब्राह्मणकी आवाज सुनकर कहा कि भाई तुम कौन हो? तब उन दोनोंनें समझाकर राजासे कहा कि हम यमके भेजसे उज्जैन नगरीको गये थ ब्राह्मणका जीव लेकर अपने स्वामीके पास जाते

है राजानें उससे कहा पहले उस ब्राह्मणको तुम हमे दिखा दो और पीछे अपने कामको जाओ ये दूत राजाको साथ ले नगरमें गये जहां उस ब्राह्मणका देह पड़ा था वहां दिखाया राजा देखतेही उस ब्राह्मणका शीस निहुड़ा अपने मनमें कहने लगा कि, यह तो हमाराही पुरोहित है तब राजानें दूतोंको बातोंमें लगा नजर बचा वह अमृत उसके मुहमें डाल दिया ब्राह्मण रामका नाम ले उठ खड़ा हुआ ब्राह्मणने राजाको प्रणाम कर-सही आसीस दिया और दूतोंसे हाथ जोड़ बिनती कर कहा कि यह जीवदान मैंने तुमसे पाया यह देखकर दूतोंनें अपने जीमें अचंभा किया कि अब हम जाकर क्या जबाब देवेंगे ? यह विचार करते हुए दूतोंनें यमराजके पास आ सब राहकी अवस्था कही यम सुनकर चुप होरहा और राजा ब्राह्मणका हाथ पकड़ अपनें मंदिरको लाया और बहुतसा दान दे उसको विदा किया यह कथा सुनाकर चन्द्रज्योति नाम पुतली बोली कि ऐ राजा भोज ! ऐसा पुरुषार्थ तू कर सक तो इस आसनपर बैठ नहीं तो उसके बयालस दर गुजर इस तरहसे सुन राजा वहांसे उठ अपने मंदिरमें आया रात तो जिस तिस तरहसे काटी सुबह होतेही स्नान ध्यानकर तैयार हो फिर सिंहासनके पास आ खड़ा हुआ चाहता था कि उठकर पांव धरै तब मनरोधवती नामवाली—

इक्कीसवीं पुतली–

बोली–हे राजा! क्या तू अपनी बड़ाई करता है? और इस अनीतिकी कौनसी बड़ाई है? पहले मुझसे बात सुन ले पीछे उसपर बैठ, माधवनाम एक बड़ा गुणी ब्राह्मण था उसकी तारीफ हो नहीं सकती जो मैं करूं. वह योगी होकर तमाम पृथ्वीमें फिर कर आया कहीं ठहरकर रहने न पाया मानो वह कामदेवकाही अवतार था स्त्री देखतेही उसे मोहित हो जाती थी ऐ राजा! वह सब विद्या पढ़ा था और अति चतुर था मर्त्यलोकमे वैसे मनुष्य कम पैदा होते हैं जिस राजाकी सेवा करनेको जाता था वहां पहले तो उसका आदर मान होता था और जब वह अपने गुणको प्रकाश करता तब वह राजा उसको देशसे निकाल देता इस तरहसे देश देश भटकता दुःख पाता फिरता था कई एक दिनमें वह कामा नगरीमें आन पहुँचा उस नगरीका राजा कामसेन नाम था उसके यहां कामकंदला नाम एक रंडी थी वह गोया उर्वशीकाही अवतार थी गन्धर्वविद्यामें बड़ चतुर थी माधवभी उसी राजाके द्वारेपर जा पहुँचा द्वारपालोंसे कहा राजाको जाकर हमारा समाचार कहो आपके दर्शनको एक ब्राह्मण आया है डयढ़ीदार उसकी बात सुनी अनसुनी करगया वह ब्राह्मण वहीं बैठ गया ज्यों ज्यों वहांसे मृदंगका आवाज आर गानकी ध्वनि आती थी त्यों त्यों वह सिर

धुन २ कर कहताथा कि राजा भी मूर्ख है और उसकी सभा भी मूर्खोंकी है जो विचार नहीं करती यही बात पांच सात दफे कही द्वारपाल सफा हो ब्राह्मणको देख राजाके डरसें कुछ कह तो नसके पर राजाके सन्मुख आ हाथ जोडकर खडे हुए. महाराजने जो उनकी तरफ देखा तब उन्होंने विनती करके कहा कि महाराज द्वारपर एक ब्राह्मण विदेशी दुर्बल द्वारपर आन बैठा है ! शिर डुला डुलाकर बैठा है और कहता है कि यह राजा और उसकी सभाके लोग अति मूर्ख हैं जो गुण विचार नहीं करते तब राजानें उन द्वारपालोंसे कहा कि जाकर उसे पूंछो उनको मूर्ख तूनें किस लिये कहा? उन्होंनें राजाकी आज्ञा पाय पौरपर आय ब्राह्मणसे पूंछा महाराजने आज्ञाकी है कि उनके गुणमे दोष कौनसा है ? यह तुम बताओ तो हम तुम्हारी बात सचजाने उसने कहा बारह आदमी चार चार तीन तरफमें खडे हुए जो मृदंग बजाते हैं तिनमेंसे पूर्व मुखवालोंमें एक मृदंगीके अँगूठा नहीं है इससे समपर थाप हलकी पडती है इससे मैने सबको मूढ कहा है न मानो तो तुम जाकर यह सच है या नहीं सो देखो वे दौडे हुये राजाके पास आये और सब बातें राजासे सुनाई. तब राजाने पूर्वमुखके चारों मृदंगियोंको बुला एक एकका हाथ देखलिया उन्होंमें एकका अँगूठा मोमका बनाकर

लगाया गयाथा यह तमाशा राजा देख बहुत प्रसन्न हुआ और ब्राह्मणको ऊपर बुलाया वह आकर सम्मुख हुआ तब राजाने दंडवत किया और उसने आसीस दी फिर शिष्टाचार कर गद्दीपर बिठाया जैसे वस्त्र आभूपण आप पहने थे वैसही मँगवाकर ब्राह्मणको पहनाये और कामकंदलाको बुलाकर आज्ञाकी कि यह महागुणी है इसलिये इसके आगे अपना गुण तू प्रकाश कर कि जिससे यह प्रसन्न होवे कामकंदला राजाकी आज्ञा पाय अपना गुण जाहिर करने लगी उसने संगीत नृत्यका आरंभ किया सीसे रंगके भरे हुए सीसपर धर मुहसे मोती पिरोती हुई हाथोंसे बड़े उछालती हुई और सब साज स्वर मिलाये हुई नाचती थी इसमें फूलोंकी और अतरकी खुशबू पाकर एक भौंरा उड़ता हुआ आकर उसके कुचकी भिटनीपर बैठा और डंक मारा, उसके बदनमें पीर हुई तब विचारा जो कुछभी हरकत करती हू तो ताल भंग होगा और मेरे गुणकी हँसी हो जायगी इतना जीमें सोच भंडार चिथाकर श्वासरोक कुचकी राह निकाली पवन लगतेही वह भौंरा उड़ गया तब माधव उस गुणको देखतेही मोहित होकर बोला कि, हे सुंदरी ! धन्य है तुझे और तेरे करतबको यह कहके प्रसन्न होकर वस्त्र और आभूपण जो राजाने दियथे वह सब उतार उसको दिये यह देख राजा और मंत्री आपसमें

कहने लगे कि, देखो इस ब्राह्मणनें क्या मूर्खता की है इस
वेश्याको ये कपड़े और तमाम जवाहिर एक आनमें बक्स दिया,
यह आतका भिखारी यहां हमारे आगे सखावत दिखाता है
तब राजानें खफा हो ब्राह्मणसे पूछा कि तू इसके किस गुणपर
रीझा यह मेरे आगे बयाना कर ब्राह्मणने कहा सुन राजा तूभी
मूर्ख है और तेरी सभाभी मूढ़ है तेरी सभामें यह ऐसा गुण
प्रकाश करे सोभी कोई नहीं जानता क्योंकि इसके कुचपर भौंरा
आन बैठाया सो इसनें अपनी श्वासरोक कुचकी राह निकाल
उस बड़ा दिया यह इसका चतुरताका काम देख सब कुछ
मैंने इसे बक्स दिया माधवनें जब यह बात कही तब राजा
लज्जित हो बोला कि इसी समय मेरे नगरसे निकलजा
अब जो सुनूंगा कि तू इस नगरमें है तो मैं बँधवाकर दरियामें
डुबा दूंगा तब माधवनें कहा महाराज ! मुझसे ऐसा क्या
अपराध हुआ है ! जो आप मुझे देशस निकाले देतेहो राजानें
कहा मैंन जो कुछ तुझे दियाथा सो तूने मेरेही आगे दानकर
दिया क्या मेरे पास दनको कुछ न था जो तूने दिया यह
सुनकर माधव मनमें मलीन हो राजसभासे निकल बाहरजा
एक वृक्षके नीच व्याकुल खड़ाहोकर अपने जीमें कहने
लगा कि, माता बटको विष दे और पिता पुत्रको बेच और
राजा सर्वस्व ले तो कोई शरण किसकी ले फिर कहने लगा

कि राजानें मुझे निकाला अब मै कहां रहूं यों अनेक भांतिकी चिंताकर कामकंदलाका नाम लेके रोताथा और इधर काम कंदलाभी राजासे बहाना करके बिदा हुई और एक आदमी दौड़ाया कि यह ब्राह्मण बाहर जाने न पावे उसे ढूंढके लाकर मेरे मकानमें बिठा, वह आदमी गया और ब्राह्मणको ले जाकर कामकंदलाके मंदिरमें बिठा दिया इधरसे यह भी तुरत आ पहुँची और वह दोनों आपसमे बैठकर प्रेमकी बातें करने लगे तब उस ब्राह्मणने कहा मुझे राजाने देशसे निकाल दिया है और तूने अपने घरमे मुझा बिठलाया जो यह बात राजा सुनेगा तो मेरा प्राण पहिलेही जायगा इससे मै तो दुःखसे छूटूंगा पर तुझेभी राजा अतिकष्ट देगा इसमे ऐसी बात करनी उचित नहीं है कि अपनी तो जान जाय और जगमे हँसाई होय इसवास्ते प्रेम जो है सो दुःखकी खान है जिसनें प्रेमके पैंड़ेमें पांव दिया उसने कभीही सुख न पाया, ये बातें माधवके मुखसे सुनकर कामकंदलाने कहा कि, अब तो मै इस पंथमे आई जो कुछ करे सो भगवान् है इतना कह सब साज बाज घरसे मँगवाकर अपनी विद्या जाहिर करने लगी जितनी विद्या उसे याद थी उतनी ही जब प्रकाश कर चुकी तब माधवने उन्हे पंत्रोंके साथ अपने पास जो गुण था सोही सब प्रकाश करके दिखाया जब रात थोड़ीसी रहगई तब

कामकंदलाने कहा कि, महाराज! तुमने तो श्रम बहुत किया अब चलकर आराम कीजिये यह कह माधवको रंगमहलमें ले गई और जितनी खुशी थी सो सब की जब सुबह हुआ तब दोनोंके जीमें राजाकी बात याद आई और सुध बुध जाती रही तब घबराकर माधवनें कहा कि सुन सुंदरी! रात तो आनंदसे कटी और अब जो मै यहां रहूंगा तो दोनोंके प्राण जांयगे इसवास्ते अब कुछ यत्न कीजिये, जिससे निर्विघ्न आनंदसे रहेंगे मैने एक बात जीमें विचारी है अब मै यहांसे पहले जाऊं और कुछ उपाय कर फिर आकर तुझेभी यहांसे ले जाऊंगा तू अपना जी मजबूतसे रखना मै जरूर आकर तुझसे मिलूंगा यह वचन मै तुझे देकर जाताहूं इतनी बातें सुनतेही वह तो मूर्च्छा खाके गिर पडी और माधवने उठकर उठकर राह ली और वहांसे निकलके बन बन फिरनें लगा और हाय कामकंदला! हाय कामकंदला! करने लगा इधर इसेभी सखियोंने गुलाबका नीर छिड़क कर उठाया जब कुछ होश आया तब वह भी माधव माधव पुकारने लगी और खाना पीना सब त्याग किया बहुतेरा सखिया समझाती थी पर उसके जीमें एक न आती थी ज्यों ज्यों गुलाब वा कपूर चंदन लालाकर लगाती थी त्यों त्यों दाह चौगुनी बढ़तीथी किसी तरहसे शीतलता न होतीथी जब कोई माधवका नाम और गुण सुनताया तबही

उसे जरा आराम आताथा उधर माधवभी भटक भटक अपने जीमें विचारने लगा कि अब संसारमें कौन है ? जिसके निकट जाईये जो हमारा दुःख दूर करे तब उसमेंही उसे याद आया कि, आजतक हम सुनते हैं कि राजा वीरविक्रमादित्य परदुःखनिवारक है भला उसके पास जाइये और देखिये कि लोग सच कहते हैं या झूंठ ! यह मनमें विचारकर उज्जैन नगरीको चला गया और वहां जाकर लोगोंसे पूंछा कि यहां राजाकी भेंट आधीन की क्योंकर होसकती है ! तब उस नगरका वासी बोला कि गोदावरी नदीके किनारे शिवजीका मठ है, उस मठमे राजा शिवजीके दर्शनको नित आता है, वहां तू जा तो तेरा मनोरथ पूर्ण होगा यह सुनकर वह गया और उस मठके द्वारेकी चौखटपर लिखा कि मैं ब्राह्मण विदेशी अतिदुःखित हूं और विरहसे व्याकुल हो तुम्हारे नगरमें आया हूं, यह सुनकर कि राजा परदुःखनिवारक है और जो यह दुःख मेरा जायगा तोही मैं अपना प्राण रक्खूंगा नहीं तो तीसरे दिन गोदावरीमें प्राणत्याग करूंगा यह विचार मुकर्रर जीमे मैने ठहराया है कि तुम राजा हो और सदा गौब्राह्मणकी रक्षा करते आये हो और अबभी करोगे इस वास्ते मैने अपने मनकी बात सब प्रकाश करदी है इतनी बातें कह पुतलीने राजा भोजसे कहा कि सुन राजाभोज !

राजा वीरविक्रमादित्यका यह नेम था कि अन्नदुःखी, वस्त्र-दुःखी, द्रव्यदुःखी, भूमिदुःखी, विरहदुःखी और किसी तरहका दुःखी नगरमें आवे तो राजा सुनकर जबतक उसका दुःख न मिटा देता तबतक जलका तो क्या जिक्र है? पर द-तूनभी न चीरताथा, सबेरे राजा महादेवजीके दर्शनको गया तो दर्शन कर परिक्रमा करने लगा अब राजा ऊंची दृष्टि करके देखे तो कोई दुःखी अपने दुःखकी अवस्था लिख गया है राजाने सब बांच महादेवजीको दंडवत कर मंदिरमें आया और सेवकको आज्ञाकी कि माधवनाम ब्राह्मण हमारे नगरमें आया है इसवास्ते जो कोई उसे ढूंढ़ लावे तो मुहमांगा द्रव्य पावेगा ऐसा कहा, यह बात सुन लोगोंने नगरमें ढूढ़नेको निकले घाट घाट टोला महल्लाः वा बगीचे सब नगर ढूंढ़ फिरे कहीं ठिकाना उसका न पाया तब राजाने एक दूतीको बुलाकर आज्ञा की कि जो तू उसे ढूंढ़ लावे तो मुहमांगा द्रव्य पावे उसने कहा महाराज! यह क्या कठिन बात है अभी जाकर ढूंढ़ लाती हूं यह कह उसने लिखाथा वहां आकर मंदि-रके पास बैठरही सांझसमय वहभी भटकता हुआ आन पहुँचा उसने उसे देख मनमें विचारा कि हो नहो यह सच विरही है किस लिये कि, मुह पीला आंसू जारी तनक्षीण मन मलीन हो रहा है यह तो यही विचार कर रहीथी कि वह ब्राह्मण

वहाँ आय और एक बार हाय कामकंदला हाय कामकंदला! पुकार उठा घट उसने आ उसका हाथ पकड़ लिया और कहा मैं तेरे ढूंढनेके लिये राजाकी आज्ञा पायकर आई हूं तू उठ मेरे साथ जलदी चल तेरा मनोरथ पूरा होगा तेरे दुःखसे राजा निपट निपट दुःखी है यह सुनतेही उसके साथ वह होलिया उसे ले वह दूती राजाके सन्मुख आई और कहने लगी कि हे महाराज! यह वही वियोगी है जिसके लिये आपने यह दुःख पाया है तब राजानें उस ब्राह्मणसे पूंछा कि, महाराज! आप किसके वियोगसे व्याकुल हो रहे हो सो सब बात मेरे आगे कहो तब उसने एक आह भरकर कहा महाराज! कामकंदलाके वियोगसे मेरी यह गती हुई है वह राजा कामसेनके पास है तू धर्मात्मा है और मैं तेरे पास आया हूं तू मुझे उसको दिला दे तो मेरी जान बचेगी यह बात सुनतेही राजा हँसकर बोला सुन विप्र! वह तो वेश्या है तूने उसके प्रेममें अपना सब धर्म कर्म छोड़ दिया यह तुझे उचित नहीं है तब माधवने कहा महाराज! प्रेमका पंथ न्यारा है जो नर प्रेम करते हैं सो अपना तन मन धर्म कर्म सब समर्पण करते हैं प्रेमकी कहानी तो अकथ है यह मुझसे नहीं कही जाती राजाने ये बातें सुनीं और उसे अपने साथ ले मंदिरमें गया और सब रानियोंको आज्ञा की कि तुम

बनाव सिंगार करके आओ रानियां जब सिंगार कर आई तब उस विप्रसे राजाने कहा इनमेसे जिसे तुम्हारी इच्छा होगी उसको लो और अपने मनमें दुःख न कर चैन करो तब उसने जबाब दिया कि महाराज! मैं आपके आगे सत्य कहताहूं कि मेरी आंखोंमें वह बस रही है इस लिये और कुछ मेरी दृष्टिमें नहीं आता चातककी तृषा स्वातीके बूंदसे बुझती है और जलपर उसे रुचि नही वैसी है प्रेमकी दृढ़ता यह दृढ़ता विप्रकी देख राजाने अपने मनमें विचारा कि, इसे साथ ले जाकर कामकंदलाको दिखाऊं अन्यथा इसके मनको स्थिरता नहीं होगी यह बात राजाने विचार विप्रसे कहा देवता! तुम स्नान पूजा कर कुछ खाओ तब तलक मैंभी अपने लोगोंको बुला तुझे साथ ले चलूंगा और उसे तुझे दिखाऊंगा तू अपने मनमें किसी बातकी चिंता मतकर चैन तुझसे यह बचन किया तब विप्र अपने खाने पीनेमें लगा और राजानें प्रधानको बुलाकर आज्ञाकी कि मेरे डेरे नगरके बाहर निकालो चार घड़ीके बाद कामनगरकी तरफ मेरा कूच है इस वास्ते सबको खबरदो इसमें कितनी एक देरके पीछे राजाभी तैयार हो विप्रको साथ ले कूंचकर डेरोंमें आ दाखिल हुआ और जितने राजाके नौकर थे वह सब रिकाबमें हाजिर थे राजा वहांसे कूच दरकूच आजाया कितने एक मंजिलोंके बाद कामा नगरीके दस कोस इधर डेरा किया

और उस राजाको पत्र लिखा कि हम इस लिये आये हैं तुम्हारे यहाँ जो कामकंदला वेश्या है उसे हमारे पास भेजदो नहीं तो हमसे युद्ध करनेका सामान करो यह पत्र लिख एक दूतके हाथ राजा कामसेनके पास भेज दिया राजाको खबर हुई कि एक दूत राजा वीरविक्रमादित्यका खत लेकर आया है यह सुनतेही राजाने उसको सन्मुख बुलाया और उसने आ जुहार कर खत राजाके हाथ दिया राजानें उस चिट्ठीको बांचकर कहा कि अच्छा कहो अपनें राजासे कि चले आवें हम युद्ध करनेको तैयार हुए हैं दूतने आ राजासे कहा महाराज ! वह लडनेको तैयार है तब राजाने भी हुक्म अपनें लोगोंको दिया कि हमाराभी दल तैयार हो फिर राजाके जीमें आया कि जिसके वास्ते हम आये हैं उसकी प्रीतिकी परीक्षा लिया चाहिये इस तरह जीमें ठहराया और आप वैद्यका सर्वांग धन कामनग रीमें गया और लोगोंसे मकान कामकंदलाका पूछ दरवाजे पर आ वैद्य हकीम कर पुकारा इनका अवाज सुनतेही एक दासी बाहर निकल आई और पूंछा कि तुम वैद्य हो तो हमारी नायकाका कुछ इलाज करो जो वह अच्छी होयेगी तो तुम्हे बहुतसे रुपैया मिलेंगे ये बातें कह दासी उससे विदा हो गई और वह उसके साथ कामकंदलाके सन्मुख गया राजाने देखा कि निर्जीव पड़ी है राजानें उसकी नाडी देखकर कहा कि

इसके यही रोग और कुछ नहीं इनको तो प्रियतमका वियोग है जिससे इसकी यह गति बनी है यह बात सुन कामकंदलानें आँखें खोल उसकी तरफ देखा और कहा कि इसका कुछ इलाज तुम्हारे पास होय सो करो तब उसनें कहा कि इसका इलाज तो था पर इसमे हमे कुछ कहते बन नहीं आता तब यह बोली तुम्हारे पास इलाज क्या था ? यह बताओ राजानें कहा माधव नाम एक ब्राह्मण था उसे हमनें उज्जैन नगरीमे विरह वियोगी अति शोकी देखा सो वह दुःख पाय मर गया यह सुनतेही हाय कर उसने भी अपना प्राण छोड दिया जितनी दासी दास उसके घरमे थे यह दशा देख शिर पीट पीट सब रोनें लगे तब इन्होने कहा कि तुम कुछ चिंता अपने मनमें मत करो इसे मूर्छा आई है कितनी देरमें सुध आवेगी तुम इसकी चौकसी करते रहो मैं जाकर अपनें घरसे औषध लाऊं ऐसा कह राजा उलटा फिर अपनें दलमें आया और माधवके आगे उसके मरनेकी खबर कही सुनतेही एक आहके साथ उसकी भी जान निकल गई यह देखकर राजा अपने जीमें पछताया विचार करने लगा कि, जिसके वास्ते इतनी सेना साजके परभूमिमें आया और इसे इस तरह खो दिया यह हत्या मेरे पर हुई अब अपना भी प्राण रखना उचित नहीं यह बात जीमें ला बहुतसा चंदन मँगवा चिता बनाय राजा

जीताही जलनेको तैयार हुआ दीवान और प्रधानने कितना मना किया पर न माना जो चाहे कि उस चितामे बैठ कर आग लगावें कि बेतालने आ हाथ पकड़ लिया और कहा कि हे राजा! तू अपना जी क्यों देता है? तब इसने कहा कि दोकी जान मैने जानके खोई अब मेरा भी जीना संसारमें उचित नहीं इस बदनामीके जीनेसे मरनाही उत्तम है. तब बेतालने कहा कि राजा मैं अमृत लाकर देताहूं तू दोनोंको जिलावे यह कह जल्द बेतालने पातालमें जाकर अमृत लेकर आया और उस ब्राह्मणपर छिड़काया तब वह उठा फिर ले जाकर कामकंदलापर छिड़का वहभी उठी और माधव माधव पुकारने लगी राजाकी सूरत देखकर कहा कि महाराज! तुम कौन हो? और कहांसें आये? सो मुझसे कहो तब राजाने कहा हम वीर विक्रमादित्य हैं और माधवका बिरह दूर करनेके लिये उज्जैन नगरीसे यहां आये हैं तुम अपनें मनमें खातिर जमा रक्खो कि तुम्हे हम माधवसे मिला देंगे यह बात राजाके मुखसे सुनते ही वह उठ राजाके पांवपर गिरपडी और बोली कि महाराज! यह तुम जीवदान दोगे और जैसा तुम्हारा यश सुनतीथी वैसा ही दृष्टिमें आया इतनी बात कह राजा वहांसे फिर अपने लश्करको आय मिला दूसरे दिन अपनी फौज ले कामनगरी-

राजाने हार मानी और कबूल किया कि हम कामकंदलाको भेज देंगे और यह जो हमनें युद्ध किया सो आपके दर्शनके वास्ते किया है इसलिये कि किसीतरह हमारे नगरमें आपका चरण पड़े आगे राजासे मुलाकात करके वह राजा अपने मंदिरमें विक्रमादित्यको लेगया और बहुत भेट आगे धर कामकंदलाको बुलाकर राजाके आगे खड़ी किया और उसनेभी माधवको बुला कामकंदलाका हाथ पकड़ हवाले किया फिर वहांसे कूंचकर अपने नगरमें आये और माधवको बहुत धन दौलत दे बिदा किया इतनी बातें कह अनुरोधवती पुतली बोली कि हे राजा भोज! इतनी सामर्थ्य और इतना साहस जो तुमसे हो सो सिंहासनपर बैठ नहीं तो पतित हो नरक भोग करेगा यहभी दिन राजाका टल गया दूसरे दिन वह फिर मौजूद हुआ तब अनुरेखा नामी

बाईसवीं पुतली

बोली—कि हे राजा भोज ! तू अपने मनकी चिंता छोड़दे और मै जो तेरेसे कहतीहूं सो सुन एक दिन राजा वीरविक्रमादित्य सभा कर बैठाथा और प्रधानसे पूंछा कि मनुष्य बुद्धि अपने कर्मसे पाते हैं या उनके मातापिताके सिखानेसे पाते हैं? यह सुनकर मंत्री बोला महाराज ! यह नर पूर्वजन्ममें जैसा कर्म करता है वैसा विधाता उसके कर्ममे लिख देता है तिसी

प्रमाण बुद्धि होती है, मातापिताके सिखाये बुद्धि होती नहीं कर्म लिखाही फल पाता है, आदमी आदमीको क्या सिखावे! और जो सिखेसे बुद्धि हो जाय तो सभी पंडित होजाते इससे महाराज! कर्मके लिखे बिना विद्या होती नहीं, करोड़ यत्न कोई करे पर कर्मकी रेखा मेटे मिटती नहीं, राजानें कहा ये दीवान! तूने यह क्या कहा ? संसारमें यह जो जाहिर देखते हैं कि जन्म लेतेही लड़का मातापितासे जो सुनता है और जो देखता है उसी व्योहारसे चलता है ! इसमें कर्मका लिखा क्या है ! यह सिखायेसे सीखता है और जैसे संगमें बैठता है वैसीही उसकी बुद्धि होती है इतनी बात सुन मंत्री बोला कि धर्माव तार ! आपकी बराबरी हम नहीं करसकते पर अपने मनमें विचारके तुम समझो कि कर्मका लिखा हुआ फल मिलता है तब राजानें कहा अच्छा इस बातकी परीक्षा लिया चाहिये ऐसा कह राजाने एक महावनमें मंदिर बनवाया कि जहां मनुष्यकी आवाजही नहीं जाय एक अपने बेटेको पैदा होतेही उस मंदिरमें भिजवा दिया और उसके साथ एक दाई ऐसी कर दी कि आंखोंसे अंधी, कानोंसे बहिरी मुहसें गूंगी वही उसको दुध पिलातीथी और परवरिश करतीथी फिर इसी तरहसे एक दीवानके बटेको, एक ब्राह्मणके सुतको, एक कोत वालके पुत्रको जन्मतेही गुंगी बहरी अंधी दाइयां दे उसी मंदि

रमें भिजवा दिया दिन बदिन वे बढ़ने लगे और ऐसी गादी चौकी उस मंदिरमें दोदोकोस गिर्दमें बैठादी कि मनुष्यके आनेकी तो क्या सामर्थ्यथी ! ढोल नक्कारेकीभी आवाज न जातीथी इसतरहसे बारह बरस जब बीतगये तब एकदिन ब्राह्मणीने अपने स्वामीसे कहा कि, एक युग पूरा होचुका और मैंने अपने पुत्रका मुह नहीं देखा कदाचित् जी निकल जाय तो मनमें देखनेकी अभिलाषा रहजाय इससे तुम अब राजाके निकट जाकर कहो, कि महाराज ! बारह बरस बीत गयेपर मैंने बेटेका मुह नहीं देखा अब मेरे जीमें है कि पुत्रको घर सौंपकर दंडी हो तपस्या करूं. यह ब्राह्मणकी बात सुन ब्राह्मण तयार हो राजाके पास गया राजाने देखतेही दंडवत् की और उसनेभी आसीस दी राजा बोला तुम आनंद मंगलसे हो ? ब्राह्मणने कहा कि महाराज ! आपकी कृपासे सब आनंद मंगल है पर म एक कामनाकर आपके पास आयाहूं यह सुनकर राजाने कहा कि जो तुम्हारा काम हो सो कहो तब उस ब्राह्मणने अपना सब अहवाल कहा सुनतेही राजाने प्रधानको बुलाकर आज्ञा की कि उन चार बालकोंको मँगाओ जिसको कि बारह बरस होचुके. दीवान सुनतेही तुर्त आप सवारहो लड़कोंको लेने गया पहले उनमेंसे राजकुँवरको ले आया नख और केश बढ़े हुए, शरीर तमाम मैला कुचैला, इस भेषसे राजाके सम्मुख ला खड़ा किया

तब राजाने देखकर कहा कि, सुत ! तुम कुशलसे हो ! इतने दिन तुम कहां थे ? और अब कहांसे आये ? सब ब्यौरा अपना हमसे समझकर कहो यह सुन कुँवरनें हँसकर राजासे कहा कि, आपकी कृपासे सब कुशल है और आजका दिनभी कुशलका है जो आपके दर्शन पाये यह कुँवरकी बात सुनकर अपने मनमें हर्षित हो राजाने मंत्रीकी तरफ देखा तो मंत्री उठ हाथ जोड़करके बोला कि, महाराज ! यह सब कर्महीका लिखा है फिर दीवानके पुत्रको बुलवाया वह आकर राजाके सम्मुख भयानक भेषसे खड़ा हुआ जैसे बनसे भालूकको पकड़लाते हैं मुखपर बाल उसी तरह बढ़े हुए शरमसे नीचीगरदन किये खड़ाथा तब उनको राजाने कहा कि, तुम अपनी कुशल कहो कहां थे ? और किधरसे आये हो ? तब वह बोला, महाराज ! कुशल क्षेम कहां होगी ! उधर संसारमें उपजे है इधर विनसे है जैसे घड़ी भरती और डूब जाती है नर जानता है दिन जाते हैं पर नर जाता है यही जगतका व्यौहार है इससे कुशल क्षेम काहेकी कहूं ? ये उसकी बातें सुन राजाने दीवानसे कहा इसे यह किसने सिखाया है ? जो कुछ तूने कहाया यह सब सच है यह फल कर्मसेही इसने पाया फिर राजाने कोतवालके बेटेको बुलवाया उसने आतेही राजाको सलाम किया और हाथ जोड़ खड़ा हुआ राजानें कुशल पूंछी तब उसनें कहा

पृथ्वीनाथ! दिनरात नगरका पहरा हम देते हैं इसमेंभी चोर
आन चोरी करता है यदनाम हम होते हैं बिना अपराध
कलंक लगे तो फिर कुशल काहेकी है? राजाने फिर ब्राह्मणके
बेटको बुलाया जब वह सन्मुख आया तब राजाने दंडवत् की
वो मंत्र पढ़ आशिष् देने लगा तब राजाने कहा आप कुशल
क्षेमसे हैं? उसने कहा महाराज! आप पूंछते हैं मुझसे यह बात
कि तेरे शरीरमें कुशल है सो कुशल कहांसे हो? मेरे शरीरकी
दिन बदिन उमर घटती है महाराज! कुशल तो तब कहनेमें आवे
कि मनुष्य चिरंजीव होवे जिसके जीवन मरण साथ है उसको
क्या खुशी है? चारोंकी चार बातें सुनकर दीवानसे कहा कि सच
है पढानेसे पंडित नहीं, पंडिताई जो कर्ममें लिखी हो तो मिले
यह कह दीवानके ठई सब प्रधानोंका सरदार किया और अपने
राजका भार दिया उन चारों लडकोंके विवाह कर दिये और
बहुत धन दौलत दी इतनी बात कह पुतली बोली सुन राजा
भोज! कलियुगमें ऐसा धर्मात्मा और साहसी राजा होना कठिन
है जो इतनी बुजुर्गी और धन पाय अपनी कही बातका खयाल
न करे और जो न्यायका धर्म था सोही कहे ऐसा जो तू
कर्म करे और इसके योग हो तो इस सिंहासनपर पांव धरे और
नहीं तो अपनी यह आशा तज यह पुतलीकी बातें सुन राजा अ-
पने मनमें चिंता करता हुआ वहांसे उठ मंदिरमें आया और

विचार करने लगा कि देखूं मेरा भाग्य फिरे या अभागा रहूं रात तो इसी तरह फिक्रमेंही बीतगई सुबह हुआ तब फिर राजा वहां आन मौजूद हुआ। चाहा कि पांव उठाकर सिंहासनपर धरें इतनेमें करुणावती नामवाली–

तेईसवीं पुतली–

कहने लगी सुन राजा! जो कदाचित् तू इस सिंहासनके ऊपर पांव रक्खेगा तो तुर्तही जलकर भस्म हो जायगा और तुझे लज्जा नहीं आती कि तू घड़ी घड़ी यह इरादा करके आता है और जो कोई होता तो फिर मुंह नहीं दिखता। जिस सिंहासन पर राजा वीरविक्रमादित्य बैठे हैं तिसके ऊपर बैठनेका तू मनोरथ करे हंसकी बराबरी कौवा नहीं कर सका सिंहके समान गीदड़को कोई नहीं मानता पंडितके बराबर मूर्खको नहीं जानता इस वास्ते राजा! तू निर्बुद्धि है और तुझे कुछ ज्ञान नहीं जैसे मछली थोड़े जलमें उछलती है वैसे तू थोड़ी प्रभुता पाकर इतरा चला है ऐसी ऐसी कठिन बातें सुनाकर पुतली रोने लगी राजा अपने चित्तमें चिंता कर उस पुतलीसे पूछने लगा कि, कह सुंदरी! तू क्यों रोती है? अपने जीका दुःख समझाकर मुझसे कह राजा वीरवीक्रमादित्यमें क्या गुण और पुरुषार्थ था यह सुनकर करुणावती पुतली बोली राजा! जो तुम स्थिर होकर बैठो और कान देकर सुनो तो मैं सब कथा कहतीहूं

तब राजा यह बात सुन प्रसन्न हो आसन बिछवा वहां बैठगया और जितने लोग राजाके साथ थे गिर्द ओ पेश मे सब बैठगये फिर पुतली बोली कि राजा ! वीरविक्रमादित्यके गुण तू सुन ऐसा यशी साहसी और पुण्यात्मा इस कलियुगमें कोई जन्मा नहीं और न कोई जन्मेगा जिस समय राजा वीरविक्रमादित्य शंखको मार राजगद्दीपर बैठा तब शंखके दीवानको बुलाकर कहा कि, तुमसे मेरा काम न चलेगा इससे यह बेहतर है कि, बीस दास मुझे अच्छे ढूंढकर दे कि जो राजकाज करनेके लायक हों, क्यों कि तुमसे कामका बंदोबस्त न होगा मैं उनसे अपना सब काम करा लूंगा राजाकी आज्ञा सुन दीवानजी बीस आदमी उसी नगरमेंसे ढूंढकर लाया कुलमें वमरमें सुंदरतामें सबके सब अच्छे थे उनको राजाके सामने खड़ाकर दिये तब राजा उनको देखतही बहुत प्रसन्न होगया और उसी समय सबको आगे पहना पान देकर कहा कि तुम हमारी खिदमतमें सदा हाजिर रहो फिर उसके कई दिनके बाद उनमेंसे किसीको दीवान, किसीको कोतवाल, किसीको फौजदार किया गरज इसी तरहमें हर एकको एक काम देकर पुराने लोगोंको जवाब दिया और सब नया बंदोबस्त कर दिया पर एक उस पुराने दीवानको जवाब न दिया दीवान जब अपने घरमें बैठा करता तब वे सब पुराने लोग आकर हाजिर हुआ करते और आपसमें चर्चा करते

कि, यह राजा बुद्धिमान् है जो राजको यों लिया और बंदोबस्त यों किया कई दिनके बाद उन लोगोंसे दीवानने कहा कि, तुम मेरेपास न आया करो इस लिये कि काम तो मेरे हाथ तुम्हारा निकलता नहीं और नाहकको राजा सुनेगा तो खफा होगा कि यह अपने घरमें क्या मता किया करते हैं ? इस वास्ते मैं अपनी बदनामीसे डरताहूं कुछ तुम मेरे इस कहनेका अपने मनमें बुरा न मानना यह सुनकर उनमेसे फिर कोई उसके पास न आया यह अपने मनमें कहने लगा कि ऐसा कुछ काम कीजिये जिससे संतुष्ट हो रैनदिन यही विचार करता रहा था एक दिन वह प्रधान नदीके किनारे गया वहां जाकर स्नान ध्यान कर कमरभर पानीमें खड़ा हुआ जप करताथा इसमें उस नदीमें एक फूल अति सुंदर कि वैसा कभी दृष्टिमे न आया था बहता हुआ देखा अपना जप छोड़कर आगे बढ़ फूल लेकर जीमें विचारा कि यह राजाको भेंट करूंगा तो वह देखकर बहुत खुश होवेगा वह फूल हाथमे ले खुशी खुशी अपने घरमे आ कपड़े दरबारके पहन राजाके पास गया और फूल नजर किया राजा फूल लेकर बहुत खुश हो बोला कि अपने राज पाटका मैंने तुझे प्रधान किया उसने उठकर भेंट दी और आदाब बजालिया फिर राजाने कहा इस फूलका वृक्ष मुझे लादे और लादेगा तो मैं तुझसे बहुत खुश हूंगा और जो न लादेगा तो अपने नगरसे

निकाल दूंगा यह राजाकी आज्ञा ले अपने मंदिरमें आया और जीमे विचार करने लगा कि मैंनें पूर्वजन्ममे ऐसा क्या पाप किया है कि जो ऐसी सुंदर सुवस्तु राजाको दी और राजाने प्रसन्न होकर ली फिर यह क्रोध किया कर्मकी गति बूझी नहीं जाती कि भला करते बुरा होवे अकेला बैठा बहुत चिंता करनें लगा कि अगर राजाकी आज्ञा न मानूं तो देशनिकाल मिले और ढूंढने जाऊं तो कहांसे ढूंढ़कर लाऊं ? जो दु ख पाकर कहीं जाऊं और ढूंढे न पाऊ तो औरभी दूना दु ख होगा मै यह जानता हूं कि काल मेरे निकट आकर पहुँचा है इससे अपयशका मरना भला नहीं अगर योंही मरना है तो वनमें जाइये जो ढूंढे मिले तो ले आइये नहीं तो वहीं मर जाइये, इतनी बातें अपने जीमें विचार ढाढस करके बैठा अपने दीवानको बुलाकर कहा कि किसी कारीगर बढ़ईको बुलादो कि एक नाव हमे ऐसी तयार करके दे कि बगैर मल्लाह जिधरको चाहें ले जावें कारीगर बढईको बुलवा दीवानने हाजिर कर दिया बढ़ईने कहा कि महाराज ! कुछ मुझे खर्चकी आज्ञा होवे तो मै जल्दी बनालाऊं. मंत्रीनें दीवानको कहा कि यह जितने रुपये मांगे उतने इस दो उसने मुहमागे रुपये उसे दिये, वह घरको ले गया और कितनेक दिनोंके बाद नाव तैयार करके खबर दी कि तैयार हो चुकी योंही दीवानने अपने स्वामीसे जाकर कहा आपने जो

नाव बनवानेकी आज्ञा दी थी सो तैयार है यह सुनतेही दीवान उठ नदीके किनारे आकर नावको देख प्रसन्न हो उस बढ़ईको घोड़ा जोडा दे पांचगांव वृत्ति कर दिये और दीवान अपना सामान नावपर रखवा आप कुटुंबसे बिदा हो हाथ जोड़कर कहने लगा कि, जो हम जीते फिरेंगे तो फिर तुमसे मिलेंगे और जो मरगये तो यही बिदा हमारी है यह कह कर रुखसत हुआ तमाम घरके लोग कूक मार रोने लगे. फिर यह भी जी भारी किये हुये इस नावपर बैठा पाल चढ़ा कि खोल दीहती जिस तरफसे वह फूल बहता हुआ आया उसी तरफको वह चला आता था और दोनों किनारेके वृक्षोंको देखता आताथा कितनेक दिनोंमें चला चला एक महावनमें जा पहुँचा और खानेकी जिन्सभी तमाम हो गई तब उसने अपने जीमें विचारा कि अब नावपर बैठ रहना उचित नहीं जिस कामको आया हूं उस कामकी फिक्र किया चाहिये यह सोचकर किसी पालपर उड़ाये आता था कि एक पहाड़ दरमियान उस दरियाके नजर आया और उसी पहाड़से पानी आता था किश्ती वहीं लगा आप उतर कर पहाड़पर जाकर क्या देखता है कि जहां तहां हाथी गैंड़ और अरने दौड़ रहे हैं सिवाय उनकी आवाजोंके और कोई बात कान नहीं पड़ती सुन सुन अचाम्में अपने जीमे सहमा आता

था इस परभी आगेही पांव धरता था जब उस पहाडको छाय गया यहां आकर देखे तो एक वैसाही फूल बहा हुआ चला आता है उस फूलको देख जीमे दावस हुई और कहने लगा कि वैसा फूल दूसराभी देखा भगवान चाहे तो वृक्ष भी नजर आवेगा ज्यों ज्यों आगे बढ़ा त्यों त्यों फूल और भी बहते देखे यह अंदेशा करनेका कारण उसके जीमें फगती हुआ और उसके मनमें कुछ करार आया आगे देखता है कि एक बड़ा पहाड है और उसके नीचे एक मंदिर है उस मदिरको देखकर अपने मनमें विचारा कि, ऐसा सुंदर मदिर इस जगह बना हुआ है चाहिय कोई मनुष्यभी होय यह कहता हुआ उस मदिरके पास आकर पहुँचा और वहा आकर देखे तो एक तरवरमें तपस्वी जंजीर पाओंमें बांधे हुए उलटा लटक रहा है हाड़ मांस चाम सूखकर काठ हो गया है और उसमेंसे एक एक बूंद रक्तका उस नदीमें गिरता है और वह फूल हो बहासे चला आता है ऐसे अचरजको देख जीमें यों कहने लगा कि भगवानकी लीला कुछ बुद्धिमें नहीं आती नीचे निगाह करके देखे तो बीस योगी वैसही जटाधारी बैठे है और सूल के बभी एकंग होरहे हैं और चारों तरफ उनके दंड कमंडलु पड़े हुए है और जिस ज्ञान ध्यानमें जैसे बैठ थे वैसेही बैठे हैं यह दशा वहांकी देख प्रधान उलटा फिर अपनी

नावके पास आया नावपर सवार हो कितनेक दिनोंमें अपने नगरमें आन पहुँचा लोगोंने खबर उसके आनेकी पा पेशवाई लेनेको गये और इसे ले आये जो कोई आताथा सो मिलकर क्षेम कुशल पूंछ कर बधाई देताथा घरमे भी उसके नौबत बाजने लगी मंगलाचार होने लगा यह खबर राजाने सुनी और एक प्रधानको भेज दीवानको बुलाया वह आनकर लेगया यह आकर राजाके पांवपर गिर पड़ा राजाने उठा छातीसे लगा क्षेम कुशल पूंछी और कहा कहां तलक तू गयाथा और कहा ठिकाना उसका कर आया ? यह सुनतेही ये फूल जो लायाथा सो भेंट किये और हाथ जोड़कर कहने लगा कि महाराज एक अचंभेकी बात है जो मैं कहूंगा तो आप न पतियायेंगे फिर राजाने कहा जो तूने अचंभा देखा है सो बयान कर। तब वह बोला महाराज! मैं यहांसे चला हुआ एक जंगलमें पहुँचा और वहां जाकर एक पहाड़ देखा उस पहाड़पर जब मैं चढ़ा तो और एक पहाड़ नजर आया इस तरहके पहाड़ लांघ जब मैं आगे गया तब एक पहाड़के तले एक सुंदर मंदिर देखा जब मैं उसके पास गया तो एक पेड़पर तपस्वी पांओंमें जंजीर बांधे हुए उलटा लटकता हुआ नजर पड़ा मांस चाम सब उसका हाड़में सट रहा है और रक्त उसकी देहसे जो टपकता है सो फूल बनकर बहता है और उसके नीचे

देखा तो बीस तपस्वी आसन मारे जिस ध्यानमें बैठेथे योंके योंही रहगये हैं और आन एकमेमी नहीं यह सुन कर राजा हँसा और मंत्रीसे बोला कि तू सुन मै उसका विचार तुझसे कहताहूं कि यह जो तूने तपस्वी सांकलमें लटकता हुआ देखा वह तो मेरी देह है मैंने उस जन्ममे ऐसी कठिन तपस्या की थी कि उसका फल यह राज मुझे मिला है और जो यह बीस सिद्ध तूने देखे सो बीसों दास हैं के जो सूनें छाहिये और उस तपस्याके तेजसे मेरे आगे कोई नहीं ठहर सकता उसी मतसे मैने शंखको मारा और यह पूर्वजन्मका लिखा था इसमें मेरा कुछ दोष नहीं जबतलक मैं इस पृथ्वीमें अखंड राज करूंगा तबतक तू मंत्री रहेगा तू अपने जीमें चिंता मतकर. इसमे दोष तेराभी कुछ नहीं जैसा पूर्वजन्मका लिखा था सो हुआ और जैसी तब उन्होंनें मेरी सेवा कीथी वैसाही अब उसके फलभोग करेंगे तब उन्होने मेरेसाथ जी दियाथा उस लिये मैं उन बीसोंको अपने निकट रक्खा है यह अपना परिचय देखनेके लिये तुझसे निठुराई कीथी अब तेरा मन पतियाया और तूने हमारा मर्म बूझा क्यों कि सब लोग कहते हैं कि विक्रमने अपने बड़े भाईको मारा इसमे दोष मेरा कुछ नहीं और जो कर्मका लिखा है सो हो रहता है आजसे मैने तुझे अपना प्रधान किया और जिसमें राजकाज अच्छा होवे यह कीजो यह बात किसीके

आगे मत कहियो किस लिये कि जो सुनेगा सो राजके लोभसे योग कमावेगा इतनी बात करुणावती पुतली कहकर बोली कि, सुन राजा भोज! जितना श्रीरविक्रमादित्यका राज था तिसका भार उसने दीवानको दे मुखत्यार करदिया और राज पाट हवाले करदिया जो इसके समान तू होगा तो इस सिंहासनपर बैठनेको नाम ले नहीं तो यह ख्याल दिलसे दूर कर वह साअत और यह दिनभी राजाका टलगया दूसरे दिन सुबह आन-फिर सिंहासनके पास खड़ा रहा तब चित्रकला

चौबीसवीं पुतली—

बोली सुन राजा भोज! मै एक दिनकी हकीकत राजा श्रीरविक्रमादित्यकी तेरे आगे कहतीहूं तू दिलमें अपने खूब तरह समझ एक दिन राजा विक्रमादित्य नदीके किनारे दसहराको नहाने गयाथा, वहां आकर देखे तो एक रंडी बनियेकी जवान खूब सूरत नदीके तीर खड़ी हुई बाल सुखाती है और सामने उसके साहूकारका बच्चा पैठा तिलक दे रहा है और आपसमें दोनोंकी सैन चल रहीथी कभी तो वह स्त्री हाथ नचाय औं मटकाय बाल सुलझाती है और कभी शिरका अँचला छातीसे सरका बदन दिखा फिर छिपाती है, कभी आरसी दिखा चूमकर छातीसे लगाती है इस तरहसे अनेक रीतिसे चेष्टा कर रही है और वहभी इसी तरह इसारे कर रहा है उन दोनोंकी हालत देख राजाने

अपने जीमें विचारा कि इनका तमाशा देखा चाहिये कि ये क्या करते हैं राजानें स्नान ध्यान अपनाभी सब किया पर उनकी ओरभी देखता रहा इतनेमें वह स्त्री स्नान कर बाहर ओढ़ घूंघुट कर अपने घरको चली और साहूकार यथामी उसके पीछे चला, राजाने एक हलकारा उन दोनोंके पीछे लगाया और उस हलकारेको कह दिया कि इन दोनोंका मकान देख उससे वाकिफ हो और हमें जल्दी खबर दे अब वह औरत अपनें घरमें गई तब उसनें फिरकर देखा और शिर खोलकर दिखाया फिर छातीपर हाथ धर अपने मंदिरमें गई और सेठके बेटेनेभी अपनी छातीपर हाथ रख लिया यह खबर हलकारेने आ राजाको दी तब राजाभी अपनी सभामें आकर बैठा और एक पंडितसे पूछा कि कोई स्त्रीचरित्र हमें सुनाओ कि हमारा जी सुनना चाहता है तब पंडितने उत्तर दिया कि, महाराज! मेरी तो क्या सामर्थ्य है जो मैं स्त्रियोंका चरित्र और-पुरुषका भाग कहूं ब्रह्माभी नहीं जानता, आदमीकी तो क्या कुदरत है! और यह देखतही बन आवे जबानसे कहा नहीं जाता यह बात पंडितसे सुन राजा चुप हो रहा और अपने जीमें कहा यह चरित्र देखा चाहिये इतनेमें शाम होगई राजा उठ महलमें गया और कुछ रात गुजरे बाहर निकल आया और उस हलकारेको बुलाकर कहा कि तू इस बातका ब्योरा कुछ

समझ गया है क्या ! तब उसने जवाब दिया कि महाराज ! कुछ मेरे जीमें आया है पर आपके आगे मुझे कहते शंका होती है तब राजाने कहा कि तू जो समझा है सो निडर होकर बयान कर यह बोला महाराज ! उसने जो सिर खोलकर छातीपर हाथ रक्खा सो उसने कहा कि जिस वक्त अँधेरी रात होगी तब मैं तुझसे मिलूँगी और उसनेभी छातीपर हाथ रख जवाब दिया कि अच्छा दासकी समझमे यह कुछ आता है राजाने कहा तू तो सच समझा है यही उनका मतलब है मैंनेभी बड़ी देरतलक घाटपर बैठे उन्होंका मुद्दा मालूम कियाथा पर तू अब मेरे तई उसके घर लेचल हलकारेने कहा अच्छा मै हाजिर हूं महाराज ! चलिये तब राजा हलकारेको ले उसके मकानके पास आया और उसको बिदा किया पिछवाड़े चौवारेके एक खिड़की थी उसमेसे चिराककी ज्योति नजर आतीथी और कभी २ जो झांकती थी सो उसकी झलकभी मालूम होतीथी जब दो पहर रात गुजरी और खूब अँधेरा होगया तब राजाने उधरसे एक कंकरी उस खिड़कीमें मारी लगतेही वह झांकी राजाको देख यह जाना कि वही पुरुष यहां आन पहुँचा तब उसने तमाम घरका जवाहिर और सब गहना एक डब्बेमें भरा और साथ लेकर निकल राजा के पास आई कहा कि यह ले और मुझे लेकर चल राजाने कहा यों तो मै तुझे न ले जाऊंगा क्यों कि तेरा खाविंद जीता

है जो कभी खबर पायेगा तो राजाके दरबारमें फिरयादको
ायगा तब राजा तुझे और मुझे मार डालेगा इससे बेहतर
ह है कि पहले तू इसे मार फिर आवो निडर हो हम तुम
ुखसे भोग करें. उसनें विलंब कुछ न किया सुनतेही घरमें जा
टारी मारकर फिर राजाके पास चली आई और यह अधा-
ेरका डब्बा राजाके पास दिया और दोनो इस तरहसे
नगरके बाहर गये फेर आगे भागे राजा और पीछे यह स्त्री
जब नदीके किनारे पहुँचे तब राजा वहाही खडा हुआ और
अपने जीमें विचार करने लगा कि जिसने अपने स्वामीके
मारनेंमे विलंब न किया उससे दूसरेकी क्या भलाई होगी ।
इस वास्ते अब इससे जुदा होइये और इसका चरित्र क्य
क्या है सो देखिये कि अब यह क्या करती है ? यह दिल
विचार कर राजाने कहा ऐ सुंदरी ! मै देखूं पहले इस नदी
जल कितना है ? जो मै इस नदीकी थाह पाऊं त
इसी रस्ते तुझकोभी ले चलूगा यह कह राजा नदीमें पैठ
और पैरकर पारका रास्ता लिया जब उस किनारे जा पहुँ
तब पुकारकर कहा कि मै तो पार उतर आया पर तुझे
नहीं सका क्योंकि इसमें पानी तो अथाह है यह कह राजा
मागकी राहली तब उस औरतने अपने मनमें विचारा !
द्रव्य तो सब उसके हाथ लगा है इसके लोभसे यह मुझे ल

गया अभी रात कुछ बाकी है बेहतर है कि फिर घर चलिये और स्वामीके साथ जलिये यह दिलमें ठानकर अपने घरमें गई और खाविंदके पास आ कूक मार हाय हाय कर रोने लगी और पुकारा कि दौड़ो मेरे खाविंदको चोर मारके भागे जाते हैं और घरकी सब माया लिये जाते हैं यह रोनेकी आवाज सुन बाहरके सब लोग दौड़ आये और पूंछने लगे कि चोर किधर गये हैं ? उसने कहा अभी इसी रास्तेसे निकल गये लोग तो ढूंढ़ने लगे और यह शिर पटक पटक रो रो कहतीथी कि, मेरा सुहाग लूटकर मुझे अनाथ किये जाता है सब लोग कुटुंबके समझानें लगे कि यह तो भगवानकी माया है इसमें किसीका बस नहीं चलता जब मौत आती है तो कुछ बहाना लिये आती है इसके दिन पूरे हो चुके और कौन किसीको यों मार सकता है और कौन किसीको जिला सकता है तू अपने जीमे ढाढस बांध और इसकी गतिकर तब वह बोली मैं भी इसके साथ सती हूंगी क्यों कि मेरा जगतमें इस वक्त कोई नहीं कि मेरा सहाय करे लोगोंने बहुतेरा समझाया, पर उसनें न माना और खाविंदको ले नदीके किनारे गई और चिता बना उसको लेकर आपही जलनेको बैठी उस वक्त तमाम नगरके लोग देखने आये उसी वक्त राजाभी वहां आकर खड़ा हुआ और उसने खातिर जमासे आग अपने

हाथसे चितामें लगाई और समझल बैठी जब कपड़े और बाल उसके जलकर बदनमें आंच लगी तब घबराकर उठी और सब लोग देखकर हँसे यह चितामेंसे कूद नदीमें जा पड़ी तब राजासे चुप न रहा गया और कहा कि अय सुंदरी! यह क्या है? यह बोली सुनो राजा इसका मर्म आकर अपने घरमें पूछो और मै जो अपने कर्ममें लिखा लायीथी उसीका फल पाया पर तूने अपने घरका भेद न पाया हम सात सखियां इस नगरमें हैं उनमेंकी एक मैं हूं और छे तेरे घरमें हैं? यह कह वह तो पानीमें डूबगई राजा अपने मनमें दुःख पा महलमें आया और छिप रहा किसीको दिखाई न दिया एक दिन और एक रात यहां लगा रहा दूसरी रात जब हुई तब आधी रातके समय छहो रानिया हाथोंमें कंचनके थाल मिठाई पकवानसे भरभर लेकर महलके पिछवाड़ेकी बाड़ीमें गईं उसके आगे एक बन था उस बनमें एक मठी थी उसमें एक योगी ध्यान लगाये बैठा था ये छहो रानियां दंडवतें कर वहीं जा बैठीं यहां राजाभी जो उसके पीछे पीछे आया था यह माह-जाल देखने लगा जब सिद्ध अपने ध्यानसे निश्चिंत हुआ और उनसे हँस हँस बातें करने लगा और जिस कदर ये मिठाई पकवान लेगईथीं सो सब आगे रख दिया उसनें भोजन किया और पान खाकर एक योगविद्याकी कि एक देहकी छे देह

भई और उन छहो रानियोंसे भोग किया फिर वे छहो रानि
यां विदा हो अपने मंदिरको चली आईं राजा यह चरित्र देख
अपने मनमें विचार करनें लगा कि इस सिद्धने क्या किया
कि अपना योग भ्रष्ट किया और उनका धर्म खोया यह विचार
कर राजा सिद्धके सोहीं आकर खड़ा रहा सिद्ध मनमें कुछ
शंका लिये बोला कि हे नृपति! कहांसे आये हो अपने
मनका मुझसे भाव कहो तब राजानें कहा मुझे आपके दर्श
नकी इच्छा थी इस लिये मै यहां आया हूं तब यह योगी
बोला कि राजा! तू मुझसे जो कामना मांगे सो तेरी पूरी करूं
फिर राजाने कहा कि स्वामी! एक देहकी छ देह किस तरहसे
बनें यह विद्या मै आपके पास मांगता हूं मुझे बताओ नहीं तो मै तुझे
जानसे मार डालता हूं इसका विचार कर जवाब दो इतनी बात
कह पुतली कहने लगी कि, सुन राजा भोज जब विक्रमनें सिद्धसे
ये बातें कहीं तब उसने डरके यह विद्या दी और राजाने वहां
परीक्षा करली तिस पीछे योगीको तलवार मार उसके टुकड़े टुकड़े
कर डाल दिया फिर वहांसे निकल महलमें आया और जहां छहों
रानियां बैठीं थीं वहां आनकर राजासी बैठ गया तब राजाको
देखकर छहो उठकर खिदमतमें हाजिर हुई किसीनें पंखा हि
लाया, किसीने हाथ मुंह धुलाया, किसीने पान बना खिलाया
इसी तरह सब अपनी २ प्रीति राजासे प्रकाश करनें लगीं और

ज्यों ज्यों वे प्यार करती थीं त्यों त्यों राजा मान करता था फिर राजा बोला सुनो सुंदरियो मैं तुमसे हित करता हूं और तुम मुझसे अनहित कर औरका ध्यान धरो यह तुम्हें उचित नहीं तब वे बोली कि महाराज! हमारे तो प्राणरक्षक तुम हो, तुम्हें देखे बिना हम जीती नहीं तुम्हारा ध्यान हम आठो पहर करती हैं जो कभी बाहर तुम कहीं जाते हो तो हम चकोरकी तरह तुम्हारे मुखचंद्रके देखनेको तरसती हैं और जैसे जल बिना मीन तड़फे तैसे हम व्याकुल रहती हैं और क्षण भरके वियोगमें जल कमलकी तरह हम कुम्हला जाती हैं यह सुन राजा कोपकर मुसकुराया और बोला सच है सुंदरियो! हमने जाना तुम्हारा दिल मुझे नहीं छोड़ता जैसे एक सिद्धके छ सिद्ध होगये और फिर वह एकही सिद्ध हो गया यह सुन रानियां एकदम चुप होकर बोलीं कि, महाराज! ऐसी अचरजकी बात तुम कहतेहो जो कभी न देखी न सुनी और किसीको ख्यालमें भी जिसका न आवे क्यों कर एक देहकी छ देह होवें और इस बातको कौन मानेगा तब राजानें कहा कि चलो हम तुम्हें दिखावें तब उन्होंको अपने साथ ले उसी बाड़ीमें जा उस गुफाका मुह खोल दिया देख कर वे हारमागई और अपने मनमें जाना कि राजानें हमारा सब चरित्र देखा फिर राजानें कहा कि तुमनें जाना या नहीं?

यह सुन कर उन्होंनें नीचे गरदनें कर जवाब कुछ न दिया तब राजानें उन्होंका शिर काट उस गुंफामें डाला और उसका मुह बंद कर चला २ मंदिरमें आया और आतेही नगरमें ढंढोरा फिरा दिया कि जितनें ब्राह्मण और ब्राह्मणियां और ब्राह्मणोंकी कन्या हैं वे सब यहां आनकर हाजिर होवें यह सुनकर सब हाजिर हुई जितनें रानियोंके गहने और वस्त्र थे सब ब्राह्मणियोंको पहनाये और एक एक ब्राह्मणको एक एक गांव वृत्ति करदिया और जितनी कन्या थीं उनको दान दहेज दे ब्याह कर दिया और आप राजकाज करने लगा इतनी बात कह पुतली समझानें लगी कि, सुन राजा भोज! तू बड़ा पंडित है पर इस आसनपर वह बैठेगा, जो विक्रमादित्यके समान होगा तब वह साअत गुजर गई राजाभी वहांसे उठकर अपने मकानको गया रातको इसी सोचमे पड़ा रहा दूसरे दिन सुबहको फिर सिंहासनके पास आकर चढ़नेकों तैयार हुआ तब अपछरा—

पच्चीसवीं पुतली—

बोली—सुन राजा भोज! एक दिनकी बात मै तेरे आगे कहतीहूं एक भाट निपट दरिद्री खराब हाल था सब पृथ्वीके राजाओंके पास फिर आयाथा और एक कौड़ीका किसीसे उसने फायदा न पाया था तब अपने घरमें आया तो देखा कि

बेटी जवान व्याहनेके लायक हुई है यह अपने जीमें चिंताही करताथा कि उसकी भाटिन बोल उठी कि तमाम देश तुम फिर आये पर जो कमाई कर लाये सो कहो तब उसने जवाब दिया कि, मेरे प्रारब्धमें धन नहीं मैं इस लिये कि तमाम राजाओंके पास गया और शिष्टाचार उन्होंने सब किया पर एक दाम न हाथ आया अब मेरे जीमें एक बात आतीहै, राजा वीरविक्रमादित्य बाकी रहगया है उसके पास भी जाकर मागूं जो मेरे जीका संदेह मिटे फिर वह भाटिन बोली अब तुम कहीं मत जाओ और संतोषकर रहो कर्मका लिखा फल यहीं बैठे पाओगे फिर भाटनें कहा कि राजा वीरविक्रमादित्य सुनते हैं कि बड़ा दानी है, उसके पास अपनी कामना जो ले गया है वह खाली हाथ नहीं फिरा और अपनें मकसदको पहुँचा है य बातेंकर यह राजाके पास चला और गणेशको मना राजाके सम्मुख जा खडा रहा तब राजानें दंडवतकी और यह आसीस देकर बोला कि हे राजा! बहुत भूमि मैं फिर आया हूं और आपका यश मुझे यहां ले आया है आप इस मर्त्यलोकमें इंद्रका अवतार हो आपकी बराबर दानी इस संसारमें कोई नहीं इस समयम आप दान देनेमें राजा हरिश्चंद्र हो. और तमाम पृथ्वीमें आपकाही यश छाय रहा है और स्वामी! मैं काष्टिकासुत हूँ भाटवंशम मानकर अवतार लिया है और

अब तुम्हे याचनें आयाहूं मेरा मनोरथ पूर्ण करदो मैनें संसारमे फिरकर खूब देखा कि सिवा तुम्हारे मेरी आशाका पुजानेवाला और कोई नहीं तब हँसकर राजानें कहा कि, तू अपना मतलब सब मेरे आगे प्रकाश करके कह तो मै तेरी कामना पूरी करूं. भाटनें कहा यों मुझे अपने कर्मका भरोसा नहीं आप वचन दीजिये तो मै खातिर जमासे कहूं तब राजाने वचन दिया भाट बोला महाराज! मुझे मुहमांगा दान दीजिये मेरी पुत्रीकी शादी करदो बारह बरसकी कन्या मेरे घरमें बैठी है इस लिये मैं आपके पास याचनें आया हूं यह सुन राजानें हँसकर मंत्रीसे कहा कि जो यह मांगे वह इसे दो फिर भाटने कहा महाराज! जो कुछ आपको देना है सो अपने सन्मुख मँगाकर दीजिये मुझे इस संसारमें अब किसीका इतबार नहीं राजाने दश लाख रुपये रोक और हीरे लाल मोती सोने रूपेके गहन थाल भर कर दिये और वह ले आसीस दे अपने घरमें गया जो कुछ लाया था सो सब ब्याहमें लगाया और राजाने उसके पीछे जासूस कर दियेथे कि तुम देखो कि यह धनको लेजाकर क्या करता है! इसकी खबर ठीक मुझे लाकर दो जब शादी कर चुका और उसके पास एक दिनके खानेको कुछ न रहा तब उन हलकारोंने आकर राजाको खबर दी कि महाराज! उस भाटने ऐसा ब्याह बेटीका किया कि इस कलियुगमें कोई और

करसकता नहीं जो कुछ वो आपके पाससे धन दौलत लेगया सो सब क्षणभरमें बेटीको दे ब्याह दिया यह सुन राजाने और कई लाख रुपये उसके घर भेज दिये और अपने चित्तमें बहुत प्रसन्न हुआ कि धन्य भाग्य मेरा है जो मेरे राजमें ऐसे हिम्मतवाले लोग हैं इतनी बात कह पुतली बोली कि सुन राजा भोज! इतना धन देकरभी राजाने उसका खरच सुन और दौलत भेज दी ऐसा दानी तू हो तो इस सिंहासनपर बैठ और नहीं तो मनके लड्डू खानेसे कुछ हासिल नहीं हैं यह सुनकर राजा अपने महलमें आया फिर सुबह हुआ तो स्नान पूजा कर वहीं आन पहुंचा इतनेमें विद्यावती-

छब्बीसवीं पुतली—

कहने लगी कि सुन राजा भोज! मैं तेरे आगे ज्ञानकी बात कहतीहूं और तू मन देकर कान रख जब आदमी जन्मता है तो कुछ संग नहीं लाता और मरता है तो कुछ नहीं लेजाता इस जीवनका फल यही है कि संसारमें आकर कुछ करनी करे और जैसी करनी करेगा वैसाही फल पावेगा और संसारमें जीवन थोड़ा है इससे ऐसा यश करो कि जाने परभी जगमें नाम ठहरा रह दोनों लोकोंमें सुख पावे यह मनुष्यजन्म बारंबार नहीं पाता जब पूर्व जन्ममें दान व्रत तपस्या बहुत कर आता है तो यह नरदेह पाता है और लक्ष्मी दान कर कुछ सोच

मत कर यही अपने जीमें सदा रख कि दान हमेशा किया कीजिये यह भयरूप जो संसारसागर है इसके तरनेको सिवा दान, उपकार और हरिभजनके चौथा उपाय नहीं मैनें तुझे कहा कि साथ कोई कुछ ले नहीं जाता मै तेरे आगे सब कहदीहूं कि राजा हरिश्चंद्र, राजा कर्ण, राजा वीरविक्रमादित्य क्या ले गये ! और जिन्होनें दान उपकार हरिभजन किया उनका जगमें नाम रहा और अंतसमय वैकुंठ पाया ये बातें पुतलीकी सुन राजा भोज बोला कि, राजा विक्रमादित्यनें क्या किया है ! यह कह तब विद्यावती पुतली बोली कि एक दिन राजा वीरविक्रमादित्य राजसभामें बैठा था तब एक दासीने आकर अरज किया कि महाराज उठिये पूजाका समय जाता है यह सुनकर राजानें विचारा कि इसने सच कहा मेरी उमर चली जाती है और मुझसे ज्ञान धर्म पूजा बन नहीं आई इससे उत्तम यही है कि इस राजकाजकी माया भुलाय आप योग कमाइय जो कि और जन्ममें काम आवे यह राजाने अपने जीमें विचार और राजपाट, धन जन मिथ्या समझकर तपस्या करनेको एक बनको चला और यह विचार करता जाताथा कि इस संसारमें जीना सॅबरेकी ओसकी समान है और जिसके भरोसमें मनें अपना काम अकारण गवांया यह विचार करता हुआ राजा एक महावनमें जा पहुँचा यहां जाकर देखे तो

एक मंडली तपस्वियोंकी बैठी हुई है, धुनी एक एकके आगे जाग रही है, आसन मारमार अपने अपने ध्यानमें लीन हो रहे हैं कोई ऊर्ध्वबाहु, कोई कपाली आसन मार कोई पंचाग्नि इसरीत अनेक अनेक प्रकारकी साधना कर रहे हैं और कोई कोई वनमें बैठ शरीरसे मांस काट काट होम कर रहा है इस तरहसे उनकी तपस्या देख राजाभी तपस्या करने लगा आपभी तपस्या करवाया और कईएक दिनमें तपस्वियोंनें अपना शरीर सब होम करदिया उनकी देखादेखी राजाभी अपना शरीर होमने लगा कई महीनोंमें राजाने एक दिन सिरभी अपना काट होम करदिया यहा जो एक शिवका मंदिर था उसमस एक शिवगण निकला और निकलकर सब तपस्वियोंकी धुनीमेंस राख समेट कर जुदी जुदी ढेरी की और फिरजा शिवको खबर दी कि महाराज ! आपने कहाया सो मैंने किया तब शिवने आज्ञा दी कि यह अमृत तू लेजा और उनके ऊपर छिड़क आ यह आज्ञा पाय अमृत ला ज्यों ज्यों छिड़कताथा त्यों त्यों उनस एक आदमी शिव शिव राम राम कहकर खड़ा रहता सब पर तो उसने छिड़क दिया पर राजाकी धुनी भूल गया और सब तपस्वी मिलकर शिवकी स्तुति करने लग कि महाराज ! आपका भक्त राजाभी है आप अनाथक नाथ हो जिसने आपका स्मरण किया तिसको तभी तुमने फल दिया और जहां जहा

सेवकोंको संकट हुआ है वहां वहां उनका सहाय किया है यह स्तुति करके उन तपस्वियोनें कहा कि महाराज! एक नृपतिभी हमारे साथ तपस्या करता था मालूम नहीं कि उसको उठानेकी आपकी आज्ञा हुई कि नहीं यह सुन महादेवनें उस गणकी तरफ देखा देखतेही उसने अमृत ले आकर जो धुनी बाकी रहीथी उसपर छिड़का राजाभी हरिहर कहता उठ खड़ा हुआ और हाथ जोड़ स्तुति करने लगा कि महाराज! संसारके सब जीवोंकी आप सहाय करते हैं और पालते हैं आप विना इस संसारसागरसे कौन पार उतारे? जिसने जगमें आपको नहीं पहचाना उसने अपना जन्म निष्फल खोया फिर जितने तपस्वी वहां थे उनको शिवजीने मुंह मांगा वर दिया और सबको विदा किया सबके पीछे जब राजा अकेला रहगया सो उसे कहा कि हे राजा वीरविक्रमादित्य! अब जो तेरी इच्छामें आये सोही वर मुझसे मांग मै तुझे दूंगा यह सुन राजाने कहा महाराज! आपकी दयासे सब कुछ है पर एक यह मागताहूं कि संसारके जन्ममरणसें मेरा निबेड़ा करो जैसे और भक्तोंका निबेड़ा किया तैसे मुझ परम पापी अधीन दीनहीनको तारो यह राजाकी विनती सुन दयाकर शिवजीने हँसकर कहा कि तेरे समान कर्मी इस कलियुगमें कोई नहीं है और तू ज्ञानी योगी दाता साहसी तपस्वी है कलिके राजाओंका उद्धार कर

नेवाला है और मै तुमसे कहताहूं कि तू जाकर अपना राज कर. तेरा काल निकट आवेगा तब तू मेरेपास आइयो मैनें तुझे वचन दिया है कि अंतसमयमे मैं तुझे मोक्षपद दूंगा इससे तू अब जाकर मर्त्यलोकमें आनंदसे राज कर फिर राजा करुणा करके बोला कि महाराज ! संसारमें तुम्हारे प्रपंच कुछ जाने नहीं जाते या सो मुझे इस समय तारो नहीं सो मै अपना जी देताहूं तब हँसकर शंकरजीनें कहा कि जो तू जी देगा तो मृत्युबिना यम तुझे हाथसेभी न छुएगा और फिर आयुर्बलके दिन भरने पड़ेंगे इसवास्ते तू आ उठ मेरा वचन जीमें रख इतना कह शिवजी तो कैलासको गये और राजाके हाथमें कमलका फूल दे यह कह-गये कि जब यह कमल मुर्झायगा तब तू जानियो कि अब छे महीनेमे मैं मरुंगा फूल ले राजा अपने नगरको आया और अपने मनका विचार किसीसे न कहा कितनेएक बरस पीछे वह कमलका फूल मुर्झा गया तब राजाने समझा कि मै अबसे छे महीनेमें मरूंगा जितनी कुछ धन और दौलत थी सो सब ब्राह्मणोंको संकल्प करदी स्त्री और पुत्रके खानेको कुछ धन दिया बाकी सब पृथ्वी ब्राह्मणोंको दान करदी इस तरह राजा दान पुण्यकर सदेह कैलासको चला गया. इतनी बात कह पुतली बोली सुन राजा भोज ! विक्रमादित्यने इतना काम किया और जीवन मरण दोनो जीमदा इससे मैं तुमसे कहतीहूं कि जीनेका

कुछ भरोसा नहीं और मरण साथ लग रहा है दुःख सुखभी मनुष्यके साथ है और पाप पुण्यभी साथ रहते हैं निर्गुण और सगुण ज्ञानभी घटमें रहता है पर एक ब्रह्मही अलग है इस वास्ते मैं तुमसे कहतीहूं भूपाल! संसारमें जिसकी कीर्ति रह जाती है सोही अमर है जो मैंने तुझे कहा कि मन बचन कर्म कर तू सच जान यह दिन तो यों गुजर गया राजा नाउम्मेद होकर अपने मकानको फिर गया सुबह होतेही हाथ मुंह धो स्नान पूजाकर फिर वहीं आन मौजूद हुआ और जितने राजाके सभामें लोग थे वेभी सब हाजिर हुए. राजाने अपने लोगोंसे कहा कि पुतलियां तो बातें झूंठ झूंठ बना मेरे आगे कहती हैं अब मैं इनकी बातें न सुनूंगा और इस सिंहासनपर बैठूंगा यह अपने लोगोंसे बातें करताथा कि–जगज्योति नामवाली

सत्ताईसवीं पुतली–

बोली–सुन राजा भोज! एक दिन राजा बीरबीक्रमादित्य अपनी सभामें बैठा था कि उसमे कोई प्रसंग निकला उसमें कोई बोल उठा कि आज राजा इंद्रके बराबर कोई राजा नहीं है, क्यों कि वह देवलोकका राज करता है? यह बात राजाने सुन किसीसे कुछ न कहा और बेतालोंको बुलाकर कहा कि मुझे इंद्रपुरीको ले चलो बेताल तुर्त ल उड़े और एक दममें ले जाकर इंद्रकी सभामें पहुँचा दिया राजाने जातेही वहां इंद्रको दंड

यत् की ओर हाथ जोड़ खड़ाहुआ तब इंद्रनें बैठनेको आज्ञा दी यह हुकुम पाकर बैठगया तब इन्द्रने कहा तुम कहांसे आये हो? और तुम्हारा नाम क्या है? देश तुम्हारा कौनसा है? किस अर्थको यहां आये हो? सो तुम कहो सब राजा बोला कि स्वामी! अंबावती नगरीका मैं राजा हूं मेरा नाम विक्रम है, और आपके पद पंकजके दर्शनके अर्थ आया हूं तब प्रसन्न हो इंद्र बोला कि, हमनेभी तुम्हारा नाम सुनाथा और मिलनेकी इच्छाथी सो तुमनें आके यही उलटी रीत की अब जो कुछ तुम्हारा मनोरथ हो सो हमसे कहो और जो कुछ तुम्हें चाहिये सो मांगो, हम तुम्हें देंगे राजानें कहा स्वामी! आपकी कृपा और धर्मसे सब कुछ है और जो कुछ न हो सो मैं आपसे मांगूं आपका दिया हुया सब कुछ मेरेपास है राजाकी य बातें सुनकर इंद्रने प्रसन्न हो अपना मुकुट और एक विमान दे यह आसीस दिया कि जो तेरे सिंहासनको बुरी दृष्टिस देखेगा वह तुर्त अंधा होगा राजा वहांसे विदा हो फिर अपने नगरमें आया और बधाई बजन लगी इतनी बात पुतलीस सुनकर राजा भोज सिंहासनपर हाथ धरकर एक अपन पांवको ऊपर रख खड़ा होकर कहने लगा कि, आसन मार गद्दीपर जा बैठूं इसनम आंखोंस अंधा होगया और दिवानी दिवानी बातें करनें लगा चाहता था कि हाथ उसपरसे उठायें पर जुदा न होता था यह हाउत देख

पुतलियां खिल २ हँसनें लगीं और सब सभा भवचक होगई और अपने जीमें सब लोग कहने लगे कि राजाने क्या यह अज्ञानपन किया कि बिना बात सुन सिंहासनपर पांव धर दिया यह अपनी दशा देख राजा भोज बहुत पछताकर लज्जित हुआ, तब पुतली बोली कि ऐ मूर्ख ! तूनें हमारी बात न सुनकर यह फल पाया अब तू ऐसा ही रहा यह सुन राजा निराश होकर बोला इसका उपाय बताओ पुतली बोली राजा विक्रमका नाम ले तब तू इस दुःखसे छूटेगा जब विक्रमका यश राजा भोजने बखान किया तब हाथ छूट गया और आंखसेभी सूझने लगा फिर नीचे उतर खड़ा हुआ यह देखकर सब लोग भयमान होगये और राजाभी अपने चित्तमें डरा सभाके सब लोग बोले कि राजा विक्रमके समान होना इस कलियुगमें बड़ा कठिन है फिर पुतली बोली कि राजा ! इसीवास्ते मैंनें कहा था और तू मेरी बात झूंठ मत मान तू मूर्ख है कुछभी तुझे ज्ञान नहीं जो तू विद्या पढ़ा है इससे कुछ होता नहीं ज्ञान है सो औरही चीज है अपने बराबर राजा वीरविक्रमादित्यको मत समझ वह देवताओंके समान था और उसके बराबर ज्ञान ध्यान तेरा नहीं अपने जीमें इस सिंहासनकी आस छोड़ यह सिंहासन तुझे नहीं छाजेगा और संसारमें बहुत बातें हैं वे कर जिसमें तेरा राज

स्थिर होजाय प्रताप बढै, कीर्ति रहै, यह दिनभी गुजर गया राजा फिर अपनें महलमें गया रात ज्यों त्यों बीती सुबह होतेही फिर उसी मकानपर आनखडा होगया तब मनमोहिनी नामक–

अट्ठाईसवीं पुतली–

बोली–सुन राजा भोज! राजा वीरविक्रमादित्यके समान बडी साहसी और ज्ञानी कलिमें दूसरा कोई हुआ हो तो तू मुझे बतादे और जो मै कहतीहूं सो सचकर जान एक दिन मैने राजा वीरविक्रमादित्यसे हँसकर कहा कि, स्वामी! पातालमें राजा बलि बडा राजा है जिसके दाससमानभी तू नहीं हो सक्ता है और जो अपना राज तू स्थिर किया चाहे तो एक बार राजा बलिके पास तू जाकर आ यह बात सुनतेही वेतालोंको बुला आज्ञा दी कि पातालमें राजा बलिके पास मुझे ले चलो यह सुनतेही वेताल तुर्त ले उडे और दमभरमें पाताळमें पहुँचा दिया राजा वह नगर देख भयचक हुआ और अपने मनमें कहने लगा कि ऐसा नगर मैंने आजतक कहीं नहीं देखा आनंद कैलासके समान होरहा है धन्य राजा बलिको जो इस नगरका राज करता है इस तरहसे नगर देखता हुआ राजाके सिंहपौरपर आ खडा हुआ और हाथ जोड बिनती कर द्वारपालोंसे कहा कि अपने राजाको मेरे आनेका समाचार

कहो कि मर्त्यलोकसे राजा विक्रम आपके दर्शनके लिये आया है सुनतेही डेवढ़ीदारोंने अपने राजाके पास आ विक्रमकी खबर दी सुनकर राजा बलिनें कहा कि नरकों मैं अपना मुह न दिखाऊंगा यह सुनकर दरवाननें आ राजासे कहा कि तुम्हें दर्शन नहीं होगा तब राजा विक्रम बोला कि जब तलक दर्शन न पाऊंगा तब तलक यहांसे मै न हटूंगा यह बात दरवानने आकर राजा बलिसे कही तब उसने कहा कि विक्रम सो कौन है ! जो राजा इंद्रभी आवे तो मै अपना दर्शन दूंगा नहीं फिर कोई मनमे विचार न आया फिर एक दिन राजानें दुःख पाके अपना शिर काट डाला और बलिकी तमाम सभामे रौला मचा कि बड़ा अयुक्त काम इस प्राणीने किया राजाने यह बात सुन हँसकर आज्ञा दी कि अमृत लेजाकर उसे जिलाओ और कहा कि, तुझे राजाका दर्शन होगा तू अपनें जीमें मत घबरा इस वक्त तू जा और अपना राजकाज कर जब शिवरात्रि आवेगी तब आइयो तुझे दर्शन मिलेगा यह सुन एक दास राजाका अमृत ले गया और राजा वीरविक्रमादित्यपर छिड़क कर जिलाया जब राजा सावधान होकर बैठा तब उसनें राजा बलिका संदेसा सब कहा यह सुनकर विक्रम बोला कि, तुम यह बात कहकर मुझे क्यों बहँकाते हो मै तुम्हारा कहा नहीं माननेका इससे उत्तम

यह है कि तुर्त महाराजाका दर्शन करूं. यह सुन लोगोंनें राजा-के पास आकर कहा कि महाराज! यह नहीं मानता और आतामी नहीं जब इस जमाय सवाल कहनेको कुछ देर हुई तब फिर राजा वीरविक्रमादित्यने अपना शिर काट डाला द्वारपालने राजासे कहा कि महाराज! फिर इस मनुष्यने जी दिया राजानें फिर अमृत भेज दिया और कहा कि उसे जिला समझाकर उसके नगरको पठा दो एक दूतने आकर राजापर अमृत छिड़क जिलाया और कहा कि तू अपनें जीमें धीरज रख अब तुझे दर्शन होगा और जितने राजाकी सभाके लोग थे उन्होंने एक मताकर राजासे कहा कि महाराज! विक्रमकी आसको निराश मत करो क्यों कि उसने बड़ा साहस किया है उनकी बातें सुन राजा बलि उठकर द्वारपर आया और विक्रमने दर्शन पाया तब दंडवत् कर हाथ जोड़ कहा कि महाराज! धन्य है भाग्य मेरा जो मैंने आपका दर्शन पाया और जन्म जन्मका दु:ख गँवाया फिर कहने लगा महाराज! क्या मेरा अपराध था जो आप मुझे दर्शन न देतेथे ? क्या मैं साहसी नहीं हूं या मुझे लोकके लोग नहीं जानते ? यह कौनसा पाप था जो मैं आपके द्वारेपर आनेसे आपने बुरा माना सो मुझे कृपा-करके कहो तब राजा बलि हँसकर बोला कि, सुन विक्रम कुलनायक! तेरे समान और कोई राजा नहीं अब कान देकर

सुन कि मैं तेरे आगे इसका ब्योरा कहता हूं पहले राजा हरि श्चंद्र बड़ा दानी साहसी यशी हो गया है और एक राजा बम- देव बड़ा प्रतापी और दानी हो गया है इन दोनोंनेभी बड़ा दान और साहस किया था पर तेरासा उनका न था और उन्होंनेभी मेरे दर्शनकी बहुत अभिलाषा की थी पर मैंनें दर्शन किसीको न दिया तू एक द्वीपका राजा किस गनतीमें है ! पर तपस्या बड़ी जोरावर है जो तुझे मेरा दर्शन मिला तब राजा बिक्रम फिर हाथ जोड़कर कहनें लगा कि हे महा राज ! जो आपने कहा सो सब सच है और मैंने निश्चयकर अपनें जीमें माना कि आपने मुझऊपर बड़ी कृपा कर दर्शन दिया और दया कर इस भवसागरसे पार किया फिर राजा बलिने कहा कि, राजा बिक्रम तू अब यहांसे बिदा हो और जाकर अपना राजकर बिदाका नाम बिक्रमने सुनकर बड़ा खेद किया इतनेमें राजा बलिन एक अच्छा लाल मँगवाकर राजा बिक्रमको प्रसाद दिया और उसका जो गुण था सो बताया कि जो तू इससे मांगेगा यह सब यह देगा बिक्रमने हाथ जोड लिया और राजा बलिकों दंडवत् करें बहांसे निकला और बेतालोंको बुलाकर सवार हो अपने नग रको आया जब नगरके निकट आन पहुँचा तब एक नदीके किनार देखा तो एक स्त्रीका खाविंद मर गया है उसे जलाकर

खडीहुई यह बकरा बकरा रोती है और कहती है कि अब इस संसारमें मेरा मालिक कोई नहीं है और न मेरेपास कुछ माया है अब किस तरहसे तेरा श्राद्ध करूंगी और पंचोंको क्या दूंगी? इसका फूक मार मार रोनेका अवाज राजानें सुना और यहां आकर देखा तो इसका ऐसा हाल हो रहा है सो देखकर यह रत्न यानें लाल उस स्त्रीको दिया और कहा कि जो तू इससे मांगेगी सो तेरी यह लाल आशा तुर्त ही पूरी करेगा उसको ले यह नारी अपने धामको गई और राजा वीरविक्रमादित्यभी अपने महलमें आ दाखिल हुवा इतनी बात कह पुतली बोली कि, सुन राजा भोज! ये गुण विक्रममे थ यह ऐसा साहसी था और प्रजाका हितकारी जो तू वात स्वर्ग फिर आयगा तो भी उसके समान कोई न हो सकेगा इससे अब तू अपनें मनके खयालसे बाज आ और जो राजाने काम किये हैं सोही तुझसे कहूंगी यहभी दिन उसी तरहसे टल गया रात ज्यों त्यों बीत गई दूसरे दिन सुबह होतेही राजा भोज अपने दीवानको साथ ले आया और फिर सिंहा-सनके पास आकर खड़ा हुवा इतनेमें पैदेहीनाम–

उन्तीसवीं पुतली–

कहन लगी–कि हे राजा भोज! तू किस बातपर भूला है? अब सखियोंनें तुझे राजा विक्रमकी कथा सुनाई तबभी तू परधर

न पसीजा अभी पहले मुझसे बात सुनले और पीछेसे सिंहासन पर पांव दे राजाने कहा कि अच्छा कह मै सुनूंगा पुतली बोली एक दिन राजा वीरविक्रमादित्य रातको अपनें मंदिरमें सोताथा कि एक स्वाब देखा यह मै तेरे आगे कहती हूं क्या देखता है कि एक सोनेका महल है और उसमें अनेक अनेक प्रकारके रत्न जडे हैं और तरह तरहके पाक पक्वान और सुगंधे भरीहुई हैं और एक तरफ एक अच्छी फूलोंकी सेज बिछी हुई है एक तरफ फूलोंके गहनें चगेरोंमें भरेहुए हैं अतरदान, पान दान, गुलाबपाश भरे धरे हैं और मकानके चारों ओर फुलवारी खिली हुई बाहर उस मकानकी भीतोंपर रंग रंगके चित्र बनेहुए- कि जिनके देखनेसे मुर्दे आदमी मोहित हो और उस मंदिरके भीतर खुबसूरत स्त्रियां अच्छे साज मिलाये मीठे मीठ मधुर मधुर स्वरोंसे बैठी गाती हैं और एक तपस्वी बैठा हुआ राग सुनता है यह देख राजाने अपने जीमें कहा कि यह तपस्वी इन नारियोंके योग्य नहीं है इतनेमें आंख खुल गई और सुबह हुआ तब राजा स्नान ध्यान कर बीरोंको बुलाकर बोला कि मैनें जिस जगहको स्वप्नमें देखा है तुम मुझे वहां ले चलो राजाकी यह बात सुनतेही बीर उठाकर ले उड़े और पलक मारते वहां जाकर पहुँचे राजाने वहांसे नीचे उतर बीरोंको रुखसत किया और आप उस बगीचेमें आ उस मकानकी

तैयारी देखतेही मनमे भयचक हो अपने मनमें कहने लगा कि यह मकान किसने बनाया है? आदमीका तो मकदूर नहीं चाहिये तो ब्रह्मानें अपनें हाथसे चित्त देके रचा है फिर उस मंदिरके अंदर जा राजा खड़ा हुआ इतनेमे वहां जो रंडिया बैठीं गाय रहीथीं सो राजाको देख अपने मनमें डर चुप हो रहीं और उस सिद्धका स्मरण किया उसने तुर्त आके दर्शन दिया और यह विक्रमको देख क्रोध कर बोला कि अभी मै तुझे शाप देता हूं कि तू जलकर भस्म होजाय किस लिये मेरे स्थानपर आया है? मुझसे ये स्त्रियां बैठीं राग आलाप कर रहीथी इतनेमें तूने आकर उसका क्यों भंग किया यह सुनकर राजा हाथ जोड बिनती करके बोला कि, महाराज! मैं अन जान यहा आया हूं तुम्हारे दर्शनकी इच्छा थी पर तुम्हारे क्रोधकी आर्चको कौन सह सकता है मै आपका दास हूं चूक मेरी माफ कीजिये यह सुन वह योगी बोला कि सुन विक्रम! तूने सच कहा मुझे बड़ा क्रोध हुआ था पर जो तू मेरे सन्मुख न होता तो मै तुझे शाप देता और अब मै तेरी बात सुन प्रसन्न हुआ तू मुझसे मांग जो चाहिये, राजान कहा कि महाराज! मै क्या मांगूं आपके प्रसादसे मेरे यहा सब कुछ है अन्न, धन, हाथी, घोड़े किसी चीजकी कमताई नहीं पर एक वस्तु मात्र मांगनेके लिये मैं आपके पास आया

हूं जो कृपाकर दीजिये सो मैं मांगूं यह सुन योगीने कहा कि राजा ! जो तू मांगेगा सो मै दूंगा यह बात सुनतेही विक्रमनें कहा महाराज ! यह मंदिर मुझे दीजिये, योगीनें सुन कुछ विलंब न किया तुर्त यह मंदिर राजाको दिया और अपना योगरूप धर यहांसे तीर्थभ्रमण करनेको गया राजानें सब यह महल पाया तब प्रसन्न हो गद्दीपर जाकर बैठा और वे सब रंडियां जैसे योगीके आगे गातीथीं वैसेही सहांसे राजाके पास गानें लगी राजाभी उस मंदिरमें खुशीसे रहने लगा वहां अनेक अनेक प्रकारके संभोग करने लगा इतनी बात कह वैदेही नाम पुतली बोली कि, सुन राजा भोज! इस रीतिसे राजा विक्रमादित्य तो वहा बैठकर आनंद करने लगा और योगी तीर्थ तीर्थ फिरकर रहता था और जो कोई सिद्ध मिलता था उससे अपना दुःख कहता था इस तरहसे किसी और तीर्थमें आकर पहुँचा और वहां एक यतीसे अपने जीके दुःखका ब्योरा सब कहने लगा उसने उसको कहा कि तू अपने स्थानको जा और भेख धरके राजा विक्रमसे जाकर सवाल कर वह तो बड़ा धर्मात्मा है जभी तू यह मकान मांगेगा तभी तुझे इसा लेकर देगा तू आपके मनमें चिंता मत कर यह योगी उसकी सीख मान एक अति बूढ़े ब्राह्मणका भेष धर उस मंदिरके निकट आन पहुँचा और उसके द्वारपर आ ताली दी ताळीकी

आवाज सुनतेही राजा बाहर निकल आया और उसे कहा कि तू क्योंकर यहां आया है ? इस वक्त जो तेरी इच्छा होय सो मुझसे मांग यह बात राजाके मुहसे सुन ब्राह्मणनें कहा कि, महाराज ! मै तमाम पृथ्वी फिर आया हूं पर अपनी इच्छाका स्थान नहीं पाया कि जहां मै बैठकर आराम करूं, यह सुन राजा हँसकर बोला कि, यह ठांव तुम्हारे माफिक हो तो लो यह सुन ब्राह्मणने आसीस दी और राजा उसे उस जगहपर बिठा अपने घरको आया इतनी बात कह पुतली बोली कि, सुन राजा भोज ! तू ऐसा धर्मात्मा नहीं इसवास्ते इस सिंहासनपर मत बैठ तू अपनें मनमें यह विचारता तो बिना समझे ऐसा इरादा न करता जो उसकी बराबर हो वह सिंहासनपर बैठेगा वह रोजभी इस रीतिसे बीत गया राजा पछता पछता अपनें मंदिरमें गया रात ज्यों त्यों कटगई सुबह होतेही स्नान पूजाकर फिर वहीं आकर मौजूद हुआ और सिंहासनपर बैठनेको पांव बढ़ाया इतनेमें रूपवती नाम

तीसवीं पुतली–

बोली–सुन राजा ! बावले अज्ञानी ! ऐसा पुरुषार्थ तूने कब किया ? जो सिंहासनपर बैठनेको तैयार होकर आया ? अब एक दिनकी बात राजा वीर विक्रमादित्यकी मै तुझे कहती हू सो निश्चिंत होके सुन राजा अपने महलमें एक रातको आरामसे

सोता था इतनेमें राजाके जीमें कुछ आया कि इक बारगी उठकर कोठा बांध, ढाल तलवार ले शहरके कूचेमें फिरने लगा और आगे जाकर देखे तो चार चोर खडे हुए बातें कर रहे हैं अपने मतलबकी बातें कर रहे हैं कि अब किधरको चोरी करने हम चलें तब उनमेंसे एक कहने लगा कि अच्छी साअतमें चलो तो कुछ माल हाथमें लगे और बुरी साअत चलनेसे दुःख पाकर खाली हाथ फिर आवेंगे इस तरहसे सब बात उनकी राजाने सुनी और उन्होंनभी राजाको देखा तब उन मेंसे एक बोला कि, तू कौन है? राजाने कहा कि, जो तुम हो सोही मैं हूं यह सुनकर उन्होंने राजाकोभी अपने साथ लगा लिया और चोरी करनेको चले आगे जा एक जगह पहुँचकर एकसे एक पूंछने लगा कि अपना अपना मन कहो तब एक उनमेंसे बोला कि, मैं ऐसा मुहूर्त जानता हूं कि जिसमें धावा करनेसे कभी खाली फिर न आवे दूसरा बोला कि मैं सब जानवरोंकी बोलियां समझताहूं तीसरा बोला कि मैं जिस मंदिरमें जाऊं वहां मुझे कोई न देखे और मैं अपना कामकर फिर आऊं चौथा बोला कि मेरे पास एक ऐसी चीज है कि कोई बहुतरा मुझे मार पर मैं न मरूं- उन चोरोंने ये बातें कर राजासे पूंछा कि तू क्या विद्या जानता है? तब वह बोला कि मैं यह विद्या जानताहूं कि जहां धन गडा है वह

जगह मैं बताऊं तब उन्ह चोरोंनें राजासे कहा कि चल तू आगे हम तेरे पीछे हैं जहां दौलत गड़ी होय सो हमे बता दे इस तरह बातें कर आगे राजा पीछे पीछे चोर चले हुए राजमहलके पीछे बगीचेमें आये और जिस जगह दौलत राजाकी गड़ी हुई थी सो उन चोरोंको राजाने बतादी और उन्होंने वहां खोदा तो एक तहखानेका दरवाजा निकला उसे तोडकर अंदर जो देखें तो करोंड़ोंका जवाहिर और अशरफियां रुपये भरे हैं तब वह ले पोटे बांध शिरपर धर चले इतनेमें एक गीदड़ बोला तब उनमें जो जानवरोंकी भाषा जानताथा वह सुनकर समझ गया और औरोंसे बोला कि, भाई! यह गीदड़ बोलता है कि इस धनके लेनेमें कुछ कुशल नहीं उनमेंसे एक बोला कि अपना शकुन तू रहने दे पाई हुई लक्ष्मी जो हम नहीं छोड़ते छोड़ें तो हमारे धर्ममें बट्टा आये तब उनमेंसे दूसरा बोला कि, उठो भाई! धन रत्न तो पाये पर वस्त्र नहीं मिले इससे कहीं चलकर वहांसे वस्त्र लीजिये तो फिर चोरीका नामभी न लीजिये फिर उनमेसे एक बोला राजाका धोबी यहां रहता है उसके घरमें चलकर सेंध दें तो यहां तरह तरहके अच्छे अच्छे कपड़े मिल जायेंगे यह मनसूबाकर धोबीके पिछेवाड़े तो व गठड़ियां रखदीं और जाकर उसके घरमें सुरंग लगा दी इतनेमें उसका गधा देखकर बोल उठा तब

धोबी जागा और खफाहो गधेको खूबसा पीटकर कहने लगा कि ऐ कमबख्त! मेरे पीछे पड़ा है दिनभर घाटपर मैं मह नत कर थक जाताहूं और रातको सोते यह मुझे सतावे इतना कह धोबी फिर जाकर सो रहा गधा उन चोरोंको देख फिर बोला आखिर धोबीने उस गधेको चार पांच मर्तबा मार झारकर रस्सी खोल छोड़ दिया और आप आकर सो रहा चोर तो चोरी करने लगे इतनेमें राजानें अपने जीमे विचार किया कि यह तो अपना धन था उसका जो चाहा सो किया और अब इनके साथ रह कर अधर्मका भागी कौन होवेगा! यह विचार करके राजा अपनें महलमें चला आया और चोर पोटे बांध अपनें घरको चले गये सवेर होतेही शोर हुआ कि राजाके भंडारमें चोरी होगई इतनेमें कोतवाल वहां आया और कोतवालने जगह जगह हलकारे और जासूस भेज दिये और घाट घाट सब बंद कर दिया आखीरको चोरोंकी तलाश करके चारों चोरोंको बांधकर हलकारे कोतवालके पास आये कोत वालने उनको ले आकर दरबारमें राजाके सोहीं खड़े करदिए तब वे राजाका मुह देख देख अपने मनमें विचार करने लगे कि, राजाहीकी सूरतका पांचवां चोर हमारे साथ आया था और जब हम सब मिलकर धोबीके यहां चोरी करनेको गये तब यह हमारेमेसे जाता रहा बस यह बड़ा अचंभा है

कि यह अपना हिस्साभी नहीं ले गया ये अपने जीमें विचारते थे तब राजाने मुसकुरायके कहा तुम क्या मुंह देख देख अपने जीमें मेरा सोचते हो ? खैर तुम्हारी इसीमें है कि माल जहां तुमनें रक्खा है वहांसे जलदी लादो तब चोर बोले महाराज! बड़े अचभेमें हम पड़गये हैं, कि एक चोर रातको हमारे साथ चोरी करनमें शरीक था और जबतक हमने चोरी की तबतक हमारे साथ वह था और अपना भाग लेनेके वक्त हमारेमेसे भाग गया तब राजाने कहा अच्छा उस चोरकोभी अभी बता दो तब उनमेसे एक चोर बोला कि, महाराज! जी चाहे तो आप हमें मार डालो और चाहे तो छोड़ दो पर आपके रूबरू हम सच कहते हैं कि इस वक्त तुम तो राजा हो और रातको हमारे साथ आपही थे क्योंकि हमने बहुतोंके साथ चोरियां तो की हैं पर ऐसा किसीको न देखा कि जो अपना बांटा छोड़ दे इस लिये हम धर्मसे कहते हैं कि हमारे साथ आपही थे यह सुन राजा हँसकर बोला कि, तुम अपने जीमें मत डरो हमने तो तुम्हारी जान बकसीस की पर एक बात हम तुमसे कहते हैं सो आजसे तुमको करनी पड़ेगी तुम अब चोरी करनेसे हाथ उठाओ और बल्कि और दौलत जो तुम्हे चाहिये तो मेरे खजानेसे तुम ले जाओ यह सुनकर चोरोंनें राजाकी बात कबूल की राजाने उन्हे और भी भेंट मांगी दौलत दी

और बिदा किया ये धन ले ले अपने घरको गये ~ ॥
कह पुतली बोली कि, सुन राजा भोज ! तू ऐसा साहस
कर सकेगा, इसवास्ते इस सिंहासनके योग्य न होगा इ
जाकर अपना राज कर और यह मनका खयाल छोड़ दे ।
सुन राजा चुप होकर यहांसे उठ अपने मकानमें दाखि
हुआ यह सामत और यह दिनभी टल गया अब राजा भो
यहांसे अपने मंदिरमें आ रातको सोचमें काटा दूसरे दि
सुबह होतेही सिंहासनके पास आकर खड़ा हुआ और अप
मनमें यों विचार करने लगा कि, मैं इस सिंहासनपर बैठने
पाया और बिना स्वार्थही जन्म गवाँया सब देश देश
खबर हो चुकी कि राजा भोज राजा वीरविक्रमादित्यके सिं
सनपर बैठने लगा सो बैठना मेरा न हुआ यह बात सुन
सब लोग हँसेंगे और गंधर्व गालियां देंगे और मेरे कुल
कलंक लगा यह अपने जीमें सोचकर राजा नीची गरदन कि
सिंहासनके पास आकर खड़ा हुआ फिर अपने जीमें विचा
लाया कि एक मा वह थी कि जिसका विक्रम जैसा पुत्र था औ
एक मैं हूं जो कुलको कलंक लगाया और अपने मनमें
मनसूबा किया सो तो बन न आया ऐसी ऐसी बातें रा
मनमें विचार विचार चिंता करता था और कुछ जीमें लं
आती थी और कुछ क्रोध आजाता कि इतनेमें हँसलाग

जल्दी कर चाहा कि सिंहासनके ऊपर बैठें इतनेमें कौशल्या नामक–

इकतीसवीं पुतली–

बोली–कि सुन राजा भोज! तू बड़ा मूर्ख है कि हमारा कहा नहीं मानता और साहसको तू सहजकर जानता है कंचनकी बराबरी पीतल नहीं कर सकता और हीरेके बराबर सीसा नहीं होता और चंदनके गुणको नीम नहीं पाता इससें तू हजारबर अपने जीमें मनसूबा किया कर लेकिन राजा वीर विक्रमादित्यके बराबर तू नहीं हो सकता और इस सिंहासनपर बैठते हुए तुझे शर्म नहीं आती? इतनी बात उस पुतलीकी सुनतेही राजा भोज अपने जीमें बहुतसा लजाया और राजाने अपना जीतब धिक्कार कर माना फिर इतनी बात कह पुतलीनें कहा कि, सुन राजा भोज! मैं एक दिनकी बात राजा वीर विक्रमादित्यकी तेरे आगे कहती हूं सो तू मन लगा कर सुन हे राजा भोज! जब राजा वीर विक्रमादित्यके मरनेके दिन बहुत नजदीक आ गये तब राजाको मालूम हुवा और मालूम करके नगरके बाई और गंगातीरपर एक मंदिर बनवाया जब वह मंदिर बन चुका तब आपभी वहीं आ उसमें रहने लगा और तमाम मुल्कोंमें ढंढोरा पिटवा दिया कि, जो कोई दान लिया चाहे सो यहा आकर ले जाये और जितनें ब्राह्मण, पंडित, भाट, भिखारी

राजाके पास आये जिन्होंने मुंह मांगा दान राजा [illegible]
दित्यसे पाया यह खबर दे[illegible] आ मालूम [illegible]
देवता स्वरूप बदल दान लेनेका बहाना कर राजाका सत देख
लिये यहां आये और आ आकर जो जो जिसके जीमें
सो सो उनके पास मांगनें लगे और राजानेभी सबोंका म
पदार्थ दिया जब दान ले चुके तब राजाके सामने खड़े
आसीस दे कहने लगे कि धन्य है राजा विक्रम तेरे वर
धन्य है तेरे मातपिताको तून ऐसा शक बांधा कि ती
लोकमें तेरी निशानी रहेगी सत्य युगमे जैसा सत्यवादी रा
हरिश्चंद्र, और त्रतामे जैसा दानी राजा बलि हुवा और द्वाप
रमे जैसा राजा युधिष्ठिर हुआ तैसा कलियुगमे तू राजा वीर
विक्रमादित्य है जैसे चारों युगोंमें तुम धर्मात्मा राजा हु
तैसे और न हुए न होगें इस तरह राजासे कह देवता ह
विदा होगये इतनी बात कह पुतली बोली कि, सुन राज
भोज! देवता तो सब विदा हो गये और राजा आप
झरोखमें बैठा इतनेमें एक राजाको किसी ऋषिने शाप दिया
सो वह सोनेका हिरन बनकर राजा वीर विक्रमादित्यके ठौर
आया राजाने देखतेही उसके मारनेको धनुष और तीर उठाया
कि राजाने चाहा बाण मारें इतनेमें हिरन बोला कि, मै अगले
जन्मका ब्राह्मण हूं [illegible] हूं एक

ससे मैंने अपनी मौत मागी थी सो उसने मुझे शाप देकर रन किया फिर मैंने उस सिद्धसे कहा कि, महाराज! तुमने मे हिरन तो बनाया है पर मेरी गति आगे किस तरहसे होगी । मुझे बता दो तब उस ऋषिने मुझसे कहा कि कलियु- में राजा वीर विक्रमादित्य बडा दाता और साहसी होगा सका जब तू जाकर दर्शन करेगा तब तेरी इस देहसे मुक्ति गी इस लिये मै तेरे दर्शनको आया हूं राजाने उस हिर- की ऐसी बात सुनकर हँसा और उस हिरननें उसी समयही पनें शरीरका त्याग किया राजाने उस हिरनको जलाकर गामे बहा दिया और बहुतसे उसके नाम यज्ञ किये इतनी ात कह पुतली बोली सुन राजा भोज! तू उसके बराबर मोकर हो सकता है और तू अपने जीसे यह बात दूरकर और इस सिंहासनको लेकर अभी तुर्त गड़वा दे जहांसे लाया है वहा पहुंचा दे इतनी बात पुतलीकी सुन राजा भोज अपने जीमें सोचनें लगा और उपाय कुछ बन न आया और निपट निराश हो अपन मंदिरमें आया यह दिन इस तरह गुजर गया और राजा अपने मकानमें आ रात सो उसी चिंतामें बिताई सबेरे हुए मनमे वैराग्य लिया और सब काम तुच्छ मानकर फिर उस जगह जा उस सिंहासनके पास खडा हुआ और चरनको पांव उठाया तब भानुमती नामवाली-

जैतपाल राजा हुआ तब यह एक दिन इस सिंहासनपर
। इतनेमे मूर्छा आई और मूर्छा आतेही यह बेसुध हुआ
र एकदम एक स्वप्न देखा इस स्वप्नमें राजा वीर विक्रमा
त्यन उसे मना किया कि इस सिंहासनपर मत बैठे जो मेरा
इस वीर दान करे सो इस सिंहासनपर बैठना, इतनेमें राजा
तपालकी आंख खुलगई और सावधान हो उस सिंहासनसे
चे उतर बैठा और मंत्रीको बुला अपने स्वप्नका अहवाल कहा
ह बोला कि महाराज! इस आसनपर बैठना तो आपको उचित
हीं और एक बात मै आपसे कहता हूं सो आप कीजिये
क आज रातको पवित्र हो भूमिमें बिछौना बिछवा और
जाका ध्यान करके कहिये कि महाराज! जो जो मुझे आज्ञा
। उसी माफक मै करूं यह कामना करके रातको सोइये
समें जैसा जवाब कामानाका मिलेगा वैसाही कीजिये जो
त्रीयानने कहा सोई राजाने किया और जब राजा सो गया
ब स्वप्नमें जैतपालको राजा वीरविक्रमादित्यने कहा कि,
उज्जैन नगरी और धारा नगरी छोड़कर अंबावती नगरीमें तुम
जाकर अपना राज करो और इस सिंहासनको यहीं पृथ्वीको
आपदो सवेरा होतेही राजा जैतपाल उठा उठतेही मजूरदा
रोंको बुला सिंहासनको यहीं गड़्या दिया और आप अंबावती
नगरीमें आकर राज करने लगा धीरे २ धारा नगरी

और उज्जैन नगरी उजड़ उजड़ अंबावती नगरी बसने लगी यह पुतलीकी बात सुन राजा भोज पछताय पछताय निराश हो सिर धुनकर उठा और दीवानको बुलाकर बोला कि जहांसे यह सिंहासन निकालकर आया था वहीं इसे गड़वा दो या मंत्रीको आज्ञा दी और आप अपने जीसे राजकाज छोड़ बैठ और मंत्री राज करने लगा और आप उदास हो एक तीर्थमें तपस्या करनेको गया और यह खबर सब राजाओंको पहुँची कि राजा भोजने राज त्यागकर वैराग्य लिया सच है कि जिस योग्य न हो और उस कामको करे तो उसका कुछ फल नहीं पाता बल्कि काम अपना बिगाडे है और जगत्में हँसी होती है उन राजाओंकी तो यह रीति थी और अबके राजाओंकी यह चाल है कि वे प्रजासे दंड लेते हैं साधु लोगोंको दुःख देते और असाधु लोगोंको पालते हैं थोड़ेसे राजमें अभिमानी हो जाते हैं और रैयतसे वे खबर रहते हैं सब बातको सुनी अनसुनी करते हैं और झूंठ बातपर दिल लगाते हैं इसके खातिर ऐसा दुःख पाते हैं लेकिन अबभी कोई २ साहब ऐसे हैं कि जिनके अदल व इंसाफसे तमाम रैयत सुखी रहती है

प० गोपीनाथशर्म्मा

सिंहासनबत्तीसी तमाम हुई